—: सम्पादक :—
डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी
— सहायक —
मु० गुफ़रान नदवी
मु० सरवर फारूक़ी नदवी
मु० हसन अन्सारी
हबीबुल्लाह आज़मी

कार्यालय
मासिक सच्चा राही !
मजलिसे सहाफत व नशरियात
पो० बॉ० नं० 93
टैगोर मार्ग, नदवतुल उलमा, लखनऊ
फोन : 2741235
फैक्स : 2787310
e-mail :
nadwa@sancharnet.in

सहयोग राशि

एक प्रति	रु० 9/—
वार्षिक	रु० 100/—
विशेष वार्षिक	रु० 500/—
विदेशों में (वार्षिक)	25 यूएस डालर

चेक/ड्राफ्ट पर यह लिखें :
"सच्चा राही"
पता : सेक्रेटरी मजलिसे सहाफ़त व नशरियात नदवतुल उलमा,
लखनऊ—226007

मुद्रक एवं प्रकाशक अतहर हुसैन द्वारा काकोरी आफसेट प्रेस से मुद्रित एवं दफ़्तर मजलिसे सहाफ़त व नशरियात, टैगोर मार्ग नदवतुल उलमा, लखनऊ से प्रकाशित।

हिन्दी मासिक
सच्चा राही
सामाजिक एवं साहित्यिक
लखनऊ

जनवरी, 2005 वर्ष 3 अंक 11

हज्ज की फ़र्ज़ीयत

और अल्लाह के लिए लोगों के ज़िम्मे इस (अल्लाह के) घर का हज्ज करना है यानी उस शख़्स के ज़िम्मे जो कि वहां तक (पहुंचने) की ताक़त रखे और जो शख़्स इन्कार करे तो अल्लाह तआला तमाम जहान वालों से ग़नी हैं।

(आले इम्रान : 97)

अगर इस गोले में लाल निशान है तो आपका **वार्षिक चन्दा** समाप्त हो चुका है। कृपया अपना वार्षिक चन्दा जल्द भेजिए।

विषय एक नज़र में

- हज़रत इब्राहीम (अ०) — सम्पादकीय......3
- कुर्आन की शिक्षा — मौलाना मु० उवैस नदवी (रह०) 5
- प्यारे नबी की प्यारी बातें — मौलाना सय्यद अब्दुल हयी हसनी 6
- हिन्दोस्तानी मुसलमान एक नज़र में — मौलाना सय्यद अबुल हसन अली हसनी 7
- अब्बासी ख़लीफ़ा अबू जाफर मन्सूर — डॉ० मु० इज्तिबा नदवी 9
- मुहम्मदी सन्देश — मौ० स०सुलैमान नदवी 11
- आपके प्रश्नों के उत्तर (कुर्बानी से मुतअल्लिक़) — इदारा 14
- अली मियां की हाज़िरी रौज़-ए-नबवी पर — इदारा 17
- शयातीन बाज़ार में — अबू मर्गूब 22
- उम्मुल मोमिनीन हज़रत उम्मे सल्मा — सादिका तस्नीम फारूकी 23
- सत्य की खोज — मुहम्मद शमीम बहराइची...... 27
- क्यों न तुझ से कहूं मैं हाले दिल — खैरुन्निसा बेहतर 28
- मदीना तय्यिबा की फ़ज़ीलत व ख़ासियत — मुफ़्ती अहमद यार खान बरैलवी 28
- अीदे कुर्बां मन्ज़ूम — मु० हसन इल्मी 29
- हज़रत इमाम मालिक — लतीफ अहमद एम.ए. 30
- तालीम में क़नाअत पसन्दी का रूझान — हबीबुल्लाह आज़मी...... 32
- संक्षिप्त इस्लामी इतिहास — मौ० अब्दुस्सलाम किदवाई 35
- घरेलू चुटकले — के०सी० अग्रवाल...... 36
- नबी-ए-करीम(स०) का ख़ुत्बा मैदाने अरफ़ात में-इदारा 37
- हम ग़रीबों का सलाम 39
- अन्तर्राष्ट्रीय समाचार — हबीबुल्लाह आज़मी...... 40

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम

डा० हारून रशीद सिद्दीक़ी

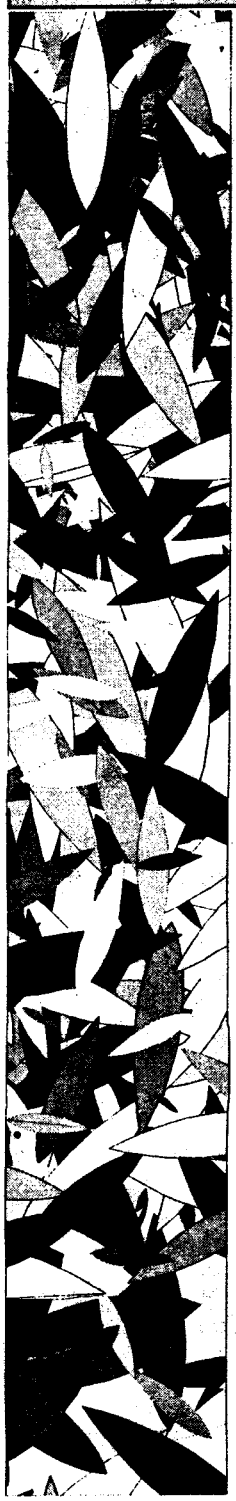

जी मे आया कि इस लेख की हेडिंग "ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माइशें" रखूं कि आप की पूरी ज़िन्दगी आज़माइश ही नज़र आ रही है फिर ख़याल आया कि हम हर नमाज़ में कहते हैः " ऐ अल्लाह मुह़म्मद पर और उनकी आल (घर वालों) पर रह़मत उतार जैसे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उन की आल पर रह़मत उतारी। ऐ अल्लाह मुह़म्मद पर और उन की आल पर बरकत उतार जैसे इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम और उनकी आल पर बरकत उतारी। बस क़लम ठिठुक कर रह गया, आज़माइशों (परीक्षाओं) के अंबार (ढेर) पर रह़मतों की छाया और बरकतों की वर्षा। इस भेद को तो दुलार करने वाला और दुलार किये जाने वाले ही समझ सकते हैं और भेद की बात वह हम को काहे को बताएं। मैंने देखा एक मां ने अपने बच्चे को अपने सीने से लगाकर ज़ोर से भेंचा कि बच्चा तुत्ली ज़बान में "अले अले" कह कर चिल्ला उठा, मां ने ढील दी तो बच्चा खिलखिला कर हंसा और तुतला कर मांग कीः फिल, मां मुस्कराई और फिर भेंचा फिर बच्चा अले अले कह कर चीख़ा फिर मां ने छोड़ा, फिर बच्चा खिलखिलाया और कहाः फिल, मां ने उसके मुंह का बोसा लेते हुए कहा नहीं, बच्चा बोला, फिल मां बोली नहीं, बच्चा रोने लगा, मजबूर होकर मां ने फिर दबोचा और देर तक यह खेल जारी रहा। मेरी आंखें खुल गई, जैसे अल्लाह वालों की आज़माइश की गुत्थी सुलझ गयी फिर जी चाहा कि ह़ज्ज और बक़रईद की मुनासिबत से इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की आज़माइशों और उन पर की गई रहमतों को याद किया जाए।

ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की पैदाइश बाबुल में उस ज़माने (काल) में हुई जिस ज़माने में बादशाह नम्रूद की तरफ़ से हुक्म था कि उस साल हर पैदा होने वाला बच्चा क़त्ल कर दिया जाए इसलिये कि नुजूमियों ने बताया था कि इस साल वह बच्चा पैदा होगा जो बादशाह की तबाही का सबब बनेगा। इब्राहीम (अ़०)का बाप आज़र बादशाह के यहां उहदेदार और उसका ख़ैरख़्वाह (हितैशी) था उसका इरादा था कि पैदा होते ही वह अपने बच्चे को क़त्ल कर देगा लेकिन पैदाइश के वक़्त वह सफ़र पर था वापस आकर पूछा तो मां ने बहाना कर दिया कि वह तो मरा पैदा हुआ था और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम की तहख़ाने में छुपा कर परवरिश करती रही। अल्लाह तआ़ला ने इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को बहुत कम वक़्त में सयाना कर दिया अब वह बाप के सामने आए सयाने लड़के को क़त्ल करने की हिम्मत न हुई साथ रहने लगे बाप बुत तराश, बुत फरोश और बुत परस्त था, इधर इब्राहीम (अ़०) पर वह़्य (ईशवाणी) का सिलसिला शुरूअ़ हो चुका था बाप को टोका यह बताते हुए कि मुझे इलाही इल्म (ज्ञान) मिल रहा है आप शैतान के चक्कर मे आकर इन बुतों की पूजा न करें। बाप नाराज़ हुआ, मार डालने की धमकी दी। आप ने बाप को रूख़सती सलाम किया और यह कहते हुए चले गये कि मैं आप के लिये अपने रब से मुआ़फ़ी चाहूंगा। अब क़ौम से पाला पड़ा पूरी क़ौम बुत भी पूजती, दरख़्त, पत्थर सूरज, चांद, तारे न जाने क्या क्या पूजती। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने समझाया कि यह दिन में छुप जाने वाले तारे और चांद और शाम में ग़ाइब हो जाने वाले सूरज माबूद कैसे हो सकते हैं? यह जिस के ताबिअ़ हैं सिर्फ़ वही हमारा तुम्हारा रब है। क़ौम

झगड़ने लगी और हक़ बात का उस ने इन्कार किया। वक़्त का बादशाह नम्रूद ख़ुद रब होने का दावा करता था। क़ौम ने बादशाह से जा लगाया कि इब्राहीम तो किसी और को रब बताता है। बादशाह ने बुलवा लिया और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के सामने एक शख़्स को मारकर दूसरे को छोड़ कर अपने को ज़िन्दगी और मौत देने वाला साबित करना चाहा लेकिन जब इब्राहीम (अ़०) ने मांग की कि अच्छा सूरज को पश्चिम से निकाल कर दिखाओ तो नम्रूद लाजवाब रह गया। उसी बीच मेले के दिन बुतों के तोड़ने का वाक़िआ़ पेश आया इब्राहीम (अ़०) ने क़ौम से कहा कि इस बड़े बुत से पूछो कि बुतों को किसने तोड़ा ? क़ौम ने झुल्ला कर इब्राहीम (अ़०) को आग में डालने का फ़ैसला किया और भारी अलाव जलाकर उसमें इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को डाल दिया। आग को इलाही हुक्म मिला कि इब्राहीम पर ठन्डी और सलामती वाली बन जा। क़ौम ने देखा कि आग ठन्डी हो गई। इब्राहीम अ़० सहीह् व सलामत आग से निकल आए। मगर हिदायत तो उसी को मिलेगी जिसको अल्लाह हिदायत दें। इब्राहीम अलैहिस्सलाम ने मुल्क छोड़ दिया। बीवी सारा, भतीजे लूत के साथ हिजरत की, रास्ते में बड़े इम्तिहानों से गुज़रे। अल्लाह ने एक ज़ालिम बादशाह के ज़ुल्म से बचाया। बल्कि उसी बादशाह ने अपनी बान्दी हाजिरा को हदिये के तौर पर पेश किया।

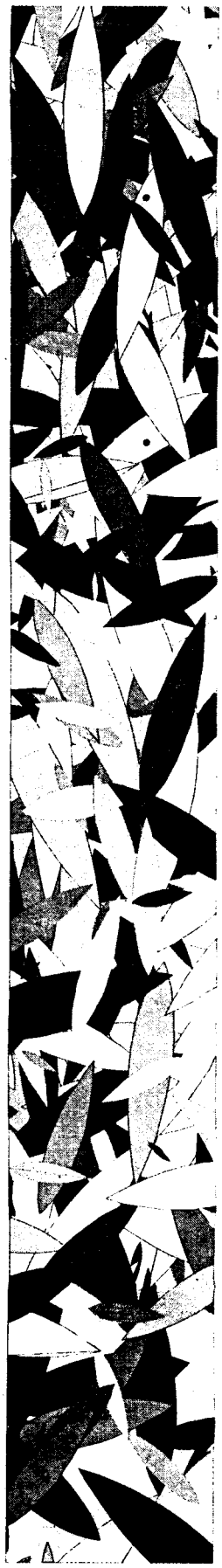

हज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम सारा, हाजिरा, और भतीजे लूत के साथ शाम आ गये। हज़रत लूत अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के हुक्म से सदूरा और अ़मुरा में इक़ामत इख़्तियार की और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने कन्आ़न में,अब इब्राहीम अ़० अस्सी से ऊपर हो चुके थे कोई औलाद नहीं थी। अपने रब से औलाद की दुआ़ मांगी हज़रत हाजिरा से इस्माईल (अ़०) पैदा हुए। इलाही हुक्म आया मां बेटों को ग़ैर आबाद पहाड़ी इलाक़ा मक्के में छोड़ आओ। बड़ा सख़्त इम्तिहान था मगर राज़ इस में यह था कि अल्लाह तआ़ला को आदम अ़लैहिस्सलाम के बनाए हुए कअ़बे को, जिस का अब नाम व निशान भी न था, इन के ज़रीअ़े बनवाना था। हुक्म की तामील हुई। लख़्ते जिगर बेटे और सुकुं बख़्श बीवी को मक्के की ख़ुश्क वादी में छोड़ आए। हज़रत हाजिरा को उस वक़्त इतमीनान हुआ जब इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने बताया कि यह सब कुछ अल्लाह के हुक्म से हो रहा है। मां, बेटे के अ़लावा अब वहां कोइ न था बेशक अल्लाह उनके साथ था। कुछ घन्टों बाद जब साथ का पानी ख़त्म हो चुका बच्चा प्यासा हुआ। मां, बच्चे को छोड़कर पानी की तलाश में क़रीब की सफ़ा पहाड़ी पर चढ़कर हर तरफ़ नज़र दौड़ाने लगी न कहीं पानी दिखा न इन्सान कि जिस के पास पानी हो,बच्चा वहां से दिख रहा था। फिर इरादा किया कि सामने की मर्वा पहाड़ी पर चढ़कर देखें सफ़ा से मर्वा जाने में बीच की ज़मीन नीची थी जहां से इस्माईल अ़लैहिस्सलाम दिख न रहे थे, मां बेचैन होकर दौड़ी और दौड़ कर मर्वा पर चढ़ी, अब बच्चा दिखा, हर जानिब पानी के लिये नज़र दौड़ाई कुछ नज़र न आया। सोचा शायद अब सफ़ा पर से कुछ नज़र आ जाए, फिर बीच में दौड़कर सफ़ा पर चढ़ गईं फिर कुछ नजर न आया फिर दौड़कर मर्वा पर चढ़ गईं। इस तरह हाजिरा ने सात दौड़ें लगाईं वह सफ़ा व मर्वा पर से पानी भी ढूंढतीं और दिल के टुकड़े इस्माईल अ़० पर भी नज़र डालतीं आख़िर थक हार कर बेटे के पास लौट आईं। सफ़ा व मर्वा पर यह दौड़ अल्लाह के यहां ऐसी मक़्बूल हुई कि उम्मते मुहम्मद (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) के हज्ज व उ़म्रा में इसे वाजिब कर दिया गया अब यह नक़्ल क़ियामत तक जारी रहेगी।

जब हज़रत हाजिरा बेटे के पास पहूंची तो देखा उन की एड़ियों के पास से साफ़ सुथरा पाकीज़ा पानी उबल रहा है हज़रत हाजिरा ने उस पानी को घेर दिया और इस्तिअ़माल करने लगीं

(शेष पृष्ठ ३४ पर)

क़ुर्आन की शिक्षा

मौलाना मुहम्मद उवैस नदवी

क़सम का गलत इस्तिअ़माल

और अल्लाह के नाम को अपनी कसमें खाने के लिये निशाना न बनाओ। (बक़रःआयत २२४)

क़सम खाना अस्ल में एक क़िस्म की गवाही है। किसी बात पर ख़ुदा की क़सम खाने का यह मतलब हुआ कि उस पर अल्लाह को गवाह करना है। अल्लाह को किसी बात पर गवाह बनाना कुछ हंसी खेल नहीं है इसलिये सोच समझ कर क़सम खाना चाहिये। ज़रूरत के बिना बात बात पर क़सम खाने वाले से अल्लाह नाराज़ होता है। क़ुर्आन में है कि ज़ियादा कसमें खाने वाले ज़लील (तुक्ष) का कहना न मानो। सहाबा क़सम खाने से बहुत बचते थे। एक मर्तबा अ़ब्दुल्लाह इब्ने उमर ने एक गुलाम बेचा, बाद को मालूम हुआ कि उस गुलाम में कोई बीमारी है। हज़रत उस्मान के सामने मुक़द्दमा पेश हुआ और उन्होंने उन से कसम लेना चाहा लेकिन हज़रत अ़ब्दुल्लाह ने कसम खाने से इन्कार कर दिया और गुलाम को वापस ले लिया।

अल्लाह तआ़ला ने फ़रमाया कि अपनी कसमों को आपस में धोखा देने का ज़रीआ न बनाओ कि झूठी क़समे खाकर लोगों को ग़लत बात को यकीन दिलाओ। रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लाव ने फ़रमाया है कि "जो शख़्स झूठी क़सम खाये वह जहन्नम में अपना ढिकाना बनाए"। जिस तरह बात बात पर कसम खाना और झूठी कसम खाना गुनाह है, उसी तरह कसम खाकर तोड़ देना उस को पूरा न करना भी गुनाह की बात है। अल्लाह तआ़ला का हुक्म है कि कसमें पक्की करने के बाद उन को तोड़ा मत करो।

ख़ियानतः—

ऐ ईमान वालो ! ख़ियानत न करो अल्लाह से और रसूल से और ख़ियानत न करो आपस में।

(अन्फ़ालः २७)

अल्लाह से ख़िनायत न करो।
रसूल से ख़ियानत न करो।
आपस में ख़ियानत न करो।

अल्लाह से ख़ियानत न करने का मतलब यह है कि हम जब अल्लाह को अपना माबूद और आक़ा मान चुके तो उस के हुक्म के खिलाफ न करें। जिसमें उसकी खुशी हो वही करें, और जिसमें उसकी ख़फ़्गी हो उसको छोड़ दें। ऐसा न करेंगे तो अल्लाह के साथ ख़ियानत करेंगे। रसुल (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से ख़ियानत न करने का मतलब यह है कि उन से हम तक अल्लाह के जो हुक्म पहुंचे हैं उन को पूरा करें। उन के बतलाये हुए रास्ते से मुंह न मोड़े। अगर ऐसा न करेंगे तो रसूल के साथ ख़ियानत करेंगे।

आपस में खियानत करने का मतलब यह है कि जिस मुआ़मले को हमें सिपुर्द किया जाए और हम उसको अपने जिम्मे ले भी लें, उसमें कोई कमीं न करें। ऐसा न करेंगे तो यह ख़ियानत होगी। जैसे किसी ने हमारे पास माल रखाया, हम से कोई भेद की बात बतलाई या किसी बात में मश्वरा लिया अब हम मश्वरा ग़लत दे रहे हैं। राज़ को सब पर ज़ाहिर कर रहे हैं। माल वापस नहीं दे रहे हैं या देते हैं तो पूरा नहीं देते हैं। यह सब खियानत की बातें हैं। इनसे बचना चाहिये। रसूलुल्लाह (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) ख़ियानत से पनाह मांगा करते थे और कहते थे कि इलाही ! मुझे ख़ियानत से बचाना कि यह बहुत बुरा अन्दरूनी साथी है। हुजूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) ने ख़ियानत को मुनाफ़िक़ की निशानी बतलाया है और फ़रमाया है कि मुसलमान, मुसलमान का भाई है उससे ख़ियानत न करना चाहिये।

अल्लाह तआला खियानत करने वालों की चालों को चलने नहीं देता।
(यूसुफ : ५२)

अल्लाह तआ़ला तुम को हुक्म देता है कि तुम अमानतें अमानत वालों को पहुंचा दो।
(अन्निसा :५८)

प्यारे नबी की प्यारी बातें

मौ० अब्दुल हयी हसनी

रसूलुल्ला सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की तालीम

३७८– हज़रत अबू सुफ़यान (रज़ि०) से रिवायत है, वह अपनी लम्बी हदीस में हिरक़्ल की हिकायत बयान करते हैं कि हिरक़्ल ने कहा वह तुम को किस बात का हुक्म देते है? (यानी नबीये करीम सल्लल्लाह, अ़लैहि व सल्लम) अबू सुफ़यान कहते हैं कि मैं न कहाः हुक्म देते हैं कि अल्लाह तआ़ला की इबादत करो और उस के साथ किसी को शरीक न करो और जो तुम्हारे बाप दादा (ग़लत बातें) कहतें हैं उन को छोड़ दो और हम को नमाज़,सच्चाइ, सिल–ए–रहिमी सदक़ा और पाकदामनी का हुक्म देते हैं।(बुख़ारी व मुस्लिम)

शक वाली चीज़ के छोड़ देने का हुक्म

३८६– हज़रत हसन बिन अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि मुझे नबीये करीम सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की यह बात याद है कि आप (सल्लल्लाह, अ़लैहि व सल्लम) ने फरमायाः जिस चीज़ में तुम को शक हो उस को छोड़ दो और उस को इख्तियार करो जिस में तुम को शक न हो। सच्चाई में इतमीनान है और झूठ में बे इतमीनानी है। (तिर्मिजी)

हया ईमान की बात है।

३८७– हज़रत इब्ने उमर रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) एक अन्सारी के पास से गुज़रे वह अपने भाई से शर्म व हया के बारे में बात कर रहा था (यानी इतनी शर्म न करनी चाहिये) आप ने फ़रमाया इसको छोड़ दो हया ईमान में से है। (बुख़ारी व मुस्लिम)

हया पुरी तरह ख़ैर है।

३८८– हज़रत इम्रान बिन हसन (रजि०) से रिवायत है कि नबीये करीम सल्लल्लाह, अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया हया भलाई के सिवा कुछ नहीं लाती। (बुखारी व मुस्लिम)

हया ईमान की एक शाख़ है।

३८६– हज़रत अबू हुरैरा (रजि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने फरमाया कि ईमान की सत्तर से ऊपर शाखें हैं या फ़रमाया साठ से ऊपर शाखें है। उन में सब से बड़ा दर्जा "ला इलाह इल्लल्लाहु" कहने का है और सबसे कम दर्जा रास्ते से तकलीफ़ देने वाली चीज़ का हटा देना है और हया ईमान की अहम शाख है। (बुखारी व मुस्लिम)

हया का फल जन्नत है।

३६०– हज़रत अबु हुरैरो (रजि०) से रिवायत है कि नबीये करीम (सल्लल्लाह, अलैहि व सल्लम) ने फरमायाः हया ईमान की एक शाख है और ईमान का मक़ाम जन्नत में है और गाली बेवफाई है और बेवफ़ाई जहन्नम में ले जाने वाली है। (तिर्मिजी)

हया हर चीज को संवार देती है।

३६८– हज़रत अनस (रजि०) से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) ने फरमाया कि बे हयाई जिस में पाई जाती है उस को ऐबदार बना देती है और हया जिस में पाई जाती है उस को संवार देती है। (इब्ने माजा)

हज़रत अबू उमामा से रिवायत है कि रसूलल्लाह (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) ने फरमाया कि हया और कम बोलना ईमान की क़िस्म में से है और गाली बकना और बहुत जियादा बकवास करना निफ़ाक की किस्म से है। (अबू दाऊद)

इस्लाम का इम्तियाज़ी वस्फ़ (प्रमुख विशेता) हया है।

३६२– हज़रत ज़ैद बिन तलहा (रजि०) से रिवायत है कि हुजूरे अकरम (सल्लल्लाह, अ़लैहि व सल्लम) ने फरमाया हर दीन का कोई शिआ़र (पहचान) और वस्फ़े इम्तियाज़ (प्रमुख विशेता) होता है, इस्लाम का इम्तियाज़ी वस्फ़ "शर्म व हया" है। (मुअत्ता इमाम मालिक)

नबीये करीम (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) सबसे ज़ियादा हया वाले थे।

३६३– हज़रत अबू सईद खुदरी (रजि०) से रिवायत है कि हुजूर (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) पर्दा करने वाली कुंवारी लड़की से भी जियादा बा हया (लज्जा वाले) थे। अगर आप कोई ना पसंदीदा चीज़ देखते तो हम आप (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) के मुबारक चेहरे से पहचान लेते कि आप इसको ना पसन्द फ़रमा रहें हैं। (बुखारी व मुस्लिम)

●●●

हिन्दुस्तानी मुसलमान एक नजर में

मौ० अबुलहसन अ़ली हसनी

मुसलमानों के रहन–सहन की विशिष्ट रूपरेखा और उसमें भारतीय तथा इस्लामी सामन्जस्य

हिन्दुस्तानी मुसलमानों का रहन–सहन और उनके घर की रूप रेखा अपने देश–वासियों की सामाजिक परिथिस्त तथा उनके घर के रंग ढंग में कोई अधिक असमानता नहीं पाई जाती। इसमें विभिन्न क्षेत्रों एवं राज्यों के मुसलमानों में वहां की संस्कृति, सभ्यता, ऋतु तथा अर्थव्यवस्था के अनुसार कुछ विविधता भी पाई जाती है, और ऐसा होना स्वाभाविक है। फिर भी मुसलमानों के रहन–सहन का एक विशिष्ट स्वरूप है, और उसके कुछ तत्व एवं अंग ऐसे समान्वित हैं जिनसे उनकी सामाजिक व्यवस्था ने किसी हद तक एक विशिष्ट रूप धारण कर लिया है। इस बारे में इस सभ्यता के चिन्ह जो ईरान, तुर्किस्तान तथा अफ़ग़ानिस्तान के मार्ग से यहां आए थे और जिसका प्रतिनिधित्व, दीर्घकाल तक तुर्क, अफ़ग़ान और मुग़ल सम्राट एवं शिष्ट वर्ग के लोग, करते रहे तथा हिजाज़ी सभ्यता की रूप रेखा जो सदैव मुसलमानों की दृष्टि में एक आर्दश सभ्यता के रूप में विद्यमान रही। इसी के साथ इस्लामी शिक्षा का प्रभाव हिन्दुस्तानी रहन–सहन तथा परम्पराओं के साथ ऐसा समन्वित हो गया कि उन्होंने अपना एक अलग रूप धारण कर लिया और वह एक ऐसा मिश्रण बन गया जिसको न अब विशुद्ध इस्लामी सभ्यता एवं समाज कहना सही होगा और न ईरानी अथवा तुर्की जीवन पद्धति। इसको वास्तविक अर्थ में हिन्दुस्तानी इस्लामी सभ्यता की संज्ञा प्रदान की जा सकती है।

वैधानिक तथा अवैधानिक पर्दे का प्रचलन

मुसलमान घरों में (विशेष कर खाते पीते घरानों में और जो अपने को अशराफ़ कहते या समझतें हैं) पर्दे का अब भी प्रचलन है। यहां इसका विवाद नहीं वह कितना धार्मिक है और कितना रिवाजी, और वह किन उद्देश्यों पर आधारित, किस सीमा तक आवश्यक और कहाँ तक व्यावहारिक है। पहले इसमें बहुत कट्टरता एवं संकीर्णता थी। अब शिक्षा के प्रभाव एवं सांस्कृतिक तथा आर्थिक परिवर्तनों के कारण वश इसमें बहुत ढीलापन आ गया है और समुन्नत एवं प्रगतिशील घरानों से वह बिल्कुल छुट्टी पा गया है। पहले मुसलमान महिलायें तथा शरीफ़ बीबियां डोली, फ़ीनस या पालकी के बिना नहीं निकलती थीं। बग्घियों और फ़ीनसों में भी चिलमने पड़ी होती थीं अब तांगों, रिक्शों तथा मोटरों ने इन "सावधानियों" को समाप्त कर दिया है और स्कूलों तथा कालेजों की शिक्षा सम्बन्धी आवश्यकताओं ने तो इसमें बड़ी हद तक व्यापकता उत्पन्न कर दी है।

लेकिन बाहर के इस पर्दे की अपेक्षा घरों में विशुद्ध धार्मिक पर्दे का चलन ही नहीं, और हिन्दुस्तान में मुसलमानों ने इस बारे में बड़ी व्यापकता एवं "उदारता" से काम लिया है और उन रिश्तेदारों से पर्दा करने की आवश्यकता नहीं समझी जिनसे पर्दा करने के स्पष्ट निर्देश तथा बहुत बल दिया है और इनसे पर्दा न होने की दशा एवं निःसंकोचता में अनेक नैतिक विकारों का भय रहता है।

लड़की की मंगनी के पश्चात सुसराली महिलाओं से पर्दा करने की हिन्दुस्तानी रस्म

लड़की की मंगनी हो जाने के बाद सुसराल वालों से, यहाँ तक कि उस घर की महिलाओं से पर्दा करने की रसम भी खालिस हिन्दुस्तानी है, जिनका दूसरे देशों में संकेत नहीं पाया जाता अर्थात इस प्रथा का दूसरे देशों में कोई स्थान नहीं। ऐसी दशा में पुराने खानदानों में लड़कियां अपनी मौसियों, फूफियों, ममानियों तथा चाचियों से भी पर्दा करने लगती है, जिनके लड़के से उनकी शादी तय हो गई है, अथवा उनके यहाँ बातचीत का सिलसिला जारी है।

निकट सम्बन्धियों, अतिथियों तथा पड़ोसियों के प्रति कर्तव्य

मुसलमानों के घरों में विशेषकर पुराने खानदानों और किसी हद तक खाते पीते वर्गों में अतिथि–सत्कार की परम्परा सदैव से प्रचलित रही है। एक दो घर में कुछ सम्बन्धी शिक्षा ग्रहण हेतु या अन्य किसी आवश्यकता के लिये ठहरतें या आते जाते रहते है और प्रायः इन खानदानों में एक कमानें वाला और दस खानें वाले होते हैं। जमींदारी

उन्मूलन, जागीरों तथा जायदादों की समाप्ति के बाद और मंहगाई के इस युग में इस रिवाज में बड़ी हद तक कमी आ गई है। लेकिन फिर भी इसका अस्तित्व बाक़ी है। आतिथ्य एवं अतिथि सत्कार के प्रति इस्लामी शिक्षानुसार जो महत्व प्रदान किया गया है तथा पड़ोसियों के प्रति जो उत्तरदायित्व बताये गये हैं। महापुरूषों तथा धार्मिक महानुभावों का इस बारे में जो कर्तव्य बताया गया है और अरबी, अफ़गानी सभ्यता के प्रभाव से अब भी मुसलमान इस शुभ कार्य को एक धार्मिक एवं नैतिक मान प्रदान करते हैं और मेहमान का आना अपना सौभाग्य समझते हैं। बहुधा पड़ोसियों को उपहार भेजने तथा उनसे अच्छे सम्बन्ध बनाये रखने का भी रिवाज है।

एक दस्तरख्वान पर सामूहिक रूप से भोजन करना और छूत–छात के प्रति उपेक्षा

घरों में सामान्यतः परिवार के लोंगो का (यदि कोई मजबूरी न हो) एक साथ बैठकर खाने का दस्तूर है।अब शहरी जिन्दगी की व्यस्तता, कार्यालयों एवं विद्यालयों के समय असमय के कारण तथा अन्य कठिनाईयों की वजह से एक ही समय और साथ बैठकर खाना मुश्किल हो गया है। फिर भी बहुत से घरों में रिवाज है कि पुरूष एक दस्तरख्वान पर और महिलाएँ अलग दस्तर ख्वान पर साथ बैठकर भोजन करती हैं। कुछ रईस घरानों में पुरूष तथा महिलाएँ एक ही दस्तरख्वान पर सम्मिलित होती है। इस बात से सब भली प्रकार अवगत हैं कि मुसलमानों में छुआ–छूत नहीं। इसी लिये पानी के गिलास तथा खाने के बर्तन अलग–अलग नहीं होते एक प्लेट में कई–कई आदमी मिलकर खा लेते हैं और दूसरे का झूठा भी खा पी लेने में कोई बुरी बात नहीं समझते। अब पाश्चात्य सभ्यता तथा स्वास्थ्य सम्बन्धी निर्देशों ने, जिनका प्रभाव सब पर पड़ा है, इस, समता तथा सहकारिता में कुछ विघ्न डाल दिया है।

हिन्दुस्तानी मुसलमानों के यहाँ साधारणतया बर्तन कुछ बड़े होते है। दावतों तथा महमानदारी के अवसरों पर बर्तनों में बचा हुआ खाना आम तौर पर फेंका नहीं जाता। अरब में तो निःसंकोच घर वाले स्वयं उसे प्रयोग कर लेते हैं। हिन्दुस्तान में भी कहीं कहीं ऐसा होता है, किन्तु अधिकतर वह नौकरों या गरीबों के काम आता है।

वर्ण व्यवस्था का प्रभाव मुसलमानों पर

हिन्दुस्तानी मुसलमान इस देश की वर्ण व्यवस्था और वंशगत अथवा आर्थिक ऊँच नीच के आधार पर विशिष्ट व्यवहार की प्रक्रिया से अत्याधिक प्रभावित हुए हैं, और अब कुछ धार्मिक तथा विशुद्ध परिवारों को छोड़कर घर वाला और उसके सम्बन्धी तथा अतिथिजन नौकरों के साथ बैठ कर या काम काज करने वालें मुसलमानों के साथ बैठकर खाने को असंगत समझते हैं। अतः सामान्यतः उनको अलग से खाना दे दिया जाता है, या बाद में भोजन करते हैं। वरन खानदान तथा अपनी बिरादरी के लोगों के साथ जो बंशानुकूल होते हैं, किसी प्रकार का भेद भाव नहीं बरता जाता और वे भी इसको सहन नहीं करते। अनेक व्यवसाय सम्बन्धी बिरादरियों में पंचायत तथा बिरादरी की सुसंगठित व्यवस्था अब भी प्रचलित है और उसके नियमों का पालन करना, बिना किसी छूट के, सबको करना पड़ता है। किसी नैतिक अपराध अथवा नियम भंग करने पर पंचायत की ओर से उस को दण्ड दिया जाता है। सबसे बड़ा दण्ड यह है कि उसको 'टाट बाहर' कर दिया जाय और उसका हुक्का पानी बन्द कर दिया जाय।

इस्लामी समाज में पेशे न स्थायी हैं और न तिरस्कृत

मुसलमानों में विभिन्न व्यवसायों तथा पेशों की न तो स्थिर एवं स्थायी रूप से कोई हैसियत है कि उनमें कोई परिवर्तन न हो सके और न इनके आधार पर वर्गों तथा जातियों का निमार्ण होता है। लोगों ने समयानुसार विभिन्न आवश्यकताओं तथा परिस्थितियों के आधार पर किसी पेशा को अपना लिया। कभी तो वह पेशा उसी तक सीमित रहा और कभी–कभी कई पीढ़ियों तक चलता रहा। अब भी कुछ बिरादरियों में एक ही प्रकार का काम होता है परन्तु न तो इसका कोई धार्मिक महत्व है और न वह मुस्लिम समाज का कोई अटल कानून है।

इन बिरादरियों में जो व्यक्ति जब चाहता है अपना पेशा या व्यवसाय बदल लेता है और इस पर किसी को कोई आपत्ति नहीं होती और इस्लाम में कोई पेशा बुरी दृष्टि से नहीं देखा जाता है। इस्लाम के केन्द्र (मक्का मुर्करमा, मदीना मुनव्वरा) और अरब देशों में अनेक प्रतिष्ठित विद्वानो और सम्मानित मुसलमानों के नाम के साथ उस पेशे का नाम सम्बद्ध है जो उनके किसी पुर्वज ने किसी समय किया था, और इसमें न उनको कोई ग्लानि अनुभव होती है और न किसी दूसरे की दृष्टि में वह हीन समझे जाते हैं।

अब्बासी ख़लीफ़ा

अबू जाफर मन्सूर

की न्यायिक जांच पड़ताल

डॉ० मुहम्मद इज्तिबा नदवी

बनू अब्बास के दूसरे ख़लीफ़ा अबू जाफर मन्सूर का शासन है। बगदाद का निर्माण हो चुका है और राजधानी वहां स्थानातरित हो चुकी है। अबू जाफर मन्सूर अपनी तत्व दर्शिता, सूझ बूझ और शासन करने के तौर तरीकों से लोकप्रियता प्राप्त कर चुका है। अपनी प्रजा के सुख दुख के प्रति उनकी सतर्कता और उनकी न्याय–प्रियता से भी लोगों को काफी सन्तोष है। देश में शान्ति व्यवस्था भी स्थापित हो चुकी है। जनता की विभिन्न समस्याओ के निवारण और मुकदमों के फैसलों के लिए काजी और जज नियुक्त किये जाचुके हैं। लेकिन महत्वपूर्ण व अत्यन्त उलझे हुए मसलों के बारे में अब जाफर मन्सूर की विशेष न्यायिक सत्र होते हैं।

बग़दाद के एक बड़े प्रसिद्ध और महत्वपूर्ण व्यापारी तमीम बिन कैस एक घटना का शिकार हुए और उनको सोचना पड़ा कि वे अदालत का दरवाज़ा खटखटाएं या अबू जाफर मन्सूर से अपनी कहानी बयान करें या फिर ख़ामोश हो जाएं। लेकिन उनको अपने नुकसान का दुख था। सबसे बड़ा दुख यह था कि यह एक ऐसा नुकान है जो खुद उनके अपने घर में हुआ है और जिसके लिए उनके पास न कोई गवाह है और न सबूत है। वह चोरी है या बेइमानी? तमीम नगर के काजी के पास इसीलिए नहीं जा सकते कि उनके पास अपने दावे को साबित करने के लिए पक्के सुबूत नहीं हैं। अतः मुकदमा हार जाने का डर है। लेकिन इतनी बड़ी घटना पर खामोश हो जाना भी समझदारी के विरुद्ध है। अतएव उन्होंने अमीरूल मोमिनीन से अपना एक निजी मामला रखने की अनुमति मांगी। तमीम ने अमीरूल मोमिनीन को इन प्रकार अपनी कहानी सुनायी।

अमीरूल मोमिनीन मैंने अभी इन गर्मियों में एक तिजारती काफिले के साथ हिन्दुस्तान का सफर किया और अपना सामान बेचकर हिन्दुस्तान से हीरे जवाहरात, रेशमी कपड़े और इतर व गुलाब खरीद कर सकुशल अपने घर लौट आया। बग़दाद के व्यापारियों ने बड़े अच्छे दामों पर मेरा लाया हुआ सामान खरीदा और मुझे बहुत सारा नफा हुआ, काफी दौलत मुझे मिली। मैंने वह सारी दौलत अपनी पत्नी के पास रखवा दी। कुछ दिनों के बाद एक काम से उस से वह रूपया मांगा तो उसने कहा कि वह तो सब चोरी हो गया। लेकिन मुझे इस बात का विश्वास नहीं हुआ, क्योंकि घर में चोरी की कोई घटना नहीं घटी और न कहीं नकब लगी इसके अलावा मुझे किसी पर संदेह भी नहीं है और न ही कोई प्रमाण है। फिर भी मुझे इस दौलत के चले जाने का अत्यन्त दुख है। मैंने सोचा कि अमीरूल मोमिनीन के न्याय और सूझ बूझ का सहारा लूं।

अबू जाफर मन्सूर ने तमीम से सुवाल किया । तुमने उस औरत से कब शादी की? तमीम ने जवाब दिया एक साल पहले। वह कुंवारी थी या पहले उसका विवाह किसी और से हो चुका था?

तमीमः उसके न मुझसे कोई बच्चा और न मेरे अलावा किसी और से। अबूजाफर ने तमीम को देखा और बलगारिया की बनी इतर की एक शीशी मंगायी और तमीम को दी कि यह खुश्बू घर ले जाओ और अपनी पत्नी के पास रखवादो। इन्शाअल्लाह तुम्हारा दुख व तकलीफ दूर हो जायेगी।

तमीम ने शुक्रिया अदा किया और अमीरूल मोमिनीन को सलाम करके घर चले आए। तमीम के जाने के बाद जाफर मन्सूर ने खुफिया पुलिस के कमांडर को बुलाया और उससे कहा कि अपने आदमियों में से चार भरोसे के ईमानदार आदमियों का चयन करो और ध्यान रहे कि उन्हें खुश्बुओं के पहचानने और उनमें फर्क करने में अच्छी महारत हो। चार अफसर अमीरूल मोमिनीन की सेवा में पहुंच गए। खलीफा ने वही इतर उनको सुंघाया और कहा कि तुम में का एक एक आदमी शहर के दरवाजों पर खड़ा हो जाए और आने जाने वालों का ध्यान रखे। यदि यही खुश्बू किसीके कपड़ों व शरीर में महसूस हो तो उसे तुरन्त मेरे पास ले आओ।

उधर तमीम हर दिन की तरह शाम को अपने घर वापस हुआ। उसने अपनी पत्नी को यह आभास ही नहोने

दिया कि उसने अपने माल के बारे में किसी तरह की कोई कार्यवाही की है। उसे इतर की वह शीशी देते हुए कहा कि यह बड़ा अनोखा और कीमती इतर है। बड़ी भारी रकम देकर मैंने इसे बस तुम्हारे लिए खरीदा है। पत्नी ने इतर सूंघा और अनुभव किया, वास्तव में वह बड़ा उत्तम इतर है। वह बड़ी प्रसन्न हुई। पति के हटते ही उसने थोड़ा सा इतर एक छोटी शीशी और अपने प्रीतम ख़लीफ़ा बिन फरात को उपहार स्वरूप भेज दिया।

ख़लील बिन फरात एक बिगड़े हुए आचरण का नवयुवक था और प्यार मुहब्बत का स्वांग रचा कर औरतों को बेवकूफ बनाया करता था। वह अपनी इस कला के आधार पर हुकूमत की पकड़ और लोगों के सन्देह से बचा हुआ था। लेकिन इतर ने उसका भेद खोल दिया। जैसे ही उसने वह इतर लगाया और अपने शिकार की तलाश में एक दरवाजे से निकला कि पुलिस अफसर ने खुश्बू सूंघते ही उसे गिरफ्तार कर लिया और अबू मन्सूर के सामने पेश कर दिया।

अमीरूल मोमिनीन ने खुश्बू के बारे में उससे पूछा तो वह घबरा गया और सर झुका कर परेशानी की हालत में जवाब दिया कि एक अज्ञात आदमी ने अमीरूल मोमिनीन की मस्जिद में नमाज के बाद यह इतर उसके कपड़ों में लगाया था। अमीरूल मोमिनीन ने उसे सच बोलने के लिए कहा, मगर वह अपनी बात का अड़ा रहा। खलीफा ने पुलिस प्रमुख को आदेश दिया कि इसे हजार कोड़े लगाए जांए ताकि यह सच बोले और उससे एक हज़ार दीनार जुर्माना के रूप में वसूल किया जाए।

ख़लील बिन फरात पहले तो इनकार करता रहा और अपनी प्रतिष्ठा की दुहाई देता रहा। परन्तु अन्त में उसने सब कुछ स्वीकार कर लिया और तमीम की पत्नी का उपहार स्वरूप दिया हुवा सारा माल अपने घर से मंगवाकर प्रस्तुत कर दिया।

अमीरूल मोनिन अबू जाफर ने तमीम को बुलवाया, उनसे माल की निशानी मालूम की। जब उन्होनें सही बता दिया तो माल उनके हवाले कर दिया। इसके बाद अबू जाफ़र मन्सूर ने पूछा कि तुम अपनी पत्नी के बारे में क्या फैसला करते हो? तमीम ने कहा अमीरूल मोमिनीन मैं आपको गवाह बनाता हुं कि मैंने उस बदकार और बेइमान औरत को तलाक दी। अमीरूल मोमिनीन ने ख़लील बिन फरात के हाथ काटने का आदेश दिया और उसके बाद राजधानी से बाहर निकाल दिया। तमीम जब घर पहुंचे तो देखा कि अमीरूल मोमिनीन की पुलिस पहुंच चुकी है, जिसने उनकी पत्नी को तलाक की ख़बर दे दी है और घर से निकल जाने का भी हुक्म सुना दिया है। तमीम बिन कैस को बड़ा सन्तोष मिला और खलीफा की अकल, सुझ बूझ, तत्व दर्शिता और न्याय का शुक्रिया अदा किया। तमीम ने एक नेक और सादा स्वभाव औरत से शादी करके दोबारा अपनी गृहस्ती बसायी। अल्लाह ने उनके कारोबार में बड़ी उन्नति दी और उन्होनें बड़ी उदारता के साथ सार्वजनिक हित के कामों में अपनी दौलत खर्च करके अपने को अल्लाह के इनामों का हकदार साबित किया।

शैतानी इ़ग्वा : रमज़ान में मस्जिदें भरी हुई थीं। घरों की टीवियां खामोश थीं। सनीमा घरों में मुस्लिम नवजवानों की तातादा ना के बराबर थी, लेकिन यह ईद की नमाज होते ही क्या हो गया? मस्जिदों में सन्नाटा है, टीविया सरगर्म हैं, नवजवान लहव लाअ़िब में मुब्तला है, यह शैतानी इ़ग्वा नहीं तो क्या है? ऐसे में हमारी जिम्मेदारी क्या है?

0522-264646

Bombay Jewellers

The Complete Gold & Silver Shop

84, Victoria Street, Akbari Gate, Lucknow.

0522-256005

Asif Bhai Saree Wale

M.A. Saree Bhandar

Manufacturer & Supplier of :

Chickan Sarees & Suit Pieces

In Front of Kaptan Kuan, Shahi Shafa Khana, New Market. Shop No. 1, Chowk, Lucknow-03

दूसरी किस्त

मुहम्मदी सन्देश

मौ० सैं० सुलैमान नदवी

पहले के समस्त धर्म वस्तुतः तौहीद (एकेश्वर वाद) ही का सन्देश लेकर इस दुनिया में आये थे किन्तु तीन कारणों से इन में तौहीद के बारे में भ्रम पैदा हो गया १. शारीरिक उपमायें २. ऐश्वरीय गुणों को ईश्वर से अलग तथा स्थायी मानना ३. कर्म के चमत्कार से धोखा खाना। पैगाम–ए–मोहम्मदी ने इस भ्रम को दूर किया।

खुदा को, खुदा की सिफ़तों (गुणों) को तथा खुदा और बन्दे के पारस्परिक सम्बन्ध को व्यक्त करने के लिए काल्पनिक या भौतिक उपमायें दूसरे धर्मों के अनुयाइयों ने खोज निकाली। फलतः असल खुदा तो जाता रहा और उसकी जगह यह उपमायें खुदा बन गईं। इन्हीं उपमाओं ने साक्षात होकर मूर्तियों का रूप धारण कर लिया और मूर्तिपूजा आरम्भ हो गई। खुदा को अपने बन्दों के साथ जो प्यार और लगाव है उसे भी उपमा देकर साक्षात कर दिया गया। आर्यों के यहां चूँकि स्त्री प्रेम की देवी है इसलिए खुदा और बन्दे के सम्बन्ध को मां और बेटे के शब्द से व्यक्त किया गया इस प्रकार खुदा मां के रूप में आ गया। रूमियों तथा यूनानियों में भी खुदा स्त्री ही के रूप में प्रकट हुआ है। सामियों के यहां स्त्री का वर्णन सभ्यता के विरूद्ध समझा जाता है अतः परिवार का मूल आधार बाप को माना गया। इस प्रकार बाबुल, असरि व शाम के खँडहरों में खुदा मर्द के रूप में प्रकट हुआ है। बनी इसराईल की प्रारम्भिक परिकल्पनाओं में खुदा को बाप और तमाम फरिश्तों तथा इन्सानों को खुदा की सन्तान बताया गया है। और आगे चलकर केवल बनी इसराईल को खुदा की सन्तान माना गया

बनी इसराईल के कुछ सहीफों में स्त्री पुरूष की कल्पना भी खुदा और बनी इसराईल के बीच व्यकृ की गई है। यहां तक कि बनी इसराईल और येरूशलम को पत्नी माना गया है और खुदा को पति। ईसाइलियों में बाप और बेटे के रूपक ने वास्तविकता का स्थान ले लिया। अरबों में भी इस प्रकार की परिकल्पना थी। खुदा को बाप और फरिश्तों को उसकी बेटियां समझा जाता था। पैगाम–ए–मोहम्मदी ने इन तमाम बातों को रोका और इस प्रकार की धारणा को शिर्क बताया। उसने स्पष्ट घोषणा की "उस जैसा और उसके समान कोई चीज़ नहीं।" इस एक घोषणा (सूरे एख़लास की एक आयत) ने शिर्क की सारी बुनियादों को हिला दिया।

परन्तु इस का यह अर्थ कदापि नहीं है कि पैगाम–ए–मोहम्मदी ने खुदा और बन्दे के बीच मुहब्बत व प्रेम को तोड़ दिया। इस्लाम ने इस सम्बन्ध को और सुदृढ़ बनाया है। इन सम्बन्धों को व्यकृ करने के लिए जिन शारीरिक उपमाओं और विभिन्न मानवीय स्वरूपों का सहारा लिया गया इस्लाम ने उनको तोड़ दिया क्योंकि इससे खुदा और बन्दे के बीच जो सम्बन्ध है उसका महत्व कम हो जाता है और इन से शिर्क की गलतियों पैदा होती हैं। कुरआन में है, "तुम अल्लाह को उसी तरह याद करो जैसे अपने बापों को याद करते हो बल्कि इससे बहुत बढ़कर याद करो" यहां पर यह नहीं कहा गया कि, " खुदा तुम्हारा बाप है", अर्थात खुदा और बाप के सम्बन्ध को उपमेय और उपमान नहीं बताया बल्कि खुदा की मुहब्बत और बाप की मुहब्बत को आपस में उपमेय और उपमान बताया। इससे स्पष्ट है कि इस्लाम ने जिस्मानी (शारीरिक) रिश्ते को यद्यपि छोड़ दिया तथापि उस जिसमानी रिश्ते की मुहब्बत को बाक़ी रखा। आगे कहा गया है, " बल्कि बाप से बहुत ज्यादा खुदा से मुहब्बत रखनी चाहिए" जो इस बात का प्रमाण है कि इस सम्बन्ध की मुहब्बत को वह खुदा और बन्दे की मुहब्बत की अपेक्षा कम दर्जे का समझता है और इस में अभिवृद्धि की ज़रूरत महसूस करता है। इस्लाम खुदा को दुनिया का बाप नहीं कहता बल्कि दुनिया का "पालन हार" कहता है, क्योंकि उसकी निगाह में 'अब' से 'रब' का स्थान ऊँचा है।

ऐश्वरीय गुणों को ईश्वर के अस्तित्व से अलग मानना तौहीद के अक़ीदे में भ्रम उत्पन्न करने का दूसरा कारण है। हिन्दू धर्म में ईश्वर के प्रत्येक गुण को अलग एक स्थायी आस्तित्व मान लिया गया और इस प्रकार एक खुदा के लाखों खुदा बन गये। उदाहरण के लिए यदि खुदा की शक्ति को व्यकृ करना हुआ तो कई हाथों वाली मूर्ति बना दी। पैदा करना, कायम रखना और मिटा देना खुदा की तीन बड़ी सिफ़ते हैं। हिन्दु धर्म में इन तीन को

क्रमशः ब्रहमा, विष्णु, महेश मान लिया गया और इनके उपासक तीन अलग अलग वर्गों में बंट गये। ईसाइयों ने खुदा की तीन बड़ी सिफ़तों अर्थात् जीवन, शिक्षा और संकल्प को तीन स्थायी रूप मान लिया। उनके अनुसार जीवन बाप है, शिक्षा रूहुलकुदस (जिब्रील अलै०) और संकल्प बेटा है।

हज़रत मुहम्मद सल्ल० ने इस भ्रम का अन्त किया। कुरआन ने कहा,"सारी खूबियां उसी एक पालनहार के लिए हैं ", "उसको अल्लाह कहकर पुकारो या रहमान कहकर, जो कहकर पुकारो सारे अच्छे नाम या अच्छी सिफ़तें उसी की हैं।" वही जिलाता है और वही मारता है, वही तुम्हारा और तुम्हारे पहले बाप दादों का रब है", अर्थात वही ब्रहमा है वही शिव है वही विष्णु है। शिर्क का तीसरा स्रोत लोगों का यह भ्रम था कि सृष्टि के भिन्न भिन्न कामों के लिए खुदा के भिन्न भिन रूप हैं। कोई मारता है, कोई जिलाता है, कोई शान का देवता है कोई दौलत की देवी। अर्थात हर काम के अलग अलग खुदा हैं। इस्लाम ने इस भ्रम को दूर किया और बताया कि यह सब एक ही खुदा के काम हैं।

कर्म के दो भेद हैं– अच्छा (खैर) और बुरा (सर)। इस विचार से कि एक ही ज़ात से अच्छे और बुरे दोनों काम नहीं हो सकते मजूसियों ने अच्छे और बुरे कामों के अलग अलग खुदा ठहराये। एक का नाम यज़दान और दूसरे का अहिरमन रखा। और दुनिया को इन दोनों के पारस्परिक संघर्ष का रणक्षेत्र ठहराया। यह भूल इसलिए हुई कि वह अच्छाई व बुराई की वास्तविकता को नहीं समझ सके। कोई वस्तु मूल रूप में न अच्छी है न बुरी बल्कि यह अच्छी या बुरी इन्सानों के उचित अथवा अनुचित प्रयोग से बन जाती है। उदाहरणार्थ आग से खाना पकाया जाये, इन्जन चलाया जाये, गरीब को तापने को दिया जाये तो यह अच्छी है, और यदि उसी आग से किसी ग़रीब का घर जला दिया जाये तो यह बुरी बात है।

आग स्वयं न अच्छी है और न बुरी बल्कि हम अपने प्रयोग से उसे अच्छी या बुरी बना देते हैं। अन्धेरे में कोई छिपकर चोरी करे तो शर और यदि उसी अन्धेरे में छिपकर नेकी करे तो खैर इसी प्रकार समस्त सृष्टि (कायनात) मूल रूप से न पथ प्रशस्त (हिदायत) करने वाली है और न पथ भ्रष्ट (गुमराह) करने वाली। बल्कि कायनात में दोनों ही बातें हैं। अपने कर्म और विचार से कभी हम उससे हिदायत पाते हैं और कभी गुमराह हो जाते हैं। यही बात खुदा के पैगाम के साथ है। उसके भी दोनों नतीजें हैं। उसी कुरआन और इन्जील को पढ़कर एक व्यक्ति खुदा को पहचानता है और आत्म सन्तोष पाता है दूसरे के मन में सन्देह और शंकायें उत्पन्न होती हैं और वह नास्तिक बन जाता है। पैग़ाम एक है किन्तु दिल दो हैं और दोनों एक ही मालिक के बनाये हुए। मालिक एक है उसके कार्य अनेक हैं।

खुदा की इबादत हर मज़हब में थी और है, किन्तु कुछ प्रचीन धर्मों में यह सामान्य भ्रम फैल गया था कि इबादत का धेय शरीर को कष्ट देना है जिसके फलस्वरूप हिन्दुओं में जोग और ईसाइयों में रहवानियत का जन्म हुआ

और कठिन साधनाओं को अन्तरात्मा के उत्थान का साधन समझा गया। कोई आजीवन स्नान नहीं करता था कोई सदैव टाट या कम्बल ओढ़े रहता था कोई सदा नग्न बिना कपड़ो के रहता था कोई आजीवन ब्रहमचर्य रहता था कोई साँस रोकने को इबादत समझता था आदि आदि। पैग़ाम–ए–मोहम्मदी ने आकर इन्सानों को इन मुसीबतों से छुटकारा दिलाया और बताया कि यह अध्यात्मवाद नहीं जिसमानी तमाशें हैं खुदा को जिस्म की शक्ल नहीं वरन दिल का रंग प्रिय है। कुरआन कहता है,"कहो किस ने अल्लाह की आराइश, जिसको उसने अपने बन्दों के लिए पैदा किया, हराम की" (सूरे सराफ़) पैग़ाम–ए–मोहम्मदी ने सर्वप्रथम दुनिया को बताया कि इबादत का एक मात्र धेय बन्दे का खुदा के आगे अपनी बन्दगी का इकरार करना है। इबादत के विभिन्न स्तम्भों की पूर्ति कर इन्सान बताता है कि वह खुदा का विद्रोही नहीं अपितु उसका आज्ञाकारी बन्दा है। नमाज़, रोज़ा, हज और ज़कात का मुख्य धेय यही है। प्राचीन धर्मों में अन्य इबादतों के साथ एक इबादत कुरबानी थी। लोग अपने आप को देवताओं पर कुरबान कर देते, अपनी सन्तान को भेंट चढ़ा देते थे, देवताओं को खून के छींटे दिये जाते थे पैग़ाम–ए–मोहम्मदी ने इन्सानों की कुरबानी एकदम बन्द कर दिया। जानवरों की कुरबानी जायज़ रखी मगर न तो उनके खून के छींटे देने का आदेश दिया और न गोश्त के जलाने का। इस्लाम से पहले लोग समझते थे कि हर व्यक्ति की जान उसकी अपनी सम्पत्ति है इसी प्रकार उसकी सन्तान और उसकी पत्नी की जान भी उसकी मिलकियत है। इस एक भ्रम से आत्महत्या, कन्या वध, सन्तान की भेंट

सती की प्रथा जैसी अनेक रस्में पैदा हो गयीं। इस्लाम ने बताया कि हर जान हमारी नहीं बल्कि खुदा की मिलकियत हैं। कुरआन कहता है," अपनी सन्तान को ग़रीबी के भय से न मारो। हम रोज़ी देते हैं उनको और तुम को। निःसंदेह उनका मारना बड़ी भूल है"–(सूरे बनी ईसराइल)

दुनिया की महानतम ग़लतियों में से एक यह है कि लोगों ने खुदा के बन्दों के बीच जातीयता, धन दौलत, रंगरूप की दीवारे खड़ी कर दीं। हिन्दुस्तान, रोम, ईरान कोई भी इससे बचा न था। ऊँच नीच, काले गोरे, छोटे बड़े का यह भेदभाव सांसारिक सीमाओं को पारकर खुदा के घरों में भी पहुंच गया। कालों के गिरजे अलग हैं और गोरों के अलग । खुदा के यह दोनों काले और गोरे बन्दे एक साथ एक खुदा के आगे नहीं झुक सकते। पैग़ाम–ए–मोहम्मदी ने इस प्रकार के समस्त भेदभाव को समाप्त किया। हज़रत मोहम्मद सल्ल० ने फ़रमाया, "अरब को अजम पर और अजम को अरब पर कोई फ़ज़ीलत (प्राथमिकता) नहीं है। तुम सबके सब आदम अलै० के बेटे हो और आदम अलै० मिट्टी से बने थे।" इस्लाम ने बताया कि खुदा के घर में कोई भेदभाव नहीं। जाति और वँश का कोई भेद नहीं, व्यवसाय और पदका कोई भेद नहीं, अमीरी ग़रीबी का कोई भेद नहीं– खुदा के आगे सब बराबर है। यहां न कोई ब्राहमण है न कोई शूद्र। कुरआन सबके हाथ में दिया जायेगा, नमाज़ सबके पीछे पढ़ी जायेगी रिश्तानाता हर एक का हो सकता है, शिक्षा ग्रहण करना हर एक का अधिकार है। सबके समान अधिकार है यहां तक कि खून भी सबका बराबर है। दुनिया को जिस चीज़ ने सबसे अधिक पथभ्रष्ट किया वह दीन और दुनिया का अन्तर है। दीन का काम अलग किया गया और दुनिया का अलग। खुदा का आदेश अलग ठहराया गया और शासक का अलग। दीन और दुनिया में कामयाबी के अलग अलग रास्ते बताये गये। यह सबसे बड़ी भूल थी। इस्लाम ने बताया कि नेक और सच्चे इरादे से मन से इसी दुनिया के कार्यों को खुदा के बताये हुए नियमों के अनुसार करना दीन है अर्थात खुदा के निर्देशों के अनुसार दुनियादारी ही दीनदारी है। लोग समझते हैं कि सन्यास धारणा करके, पहाड़ों की खोह में बैठकर खुदा को याद करना दीनदारी है और मित्रों, परिवार के सदस्यों, माता पिता, देश और देशवासियों तथा स्वयं अपनी मदद, रोजी रोटी की चिन्ता और बच्चों का पालन पोषण दुनियादारी है। इस्लाम ने इस ग़लती को दूर किया और बताया कि खुदा के आदेशों के अनुसार इन अधिकारों और कर्तव्यों का पालन करना भी दीनदारी है।

इस्लाम में मोक्ष की दो आधार शिलायें हैं– ईमान और अमलेसालेह। ईमान पांच बातों पर विश्वास (ऐतक़ाद) का नाम है– १. खुदा पर २. नेकी की राह बताने वाले पैगम्बरों पर, ३. पैगम्बरों तक खुदा का सन्देश लाने वाले फ़रिश्तों पर ४. उन किताबों पर जिन में खुदा के यह पैग़ाम हैं ५. खुदा के आदेश के अनुसार अमल करने वालो अथवा न करने वालों की जज़ा और सजा पर। यही ईमान कर्म की आधार शिला है। अमल (कर्म) के तीन भाग हैं–१. इबादत अर्थात वह कर्म जिनके द्वारा खुदा की बड़ाई और बन्दे की बन्दगी व्यक्त होती है, २. मुआमलात अर्थात लोगों के आपस के लेन देन, कारोबार और व्यवस्था सम्बन्धी नियम जिनके कारण मानव समाज बरबादी से बचा रहता है, अन्याय मिटता है और न्याय का राज्य होता है,

३. एख़लाक़ (आचरण) अर्थात् वह अधिकार जो आपस में एक दूसरे पर यद्यपि क़ानूनी हैसियत से अनिवार्य नहीं हैं किन्तु आत्मा की शुद्धि और समाज के उत्थान के लिए आवश्यक हैं। इन्हीं चार चीज़ों अर्थात् ईमान इबादात, मुआमलात और एख़लाक़ की सच्चाई और दुरूस्ती हमारे मोक्ष (नजात) का साधन है। इस्लाम नाम है संघर्ष, प्रयास और कर्म का। वह मौत नहीं जिन्दगी है। हज़रत मुहम्मद सल्ल० का पैग़ाम इच्छाओं का परित्याग नहीं उनकी दुरूस्ती है। इस्लाम धन और शक्ति को न तो तुच्छ बताता है और न उससे रोकता है, बल्कि इनकी प्राप्ति और उपभोग के तरीक़ों की दुरूस्ती और उसके सदुपयोग की विधि निर्धारित करता है। कुरआन में है, "यह वह लोग हैं जिनको व्यापार और क्रय–विक्रय खुदा की याद से ग़ाफ़िल नहीं करते" (सूरेनूर)। कारोबार भी जारी है और खुदा की याद भी। वह एक को छोड़कर दूसरे को नहीं ढूँढतें बल्कि दोनों को साथ साथ लेकर चलते हैं।

अनुवाद : मो० हसन अन्सारी

लेखक हजरात कृपया पन्ने के एक ओर लिखा करें तथा स्वक्ष सुन्दर और सरल लिखें।
– सम्पादक

आपके प्रश्नों के उत्तर

इदारा

प्रश्नः क़ुरबानी किस पर वाजिब है?

उत्तरः हर आक़िल बालिग़ साहिबे निसाब पर क़ुर्बानी वाजिब है।

प्रश्नः साहिबे निसाब कौन होता है?

उत्तरः जिस के पास २०० दिर्हम अर्थात ५२ तोला ६ माशा अर्थात ६१२ ग्राम चाँदी हो या ६१२ ग्राम चाँदी ख़रीदने भर के पैसे हों वह साहिबे निसाब यानी निसाब का मालिक हुआ। अगर चाँदी बिलकुल न हो बीस मिस्क़ाल यानी साढ़े सात तोला यानी ८७ ग्राम सोना हो तो वह भी साहिबे निसाब है। किसी शख़्स के पास चाँदी ६१२ ग्राम से कम है लेकिन जो पैसे है उन से अगर चाँदी ख़रीदें तो ख़रीदी हुई चाँदी और जो चाँदी उसके पास है दोनो मिला कर ६१२ ग्राम हो जाएंगे तो यह भी साहिबे निसाब है। इसी तरह थोड़ा सोना और थोड़ी चाँदी है मगर सोना और चाँदी की क़ीमत ६१२ ग्राम चाँदी के बराबर हो जाए तो यह भी साहिबे निसाब है। मतलब यह कि जिसके पास चाँदी, सोना और नक़्द तीनों को मिला कर ६१२ ग्राम चाँदी की क़ीमत के बराबर माल है वह साहिबे निसाब है। उस के माल पर साल गुज़र जाए तो ज़कात फ़र्ज है और चाहे साल गुज़रे या न गुज़रे अीदुलफित्र के दिन सदक़–ए–फ़ित्र उस पर वाजिब है और अीदे अज़हा(बक़रअीद) के दिन क़ुर्बानी उस पर वाजिब है।

प्रश्नः किसी के पास ५० ग्राम सोने का ज़ेवर है और न नक़्द हैं न चाँदी है तो क्या वह भी साहिबे निसाब है? जब कि ५० ग्राम सोने की कीमत ६१२ ग्राम चाँदी से ज़ियादा है?

उत्तरः ऐसा शख़्स साहिबे निसाब नहीं है। लेकिन ऐसा बहुत कम होता है कि किसी के पास नक़्द बिलकुल न हो अगर नक़्द कुछ भी होगा तो सोने की क़ीमत और नक़्द मिलाकर ६१२ ग्राम चाँदी की बराबरी देखी जाएगी अगर बराबरी है या ज़ियादा है तो यह शख़्स भी साहिबे निसाब है।

प्रश्नः क्या औरतों के ज़ेवर भी निसाब में जोड़े जाएंगे और क्या ज़ेवरों पर भी ज़कात है?

उत्तरः हां औरतों के ज़ेवरात निसाब में जुड़ेंगे और उन पर भी ज़कात है।

प्रश्नः बड़े जानवर भैंस, पड़वा, ऊँट, वग़ैरह में क़ुर्बानी के कितने हिस्से हो सकते है?

उत्तरः बड़े जानवर भैंस, पड़वा, ऊँट और जहां गाय मना न हो गाय में एक से लेकर सात हिस्सों तक हो सकते है। यानी अगर कोई शख़्स एक क़ुर्बानी में पूरा पड़वा कर दे तो यह भी ठीक है और दूसरे शरीक होना चाहें तो दो, तीन, चार, पांच, छः, सात तक साझी हो सकते हैं यानी बड़े जानवरों में सात आदमियों तक की क़ुर्बानी सहीह रहेगी। भैंस, पड़वा, गाय की उम्र कम से कम दो साल होना चाहिए, दो साल से कम की क़ुर्बानी सहीह न होगी मगर ऊँट कम से कम पांच साल का होना चाहिए

प्रश्नः कभी बेचने वाला बताता है कि यह पड़वा दो साल का है लेकिन वह दान्ता नहीं होता है ऐसी सूरत में क्या करना चाहिए?

उत्तरः आम तजरिबा यही है कि बकरी बकरा एक साल में और भैंस, पड़वा, दो साल में दान्त जाते है लेकिन कभी इस के ख़िलाफ़ भी होता है लिहाज़ा बेचने वाले ने अगर उसे पाला हो और उस की उम्र से वाक़िफ़ हो तो उस की बात मान लें जब कि आप को लगे कि वह ग़लत नहीं कह रहा है लेकिन अगर कारोबारी है मुख़्तलिफ़ जगहों से जानवर ख़रीद कर लाया है तो उस की बात का एअ़तिबार न करें, दान्त देखें अगर दान्ता है तो क़ुर्बानी के लिये लें वर्ना नहीं।

प्रश्नः बकरा, भेड़ वग़ैरह की क़ुर्बानी के लिये क्या उम्र होना चाहिए?

उत्तरः बकरा, बकरी, भेंड़ वग़ैरह की उम्र कम से कम एक साल होना चाहिए।

प्रश्नः क्या हिरन या नील गाय की क़ुर्बानी हो सकती है?

उत्तरः नहीं जंगली जानवरों की क़ुर्बानी नहीं हो सकती, पालतू जानवरों ही कि क़ुर्बानी हो सकती है। अगर जंगली जानवर पाल लिये जाएं तब भी उन की क़ुर्बानी नहीं हो सकती।

प्रश्नः क्या मुर्ग़ी की क़ुर्बानी हो सकती है?

उत्तरः नहीं किसी चिड़िया की क़ुर्बानी नहीं हो सकती, क़ुर्बानी सिर्फ़ पालतू हलाल चौपायों ही की हो सकती है।

प्रश्नः क्या दुब्ले जानवर की क़ुर्बानी हो सकती है?

उत्तर: चाहिये कि सिहत मन्द जानवर की क़ुर्बानी की जाए लेकिन चलते फिरते दुबले जानवर की क़ुर्बानी सहीह है अल्बत्ता अगर इतना कमज़ोर हो कि चल न पाता हो तो उस की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं इसी तरह अन्धे, काने, बेकान के ,बे दुम के, आधे से ज़ियादा दान्त झड़े जानवरों की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं। जो अ़ज़्व (अंग) था मगर एक तिहाई या एक तिहाई से ज़ियादा कट गया या जाता रहा तो उस की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं। सींग अगर टूट गया है मगर जड़ से नहीं टूटा है तो उसकी क़ुर्बानी दुरूस्त है हां जड़ से टूट जाए तो दुरूस्त नहीं लंगड़े जानवर की क़ुर्बानी दुरूस्त है लेकिन ऐसा लंगड़ा जो एक पैर रखता ही न हो उस की क़ुर्बानी दुरूस्त नहीं।

प्रश्न: ऐसा तन्दरूस्त बकरा जो साल भर का न हो लेकिन देखने में साल भर का लगता हो और साल भर के दूसरे बकरे से निकलता हुआ हो तो क्या उस की क़ुर्बानी दुरूस्त है?

उत्तर: बकरा चाहे जितना तन्दुरूस्त हो क़ुर्बानी के लिए साल भर का होना ज़रूरी है अल्बत्ता दुंबा और भेंड़ में यह गुंजाइश है कि वह साल भर का न हो लेकिन आम तौर से साल भर के जानवर जैसा लगता हो तो उस की क़ुर्बानी जाइज़ है।

प्रश्न: क्या बड़े जानवर में क़ुर्बानी के हिस्सों के साथ अ़कीक़े का हिस्सा भी लिया जा सकता है?

उत्तर: हां बड़े जानवर में क़ुर्बानी के साथ अ़कीक़े का हिस्सा लिया जा सकता है।

प्रश्न: क़ुर्बानी ज़ब्ह करने से पहले और बाद में जो दुआएं पढ़ी जाती हैं अगर वह न पढ़ी जा सकें तो क्या क़ुर्बानी न होगी?

उत्तर: क़ुर्बानी ज़ब्ह से पहले और बाद वाली दुआएं पढ़ने का बड़ा सवाब है, ज़बानी याद न हों तो देख कर पढ़ सकते हैं, लेकिन अगर दुआएं न पढ़ी जा सकीं और क़ुर्बानी की नीयत से "बिस्मिल्लाहि अल्लाहु अक्बर" कहकर ज़ब्ह कर दिया तो क़ुर्बानी हो गई। किसी दूसरे की तरफ़ से ज़ब्ह कर रहें हों तो दिल में यह नीयत हो कि फ़ुलां की तरफ़ से और ज़ियादा हों तो उन सब की तरफ़ से नीयत कर के ज़ब्ह कर दें क़ुर्बानी हो जाएगी। दिल में नीयत ज़रूरी है। अगर बादवाली दुआ पढ़ेंगे तो सब के नाम ज़बान पर भी आ जाएंगे।

प्रश्न: क़ुर्बानी के गोश्त की तक़्सीम का क्या हुक्म है?

उत्तर: चाहिये कि एक तिहाई ग़रीबों में बाटें, एक तिहाई अ़ज़ीज़ों में और एक तिहाई अपने घरवालों के लिये रोक लें। लेकिन अगर किसी के घर में ज़ियादा लोग हों और सब मिल कर पूरा बकरा खा जाएं, तकसीम न करें तो कोई गुनाह न होगा।

प्रश्न: क्या क़ुर्बानी का गोश्त ग़ैर मुस्लिमों को दिया जा सकता है?

उत्तर: चाहिये कि तलाश कर के जिन मुस्लिम भाइयों को गोश्त न मिला हो उन तक पहुंचायें लेकिन अगर आप ग़ैर मुस्लिम को भी देना चाहें तो दे सकते है कोई हरज न होगा।

प्रश्न: क़ुर्बानी की खाल का क्या हुक्म है?

उत्तर: क़ुर्बानी की खाल अपने काम में लाई जा सकती है। मुसल्ला बना लें, झोला बना लें, डोल बना लें, लेकिन अगर बिकी तो वह ग़रीब का हक़ है। मदरसे वाले अगर उसे ग़रीब बच्चों पर ख़र्च करते हों तो उन को भी दे सकते हैं। लेकिन क़ुर्बानी की खाल की क़ीमत से किसी का कफ़न दफ़न करना मस्जिद या मदरसे की इमारत बनाना दुरूस्त नहीं।

प्रश्न: हमारे इलाक़े में रिवाज है कि बड़े जानवर में क़ुर्बानी के सात हिस्से इस तरह होते हैं कि हर बड़े जानवर में सातवाँ हिस्सा हुज़ूर (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) का होता है यानी ६ लोग बराबर पैसे देते हैं यानी हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम) वाले सातवे हिस्से की क़ीमत में सब लोग शरीक होते हैं। इस रिवाज का क्या हुक्म है।

उत्तर: ज़ाहिर है हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम की जानिब से क़ुर्बानी में हिस्सा लेने को हर शख़्स अपनी सआ़दत समझता है इसलिये क़ुर्बानी तो सहीह होगी लेकिन बेहतर यह था कि हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम की जानिब से क़ुर्बानी में दूसरे को शरीक न किया जाता बल्कि पूरा हिस्सा लिया जाता। अगर्चे इस के ख़िलाफ़ कुछ कहने की जुर्अत नहीं मुफ़्तियाने किराम इस पर तवज्जुह फ़रमाएं लेकिन इतना कहा जा सकता है कि इस उम्मत में हुज़ूर (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) से सब से ज़ियादा महब्बत करने वाले और अअ़माल में उम्मत के लिये नमूना सहाब–ए–किराए रज़ियल्लाहु अन्हुम थे, लेकिन ऐसी कोई रिवायत नज़र से नहीं गुज़री जिस में हुज़ूर (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) की जानिब से साझे में क़ुर्बानी की गई हो।

प्रश्न: क्या ख़स्सी जानवर की क़ुर्बानी

दुरूस्त है?

उत्तर: ख़स्सी जानवर की क़ुर्बानी जाइज़ है वह तो ग़ैर ख़स्सी (अन्डू) से सिहत मन्द और साफ़ सुथरा होता है। ख़स्सी जानवर की क़ुर्बानी हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम से साबित है।

प्रश्न: ह़ज्ज के दौरान बेशुमार क़ुर्बानिया होती है। ह़ाजी जानवर ज़ब्ह़ कर के चला आता है न उस का गोश्त किसी के काम आता है न खाल। ऐसे में सऊदिया के बाज़ बैंकों ने यह ज़िम्मेदारी ली है। वह ह़ाजियों से पैसे लेकर ज़ब्ह़ की ज़िम्मेदारी ले लेते हैं और वह बड़ी ज़िम्मेदारी से जानवर ख़रीद कर उसे ज़ब्ह़ करते हैं और जानवर की आलाइश निकाल कर एयर कन्डीशन जहाज़ में रखकर किसी इस्लामी मुल्क में भेज देते हैं इस तरह़ जबीह़े का गोश्त दफ़्न करने या जलाने के बजाए अपने भाइयों के खाने के काम आ जाता है। लेकिन बाज़ लोगों का कहना है कि यह सूरत जाइज़ नहीं है।

उत्तर: जो लोग वहां क़ुर्बानी के टिकट देकर कुर्बानी की ज़िम्मेदारी लेते हैं वह हनफ़ी नहीं होते। उनके यहां क़ुर्बानी फिर सर मुंडाने की तरतीब वाजिब नहीं है इसलिये वह वअ़दा किये हुए वक़्त की पाबन्दी उमूमन नहीं करते जैसा कि लोगों का बयान है। अलबत्ता क़ारिन व मुतमतिअ़ की क़ुर्बानी वह १० जिल्हिज्जा को किसी वक़्त ज़रूर कर देते हैं पस हनफ़ी को चाहिये कि शाम को सर मुंडाए ताकि उस की तरतीब बाकी रहे और चाहे तो उन के दिये हुए वक़्त के बाद सर मुंडा दे और उन के वअ़दे पर एअ़तिमाद करे। अहनाफ़ ह़ज़रात के लिये इह़तियात की एक शक्ल और भी है वह यह कि वह एक दम की क़ुर्बानी भी कर दें, जहां हज़ारों हज़ार रूपया ख़र्च हो रहा है वहां एक दम देकर अपनी क़ुर्बानी का गोश्त काम में आ जाए तो यह बड़ी बात है। दम देने की सूरत में सर मुडांने में ताख़ीर करने की कोई ज़रूरत नहीं।

प्रश्न : मै बहुत दिनों से बैंक में मुलाज़मत करता हूँ मुझे बताया गया कि वह शरीअ़त में मना है मैं इस दलदल से निकलना चाहता हूँ लेकिन कुछ समझ मे नहीं आता कि किस तरह़ जान छुड़ाऊँ घर की ज़िम्मेदारियां बहुत ज़ियादा हैं और कोई दूसरा रोज़गार नहीं है उम्मीद है आप कोई बेहतर मश्वरा देंगे कि मैं क्या करूँ।

उत्तर: दो बातों का आप ख़याल रखें नं० १– अपने आप को गुनहगार समझते हुए इस्तिग्फ़ार करते रहें और अल्लाह तआ़ला से दुआ करते रहें कि रोज़ी का कोई ह़लाल ज़रीआ़ अ़ता फ़रमाए। २– ह़लाल ज़रिअ़े की तलाश और कोशिश जारी रखें, चाहे उस में आमदनी कुछ कम हो इन्शा अल्लाह आप के लिए कोई रास्ता निकलेगा।

प्रश्न: हमारी २० बीस आदमियों की एक कमेटी है जिसको "बीसी०" कहते है इसमें हर मेम्बर माहाना १५०० रूपये जमा करता है जिस से हर माह ३०००० रूपये जमा हो जाते है अब पर्ची के ज़रीअ़े नाम निकाला जाता है और बीस साझीदारों में से जिस का नाम निकलता है उस को ३०००० रूपये दे दिये जाते है। इस तरह हर माह एक साथी को ३०००० इकट्ठे मिल जाते हैं। यह काम बाहमी रज़ामन्दी से हो रहा है। इस में कोई शरअ़ी ह़रज तो नहीं है?

उत्तर: अगर बीसों आदमियों की रज़ामन्दी से ऐसा हो रहा है तो यह जाइज़ है इसमें कोई शरअ़ी ह़रज नहीं है।

प्रश्न: मैने १०० रू० का एक लाट्री बांड ख़रीदा एक दिन बाद वह बांड एक लाख रूपये का खूल गया अब मुझे मालूम हुआ कि यह इनआ़म तो सूद से भी बद्तर है, तो मुझे बहुत दुख हुआ। मैं इस पैसे को अब कहां ख़र्च करूँ?

उत्तर: इनआ़मी बांडज के नाम से जो इनआ़म दिया जाता है ह़क़ीक़त में यह खुला हुआ जुआ है। इन्आ़मी बांडज के इनआ़म में मिलने वाली रक़म ह़राम है। इस रक़म को आ़म ग़रीबों को बिना नियत सवाब दे दें। लेकिन मुत्तक़ी परहेज़गार लोगों को न दें। और तौबा करें कि आइन्दा ऐसा न करेंगे।

प्रश्न: हमारी एक दूकान है हमारे पास एक गाहक जो किसी का नौकर है, आता है और पचास रूपये के माल का बिल ६० रू० का बनवाना चाहता है हम ऐसा नहीं करते, तो गाहक चला जाता है दूसरी दुकान से बिल बढ़वा कर माल ले लेता है तो क्या हम भी ऐसा कर सकते हैं?

उत्तर: यह तो झूठ है और धोखे में तआ़वुन है। यह १०रू० नौकर खाएगा। यह जाइज़ नहीं है।

एक ग़लती की इस्लाह़

पिछले अंक में एक प्रश्न के उत्तर में बताया गया था कि किसी नमाजी को छींक आ जाए और वह अल्ह़म्दुलिल्लाह कह दे तो उसकी नमाज़ न होगी। सह़ीह़ यह है कि उस की नमाज़ हो जाएगी लेकिन नमाज़ में छींक आने पर अल्ह़म्दुलिल्लाह कहना अच्छा नहीं है। अल्बत्ता जो नमाज़ी अल्ह़म्दुलिल्लाह के जवाब में यरह़मुकल्लाह कहेगा उसकी नमाज़ न होगी।

अली मियां की हाज़िरी रौज़-ए-नबवी पर

अला साहिबिहस्सलातु वस्सलाम

अच्छा है दिल के साथ रहे पासबाने अक़्ल।
लेकिन कभी–कभी इसे तन्हा भी छोड़ दे।।

काफ़ले को पहले मदीना तय्यिबा जाना है, दो तीन दिन हुकूमत के मुतालिबात अदा करने में और मोटर के इन्तिज़ार में गुज़रे, लीजिये इन्तिज़ार की घड़ियां तमाम हुयीं, मोटर, आगई, मोटर पर सवार हुये सामान लदा, अच्छा है कि एक अरबी जानने वाला समझदार ड्राइवर के साथ बैठ जाये ताकि नमाज़ पढ़ने और ज़रूरियात के लिये रोकने में आसानी हो, बेहतर है कि ड्राइवर के साथ कुछ सुलूक कर दिया जाए रास्ते में बड़ी राहत मिलेगी, मोटर रवाना हुई, रास्ते में दुरूद शरीफ़ से बेहतर क्या वज़ीफ़ा और मशग़ला है। नमाज़ों के औक़ात में मोटर रोकी गई, अज़ान व जमाअत के साथ नमाज़ हुई, मन्ज़िलें आईं और गुज़र गईं।

नज़र उठाकर देखिये यह दोनों पहाड़ों की क़तारें हैं, क्या अजब है कि नाक़ए नबवी (स०) इसी रास्ते से गुज़री हो, यह फ़ज़ा की दिलकशी यह हवा की दिल आवेज़ी उसी वजह से है।

लिजिये मुसैजिद आ गई अब बीरे अली (ज़ुलहुलैफ़ा) की बारी है।

दुरूद शरीफ़ ज़बान पर जारी है, दिल वुफूरे शौक़ से उमन्ड रहा है, अरब ड्राइवर हैरान है कि यह अजमी क्या पढ़ता है। और क्यों रोता है, कभी अरबी में गुनगुनाता है कभी दूसरी ज़बानों में शेर पढ़ता है। भीनी–भीनी हवा है और हलकी हलकी चाँदनी, जिस क़द्र तैबा (मदीना शरीफ़) क़रीब होता जा रहा है हवा की खुनकी, पानी की शीरीनी और ठण्डक में इज़ाफ़ा है, लेकिन दिल की गर्मी बढ़ती जा रही है, सुनिये कोई कह रहा है–

बादे सबा जो आज बहुत मुश्कबार है
शायद हवा के–रूख़ पे खुली जुल्फ़े यार है
वह एक बार इधर से गये मगर अब तक
हवाए रहमते परवरदिगार आती है

लीजिये ज़ुलहुलैफ़ा आ गया, रात का बक़िया हिस्सा यहां गुज़ारना है, गुस्ल किया, खुशबू लगाई, कुछ देर दम ले लीजिये और कमर सीधी कर लीजिये, सुबह हुई नमाज़ पढ़ी, मोटर रवाना हुई, क्या जहाँ सर के बल आना चाहिये वहां मोटर पर सवार होकर जायेंगे? ड्राइवर के साथ बैठना काम आया वादि–ए–इश्क़ में "बीरे उर्वा" के पास उतार देगा, सामान व औरतें और कमज़ोर व बूढ़े सवार रहेंगे, बात करते–करते बीरे उर्वा आ गये, बिस्मिल्लाह! उतरिये वह देखिये उहद पहाड़ नज़र आ रहा है,

वह स्वादे मदीने के दरख़्त नज़र आए, क्या यह वही दरख़्त हैं जिनके मुतअल्लिक़ शहीदी मरहूम ने कहा था।

तमन्ना है दरख़्तों पे तेरे रौज़े के जा बैठे
क़फ़स जिस वक़्त टूटे तायरे रूहे मूक़य्यद का

वह गुंबदे ख़ज़रा नज़र आया, दिल को संभालिये और क़दम उठाइये, यह लीजिये मदीने में दाख़िल हुए, मस्जिदे नबवी(स०) की दीवार के नीचे नीचे बाबे मजीदी से गुज़रते हुए बाबे जिबरील पर जाकर रूके, हाज़िरी के शुक्राने मे कुछ सदक़ा किया और अन्दर दाख़िल हुए, पहले मेहराबे नबवी (स०) में जाकर दोगाना (२ रकअत नमाज़) अदा किया, गुनहगार आंखो को जिगर के पानी से गुस्ल दिया, वुज़ू कराया, फिर बारगाहे नबवी (स०) पर हाज़िर हुए।

आप पर सलात व सलाम ऐ अल्लाह के रसूल, आप पर सलात व सलाम ऐ अल्लाह के नबी, आप पर सलात व सलाम ऐ अल्लाह के हबीब आप पर सलात व सलाम ऐ साहबे (खुलक़े) अज़ीम, आप पर सलात व सलाम ऐ क़ियामत के दिन लिवाइल-हम्द बुलन्द करने वाले, आप पर सलात व सलाम ऐ साहबे मक़ामे महमूद, आप पर सलात व सलाम ऐ अल्लाह के हुक्म से लोगों को तारीकियों से रोशनी में निकाल कर लाने वाले, आप पर सलात व सलाम ऐ लोगों को बन्दों की बन्दगी से निकाल कर अल्लाह की बन्दगी में दाख़िल करने वाले, आप पर सलात व सलाम ऐ लोगों को मज़ाहिब की नाइन्साफ़ी से निकाल कर इस्लाम के अदल व इन्साफ़ में दाख़िल करने वाले और दुन्या की तंगी से निकाल कर दुन्या और आख़िरत की वुसअत में पहुंचानें वाले आप पर सलात व सलाम ऐ इन्सानियत के सबसे बड़े मुहसिन ऐ

इन्सानों पर सबसे बढ़कर शफ़ीक़ ऐ वह जिस का अल्लाह की मख़लूक़ पर अल्लाह के बाद सबसे बड़ा ऐहसान है, मैं गवाही देता हूँ कि अल्लाह के सिवा कोई इबादत के लायक़ नहीं और यह कि आप अल्लाह के बन्दे और उसके पैग़म्बर हैं, आप ने अल्लाह का पैग़ाम पूरी तरह पहूंचा दिया, अमानत का हक़ अदा कर दिया और उम्मत की ख़ैर ख़्वाही में कसर नहीं रखी, अल्लाह के रास्ते में पूरी पूरी कोशिश की, और वफ़ात तक अल्लाह की इबादत में मशगूल रहे, अल्लाह आप को इस उम्मत और अपनी मख़लूक़ की तरफ़ से वह बेहतरीन जज़ा दे जो किसी नबी और रसूल को उसकी उम्मत और अल्लाह की मख़लूक़ की तरफ़ से मिली हो और ऐ अल्लाह तू मुहम्मद (स०) पर और उनकी आल पर अपनी रहमतें नाज़िल फ़रमा जैसी तूने इब्राहीम (अलै०) और आले इब्राहीम (अलै०) पर नाज़िल फरमायीं तू हमीद व मजीद है, ऐ अल्लाह मुहम्मद पर बरकतें नाज़िल फ़रमा जैसी तूने इब्राहीम (अलै०) पर नाज़िल फ़रमायीं, बेशक तू हमीद व मजीद है।

इसके बाद दोनों रफ़ीक़ों और वज़ीरों को महब्बत का ख़िराज और अक़ीदत का नज़राना सलाम व दुआ की शक्ल में अदा किया, और क़यामगाह पर आये।

अब आप हैं और मस्जिदे नबवी(स०) दिल का कोई अरमान बाक़ी न रह जाय, दुरूद शरीफ़ पढ़ने का इससे बेहतर ज़माना और इससे बेहतरीन मक़ाम कौन हो सकता है, अब भी शुहूद व हूज़ूर न हो तो कब होगा, जन्नत की क्यारी(रौज़तुम्मिन रियाज़िल जन्नह) में नमाज़ें पढ़िये, मगर देखिये किसी को तकलीफ़ न दीजिये, मुज़ाहमत, जगह को अपने लिये महफ़ूज़ करना, मस्जिद में दौड़ना सब जगह बुरा है, मगर जहां से यह अहकाम निकले और दुन्या में फैले वहां उनकी खिलाफ़ वर्जी बहुत ही मकरूह है, यहां आवाज़ बुलन्द न हो यहां दुनिया की बातें न हों, मस्जिद को गुज़रगाह न बनाया जाये, बेवुज़ू दाख़िल होने से जहां तक हो सके बचा जाये ख़रीद व फरोख़्त से बचा जाए दिन में जितनी मर्तबा जी चाहे हाज़िरी दीजिये और सलाम अर्ज़ कीजिये, आपके नसीब खुल गये अब क्यों कमी कीजिये, मगर हर बार अज़मत व अदब और इश्तियाक़ व महब्बत के साथ, दिल की एक हालत नहीं रहती, वह भी सोता और जागता है जागे तो समझिये कि नसीब जागे।

कभी उसका जी चाहेगा कि गुलामों के गिरोह के साथ हाज़िर हो, उश्शाक़ (आशिकों) की आंखों से जिन्होंने महजूरी के दिन काटे और फिराक़ की रातें बसर कीं जब आंसुओं का मेंह बरसेगा तो शायद कोई छींटा इसको भी तर कर जाये, रहमत की हवा जब चलेगी तो शायद कोई झोंका इसको भी लग जाये कभी दबे पाँव लोगों की नज़र बचा कर तन्हाई में हाज़िर होने का जी चाहेगा। इस बाब में दिल की फ़रमाइशें सब पूरी कीजिए कोई हसरत बाक़ी न रहे, कभी सिर्फ़ आंसुओं से ज़बान का काम लीजिये, कभी ज़ौक़ व शौक़ की ज़बान में अर्ज़ कीजिये, दुरूद शरीफ़ तवील(लम्बे) भी हैं और मुख़्तसर भी, जिसमें जी लगे और ज़ौक पैदा हो उसको इख़्तियार कीजिये, मगर इतना ख़्याल रखिये कि तौहीद के हुदूद से कदम बाहर न जाये, आप उसके सामने खड़े हैं जिसको "जो अल्लाह ने चाहा और आप ने" और "जो उन दोनों की नाफ़रमानी करता है" एक साथ कहने को सुनना गवारा न हो सका। सजदे का क्या ज़िक्र खुदा की सिफ़ात में उसकी कुदरत व तसर्रूफ़ में उसकी मशिय्यत व इख़्तियार में शिर्कत का शाएबा भी न आने पाये चाहे जामी का कलाम पढ़िये चाहे हाली की दुआ सुनाइये। बस इतना ख़याल रखिये कि आप तौहीद के सबसे बड़े और आख़िरी पैग़म्बर के सामने खड़े हैं जिसको शिर्क का वाहिमा भी गवारा न था।

अब हम मदीना मुनव्वरा में मुक़ीम हैं जहां की ख़ाकरोबी को औलिया व सलातीन सआदत समझते थे, वहां आप हर वक़्त हाज़िर हैं, एक एक घड़ी को ग़नीमत समझिये, पांचो नमाजें मस्जिदे नबवी (स०) में जमाअ़त के साथ पढ़िये अगर कहीं बाहर जाइये तो भी ऐसे वक़्त कि कोई जमाअ़त फ़ौत न हो, तहज्जुद में हाज़िर होइये यह वक़्त सुकून का होता है, लोग रौज़ए जन्नत की तरफ़ दौड़ते हैं वहां तो बिग़ैर दौड़े और बिग़ैर कशमकश के जगह पानी मुश्किल है, आप पहले मवाजेह में आइये, इस वक़्त शायद आपको पहरेदार (असकरी) ही मिले, इत्मीनान से सलाम अर्ज़ कीजिये, फिर जहां जगह मिले नवाफ़िल पढ़िये और सुबह की नमाज़ पढ़कर इशराक़ से फ़ारिग़ होकर बाहर आइये।

आइये आज बकीअ़ चलें जो अंबिया(अलै०) के मक़ाबिर के बाद सिद्क़ व इख़लास का सबसे बड़ा मदफ़न है।

दफ़न होगा न कहीं ऐसा ख़ज़ाना हरगिज़

अगर आप की सीरते नबवी (स०), सहाबए किराम (रज़ि०) के हालात व मरातिब पर नज़र है तो आप को वहां सही एहसास होगा, आप हर क़दम पर रूकेंगे और एक एक ख़ाक के ढेर को अपने आंसुओं से सेराब करना चाहेंगे। यहां चप्पे चप्पे पर ईमान व जिहाद और इश्क़ व महब्बत की तारीख़ लिखी है। एक एक ढेर में इस्लाम का ख़ज़ानां दफ़न है। अब बकीअ में दाख़िल हो गये, मुज़व्विर आपको सीधा अहले बैते अतहार के मक़ाबिर पर ले जाएगा यहां रसूलुल्लाह (स०) के चचा सय्यदना अ़ब्बास बिन अब्दुल मुत्तलिब, सैय्यदतुनिसा–ए–अहलिल जन्नत फ़ातिमा बिन्ते रसूल सय्यदना हसन बिन अ़ली, सय्यदना अ़ली बिन हुसैन ज़ैनुलआ़बिदीन, सय्यदना मुहम्मद बाक़र, सय्यदना जाफ़र सादिक़ आराम फ़रमा हैं। वहां से चलिये तो हज़रत उम्मुल मोमिनीन आयशा सिददीक़ा (रजि०) और हज़रत ख़दीजा व मैमूना (रजि०) के अ़लावा तमाम अज़वाजे मुतह्हरात फिर बनाते ताहिरात के मक़ाबिर मिलेंगे। फिर दारे अक़ील बिन अबी तालिब जहां अबू सुफ़यान बिन ह़ारिस बिन अब्दुल मुत्तलिब व अ़ब्दुल्लाह बिन जाफ़र वग़ैरह मदफ़ून हैं फिर आप को वह टुकड़ा मिलेगा, जिसमें इमाम दारूल हिज्रा सय्यदना मालिक बिन अनस और उनके उस्ताद नाफ़े आराम फ़र्मा हैं वहां से बढ़िये तो एक बुक़्क़अे अनवार मिलेगा यह एक मुहाजिर का पहला मदफ़न है, यहां वह उसमान बिन मज़ऊन दफ़न हैं, जिनकी पेशानी को हुजूर (स०) ने बोसा दिया था, यहीं आप (स०) के फ़रज़न्द (बेटे) सय्यदना इब्राहीम बिन मुहम्मद की ख़्वाब गाह है, यहीं फ़कीहे सहाबा सय्यदना अ़बदुल्लाह बिन मसऊद फ़ातिहे इराक़ सअ़द बिन वक़्क़ास, सय्यदना सअ़द बिन मआ़ज जिन की वफ़ात पर अ़र्शे इलाही जुंबिश में आ गया था, सय्यदना अ़ब्दुर्रहमान बिन औफ़ और दूसरे बड़े अकाबिर सहाबा मदफ़ून हैं, वहां से आगे चलिये तो उत्तर–पश्चिमी दीवार के क़रीब वह सत्तर शुहदाए सहाबा एहले मदीना जिन को वाक़िअ–ए–हर्रा में यज़ीद के दौर हुकूमत में सन् ६३ ई० में शहीद किया गया था मदफ़ून हैं, इसके बाद बकीअ के बिल्कुल कोने पर मशरिक़ी जानिब मज़लूम शहीदुद्दार सय्यदना उसमान बिन अ़फ़्फ़ान (रज़ि०) आराम फ़रमा रहे हैं, यहां पर कुछ देर ठहरिये और महब्बत व अ़ज़मत के जो आंसू सय्यदना अबूबकर (रज़ि०) व सय्यदना उमर (रज़ि०) के मरक़द पर बहने से बच रहे थे उनको उनके तीसरे साथी की ख़ाक पर बहाइये।

आसमाँ उसकी लहद पर शबनम अफ़शानी करे
सबज़ए नौरुस्ता इस घर की निगहबानी करे

इसके आगे सय्यदना अबू सईद ख़ुदरी, सय्यदना अ़ली कर्रमल्लाहु वजहहु की वालिदा फ़ातिमा बिनते असद के मक़ाबिर हैं। सबको सलाम अ़र्ज़ कीजिए और फ़ातेहा पढ़िये। फिर एक लम्हा ठहर कर पूरे बक़ीअ पर इबरत व तफ़क्कुर की नजर डालिये अल्लाहु अकबर कितने सच्चे थे यह अल्लाह के बन्दे, जो कुछ कहते थे कर दिखाया। मक्का में जिसके हाथ में हाथ दिया था मदीना में उसी के कदमों में पड़े हैं। जो तुझ बिन न जीने को कहते थे हम सो इस अहद को हम वफ़ा कर चले

गुंबदे ख़ज़रा पर एक नज़र डालिये फिर मदीने के इस शहरे ख़ामोश को देखिए, सिदक़ व इख़्लासस, इस्तक़ामत व वफ़ा की इससे ज़ियादा रौशन मिसाल क्या मिलेगी आइये बक़ीअ से इस्लाम की ख़िदमत का अ़हद करें और अल्लाह से दुआ करें कि वह हमें इस्लाम ही के रास्ते पर ज़िन्दा रखे और इसी के साथ वफ़ादारी में मौत आये, जन्नतुलबकीअ़ का यही पैग़ाम और यहां का सही सबक़ है।

कुबा में ह़ाज़िरी दीजिये, यह वह बुक़्क़अे नूर है जो हुजूरे अकरम (सल्ल०) के कुदूम से मदीने से भी पहले मुशर्रफ़ हुआ, वहां उस मस्जिद की बुन्याद रखी गई जिस को "मस्जिद जिसकी बुन्याद रोज़े अव्वल से तक़्वे पर रखी गयी" का ख़िताब मिला महब्बत व अ़ज़मत के साथ हाज़िर होइये इस ज़मीन पर नमाज़ पढ़िये, पेशानी इस ख़ाक पर रखिये, जो रसूलुल्लाह (सल्ल०) और सहाबा के क़दमों से पामाल हुई, उस फ़ज़ा में सांस लीजिए जिस में वह अन्फ़ासे कुदसी अब भी बसे हुए हैं।

आज जबले उहद और उसके मशहद में (जिसको यहां उर्फ़े आम में सय्यदना ह़मज़ा (रज़ि०) कहते हैं, ह़ाज़िरी की बारी है, दो मील की मसाफत क्या? बात करते–करते पहुंच गये, यह वह जमीन है जो इस्लाम के सबसे क़ीमती खून से सेराब हुई। सबसे सच्चे, सबसे अच्छे, सबसे ऊंचे इश्क व महब्बत और वफा के वाकेआ़त जो पूरी दुन्या की पूरी तारीख़ में नहीं मिलते

इसी सरज़मीन पर पेश आये, सय्यदुश्शुहदा हमज़ा (रज़ि०) के रसूलुल्लाह (सल्ल०) की महब्बत और इस्लाम की वफ़ादारी में यहीं अज़ा काटे गये और जिगर खाया गया, उमारह बिन ज़ियाद ने कदमों पर आंखें मल–मल कर यहीं जान दी, हज़रत अनस को जन्नत की खुश्बू इसी पहाड़ के दर्रे से आई, और अस्सी से ऊपर ज़ख़्म खाकर यहीं से रूखसत हुए, दन्दाने मुबारक यहीं शहीद हुए, सर पर ज़ख़्म यहीं आये, उश्शाक़ ने अपने हाथों और पीठ को महबूब के लिए सिपर यहीं बनाया, मक्के का नाज़ परवरदा मुसअब बिन उमैर (रज़ि०) यहीं एक कम्बल में शहीद और एक कम्बल में दफ़न हुए।

यहां इस्लाम के शेर सोते हैं। यह पूरी ज़मीन नुबुव्वत के परवानों की ख़ाक है। रसूलुल्लाह (सल्ल०) के उश्शाक़ और इस्लाम के जांनिसारों की बस्ती है।

यह बुलबुलों का सबा मश्हदे मुकद्दस है।

कदम संभाल के रखियो यह तेरा बाग़ नहीं

यहां की फ़ज़ा और यहां के पहाड़ से अब भी (इसी पर जान दे दो) जिस पर रसूलुल्लाह (सल्ल०) दुन्या से गये की सदाए बाज़गश्त आती है।

आइये इस्लाम पर जीने और जान देने का अहद फिर ताज़ा करें। मदीना तय्यिबा के ज़र्रे–ज़र्रे को महब्बत और अक़ीदत की निगाह से देखिये तन्क़ीद की निगाह और एतराज़ की ज़बान के लिए दुन्या पड़ी हुयी है, ज़िन्दगी के चन्द दिन कांटों से अलग फूलों में गुज़र जायें तो क्या हरज है। फिर भी अगर आप की निगाह कहीं रूकती है और अटकती है तो ग़ौर से काम लीजिए वह हमारी कोताही के सिवा और क्या हैं, हम ने दीन और दुन्या की ख़ैरात यहीं से पाई, आदमियत यहीं से सीखी, यहां की दस्तगीरी न होती तो हम में से कितने मआज़अल्लाह बुतख़ाना, आतिश कदा और कलीसा में होते, लेकिन हमने इसका क्या हक़ अदा किया, यहां के बच्चों की तालीम व तरबियत, यहां के लोगों ने दीन की रूह और मक़सद का एहसास पैदा करने की क्या कोशिश की, फ़ासले का उज़्र सही नहीं, उनके बुजुर्गों ने समुन्दर और सेहरा पार करके और पहाड़ों को तय करके दीन का पैग़ाम हम तक पहुंचाया, हम ने भी अपने फ़र्ज़ का एहसास कभी किया? हम समझते हैं कि दीन के एहसास का बदला हम चन्द सिक्कों से अदा कर देंगे जो हमारे हुज्जाज अपनी कम निगाही से एहसान समझ कर मदीना की गलियों में बांटते फिरते हैं।

हम सदियों ग़ाफ़िल रहे और अब भी हमारे अहले इस्तेताअत ग़ाफ़िल हैं, इस अरसे में जिहालत, बेतरबियती और यूरोप की तहज़ीब व तमददुन और उसकी जाहिलियत जिस का जाल सारी दुन्या में नौजवानों को मुतास्सिर करती रही, बजाय खूबियों और महासिन के तमाम आलमे इस्लाम के हुज्जाज और अपनी–अपनी मकामी कमजोरियां अपने साथ लाते रहे और यहां छोड़ कर जाते रहे, दीनी दावत व तज़कीर जो ईमानी ज़िन्दगी के लिए हवा और पानी की हैसियत रखती है अर्से से मफ़कूद, सही तालीम व तरबियत मअदूम, ऐसा अदब जो ईमान को गिज़ा और दिमाग़ को रौशनी अता करे, नायाब, तज़किय–ए–नफ़्स, तहज़ीबे अख़लाक़ और रूहानियत पैदा करने वाले मरकज़, गैर मौजूद, मुख़तलिफ़ रास्तों से मरीज़ व मदकूक़ अदब, फ़ासिद व ख़ाम अफ़कार व मज़ामीन, अख़बार व रसाइल, अदब व इजतिमा के नाम से घर–घर फैले हुए, जहर मौजूद, तिरयाक मफ़कूद अगर अब भी एहले मदीना में दीन की इतनी अज़मत व महब्बत, रसूलुल्लाह (सल्ल०) से तअल्लुक़ मदीना से उन्स अखलाक़ में लीनत व तवाज़ो फराईज़ की पाबन्दी, शआयरे इस्लामी का रिवाज है तो यह महज़ जवारे रसूल (सल्ल०) की बरकत, उस खाके पाक की तासीर और एहले मदीना की फ़ितरी ख़ूबी की दलील है।

अब भी अगनियाए उम्मत और आलमे इस्लाम के अहले सरवत इस ज़रूरत की तरफ़ मुतवज्जेह नहीं, कि अहले हिजाज़ की सही तालीम व तरबियत और उनमें दावत व तज़कीर का इन्तेज़ाम करें जो उनमें दीनी रूह, मक़सदियत, बुलन्द नज़री और इस्लाम के दाई बनने का जज़्बा और वलवला पैदा कर दे और मेअमारे हरम को तामीरे जहां के लिए दोबारा आमादा करें।

अगर आप मदीना तय्यिबा के मज़ाफ़ात और बददुओं की इन आर्ज़ी नई बस्तियों और आबादियों में चल फिर कर देखेंगे जो खजूरों की फ़सल में अपने पहाड़ी मक़ामात से उतर कर चश्मों और बाग़ात में अपने ख़ेमे डाल कर मुक़ीम हो जाते हैं, तो आप को उनकी दीनी हालत का एहसास होगा, और अगर हमारा ज़मीर अभी मुर्दा नहीं हुआ है तो हम अपनी इस ग़फ़लत

और कोताही पर शर्म महसूस करेंगे जो हम ने अपने मुरशिद ज़ादों के हक़ में सदियों से इख़्तियार कर रखी है। अगर आप का थोड़ा वक़्त नज़मो इन्ज़िबात के साथ मदीने की आबादी और उसके अतराफ़ में दीनी दावत व इस्लाह़ में गुज़र जायेगा तो वह मदीना तय्यबा की फ़ज़ा से इनतेफाअ़ की बड़ी मुअस्सिर सूरत होगी मगर उनकी अ़ज़मत और उनके मर्तबे की रिआयत ज़रूरी है उनको तह़क़ीर की निगाह से हरगिज़ न देखें।

मदीना दावते इस्लामी का मअ़दन है इस दावत को इस मअ़दन से अख़्ज कीजिए और अपने अपने मुल्क के लिए यह सौगात लेकर आइये। ख़जूरें, गुलाब व पुदीना खाके शिफ़ा, महब्बत की निगाह में सब कुछ हैं, मगर इस सरज़मीन का असली तोह़फ़ा और यहां की सब से बड़ी सौग़ात दावत, और इस्लाम के लिए जद्दो जह्द और जान दे देने का अ़ज़्म है। मदीना मस्जिदे नबवी (सल्ल०) के चप्पे–चप्पे बक़ीअ़ शरीफ़ के ज़र्रे–ज़र्रे उह़द की हर–हर कंकरी से यही पैग़ाम मिलता है मदीना आकर कोई यह कैसे भूल सकता है कि इस शहर की बुन्याद ही दावत व जिहाद पर पड़ी थी, यहां वही लोग मक्के से आकर आबाद हुए थे जिनके लिए मक्के में सब कुछ था मगर दावत व जिहाद के मवाकेअ़ न थे, यहां की आबादी दो ही हिस्सों में बंटी हुई थी, एक वह जिसने अपना अ़हद पूरा कर दिया और इस्लाम के रास्ते में जान जाने आफ़रीं के सुपुर्द कर दी, कोई तरग़ीब इसको अपने मकसद से बाज न रख सकी, दूसरा वह जिसने अपनी तरफ़ से पूरी कोशिश की लेकिन अल्लाह को अभी उनसे और काम लेना मनजूर था, उनका जो वक़्त गुज़रता, ह़ालते इन्तेज़ार में गुज़रता, शहादत के इश्तियाक़ में गुज़रता।

यही आ़लमे इस्लाम का ह़ाल होना चाहिए, यहां भी या तो वह होने चाहिएं जो अपना काम पूरा कर चुके या वह जो वक़्त के मुनतज़िर हैं, तीसरी क़िस्म उन लोगों की है जो ज़िन्दगी के ह़रीस और दुन्या पर राज़ी, मौत से ख़ाइफ़ और ख़िदमत से गुरेज़ां हों, मआ़श में सरतापा मुनहमिक और आ़रज़ी मशाग़िल में हम : तन ग़र्क हों, उनकी गुंजाइश न मदीना में थी न आ़लमे इस्लाम में होनी चाहिए।

मदीना तय्यिबा के क़ियाम में दुरूद शरीफ़ तिलावते कुरआन और अज़कार से जो वक़्त बचे अगर ह़दीस और सीरत व शमाईल के मुतालिअ़ में गुज़रे तो बहुत पुरतासीर और बाबरकत होगा, इसी पाक ज़मीन पर यह सब वाकेआ़त पेश आये।

यहां इन वाकेआ़त का मुतालिआ़ और कुतुबे शमाईल में मशगूलियत बहुत कैफ़ आवर और तरक़्क़ी का कारण होगी, उर्दू पढ़ने वाले हज़रात क़ाज़ी सुलैमान साह़ब मनसूर पूरी (रह़०) की रह़मतुलिल आ़लमीन और शैखुल ह़दीस सहारनपुरी की खसाईले नबवी (तर्जुमा शिमाईले तिरमिज़ी) को पढ़ा करें। अ़र्बी जाननेवाले हाफ़िज़ इब्ने कय्यिम (रह़०) की ज़ादुलमआ़द और शमाईले तिरमिज़ी का मुतालिआ़ (अध्ययन) बराबर करें। जिनको आसारे मदीना मुनव्वरा की ज़ियारत व तह़क़ीक़ का ज़ौक़ हो उनके लिए समहूदी (रह़०) की वफ़ाउलवफ़ा बिअखबारे दारिलमुस्तफ़ा और आसारुल मदीनतिलमुनव्वरा का मुतालेआ़ मुफ़ीद होगा।

लीजिए क़ियाम की मुद्दत ख़त्म होने को आई कहते हैं कि कल क़ाफ़ले का कूच है अब रह–रह कर इस क़ियाम के सिलसिले की कोताहियां और यहां के हुकूक़ की अदाई में अपनी तक़सीर दिल में चुटकियां लेती हैं। अब इस्तिग़फ़ार व नदामत के सिवा क्या चारा है।

आज की रात मदीने की आख़िरी रात है ज़रा सवेरे मस्जिद में आ जाइये।

लेकिन दिल को एक तरह का सुकून भी ह़ासिल है, आख़िर जा कहां रहे हैं ? अल्लाह के रसूल के शहर से अल्लाह के शहर की तरफ़, अल्लाह के उस घर में जिस को मुह़म्मद अ़लैहिसलातो वस्सलाम और उनके साथियों ने अपने पाक हाथों से बनाया, अल्लाह के उस घर की तरफ़ जिसको उनके जद्दे अमजद इब्राहीम अ़लैहिस्सलातु वस्सलाम और उनके बेटे ने अपने पाक हाथों से बनाया, और जा क्यों रहे हैं? अल्लाह के हुक्म से और अल्लाह के रसूल की मर्ज़ी और हिदायत से यह दूरी कब हुई।

आख़िरी सलाम अ़र्ज़ किया मस्जिदे नबवी (सल्ल०) पर ह़सरत की निगाह डाली और बाहर निकले, गुस्ल करके एह़राम की तैयारी कर ली थी, जुलहुलैफ़ा में जाने मौक़ा मिले न मिले, मोटर पर बैठे, महबूब शहर पर महब्बत की निगाह डालते चले, उह़द को डबडबाई हुई आंखों से देखा अब मदीना से बाहर हो गये। जो लम्ह़ा गुज़रता है मदीना दूर और मक्का क़रीब होता जाता है। अलह़म्दु लिल्लाह हम ह़रमैन् के दर्मियान ही हैं।

●●●

शयातीन बाज़ार में

अबू मर्गूब

सहीह मुस्लिम में है कि हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम ने फ़रमाया कि मुम्किन हो तो तुम बाज़ार में पहले दाख़िल होने वाले मत बनो और न आख़िर में बाज़ार से निकलने वाले बनो। बाज़ार तो शैतान के मअ़रके (युद्धक्षेत्र) की जगह हैं और वहां वह अपना झन्डा गाड़ता है।

चूकिं बाज़ार की अक्सरीयत दुन्या कमाने में मशग़ूल होती है इसलिये शैतान को वहां ज़ियादा मौक़अ़ मिलता है कि इन्सान को दुन्या में ऐसा लगा दे कि अल्लाह के ज़िक्र से ग़ाफ़िल हो जाए, बस वह बाज़ार में अपनी ज़ियादा कामयाबी के मवाक़िअ़ देखकर बाज़ार पर ख़ूब तवज्जुह देता है। इसीलिये बाज़ार में पहले दाख़िल होने और अख़िर में निकलने से रोका गया है ताकि शैतान के फ़रेब से बचा जा सके। इस फरेब में वह लोग भी आएंगे जिन की बाज़ार में दुकानें होती हैं, बस उनको चाहिये कि वह शयातीन से बचने की तदबीरें करें। चुंकि वह शरअ़ी ज़रूरत से बाज़ार में पूरा वक़्त गुज़ारते हैं इसलिये वह इस रोक से अलग समझे जाएंगे लेकिन जिन तदबीरों से शैतानों के फ़रेब से बचा जा सकता है वह उन पर ध्यान दें। क़ुर्आन मजीद से साबित है कि शयातीन और उनके फ़रेब से वह लोग महफ़ूज़ (सुरक्षित) रहते हैं जो अल्लाह पर ईमान रखते हुए अल्लाह पर भरोसा रखते हैं (१६:९९) दूसरी जगह फ़रमाया कि कुछ लोग हैं जिन को न तो उनका ख़रीदना अल्लाह की याद से नमाज़ क़ाइम करने से और ज़कात अदा करने से ग़ाफ़िल कर पाता है न बेचना, वह तो उस दिन से डरते हैं जिस दिन बहुत से दिल और बहुत सी आंखे उलट पलट हो जाएंगी (२४:३७) यानी जो लोग अल्लाह के अहकाम का लिहाज़ रखते हैं। ख़रीद व फ़रोख़्त में अल्लाह को याद रखते है किसी को धोख नहीं देते, झूठ बोल कर नफ़ा नहीं कमाते, नमाज़ का वक़्त आ जाने पर नमाज़ अदा करते हैं माल की ज़कात अदा करते हैं और अपनी ज़िन्दगी के तमाम मुआमलात में हिसाब के दिन से डरते रहते हैं वह बाज़ार में भी शयातीन से महफ़ूज़ रहते हैं।

यहां यह बात समझ में आती है कि जब शैतान जिन्न हर जगह पहुंचता है तो मुस्लिम जिन्न भी हर जगह पहुंच सकता है और अ़क़्ल यह कहती है कि फिर मुस्लिम जिन्न को इख़्तियार होगा कि वह हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक पर हाज़िरी दे सके। बाज़ लोगों ने बयान किया कि जिन्न ने उन को हज्ज के मैदान में पहुंचा दिया (वल्लाहु अअ़लम) लेकिन किसी से यह कहते नहीं सुना कि जिन्न ने उस को क़ब्रे मुबारक पर पहुंचा दिया हो।

शयातीन जिन्न हर जगह पाये जाते हैं और मुस्लिम जिन कहीं कहीं।

जिन्नो के बारे में मेरा अपना ख़याल है कि जिन्न ऐसी मख़्लूक है जिन को हम लोगों जैसे मकानों की ज़रूरत नहीं। लतीफ़ तरीन(अति सूक्षम) जिस्म होने के सबब कसीर तअ़दाद (बड़ी संख्या) थोड़ी जगह में रह सकती है। शैतान जिन्न अपने मिशन के तहत हम इन्सानों से तअ़ल्लुक़ रखते हैं, किसी पर मुसल्लत होते हैं, किसी की ताक में रहते हैं और किसी को देखकर हाथ मलते है, लेकिन मुस्लिम जिन्नों का ऐसा कोई मिशन नहीं होता इसलिये वह किसी मामून (सुरक्षित) जगह पर रह कर शरीअ़त के मुताबिक़ ज़िन्दगी गुजारते हैं। उन में से जो फ़ासिक़ व फाजिर (पापी) हैं वह शयातीन के साथ हो जाते होंगे ऐसे ही वह जिन्न जो शैतान के ख़ानदान से नहीं हैं न ईमान लाए हैं वह भी शैतानों के साथ रहते होंगे खुलासा यह कि शैतान जिन्न हर जगह पाए जातें हैं और मुस्लिम जिन्न कहीं कहीं। अगली भेंट में इन्शअल्लाह जिन्नों की औलाद(सन्तान) के बारे में बात होगी।

●●●

0522-2214889
BOMBAY GARMENTS & TAILORS
85, Hazaratganj, Lucknow-226001
New 2227802
BOMBAY TAILORS
Specialist in Fusion Stiching For Modern People
New Bazaza Aminabad, Lucknow

उम्मुल मोमिनीन

हज़रत उम्मे सलमा

सादिक़ा तस्लीम फ़ारूक़ी

•शव्वाल चार हि० की अखीर तारीख में निकाह हुआ, हजरत उम्मे सलमा रजि० को अबू सलमा रजि० की मौत से जो बहुत दुःख हुआ था, अल्लाह तआला ने उसको खुशियों में बदल दिया, सुनने इब्ने माजा में है: जब अबू सल्मा (रजि०) ने वफात पाई तो मैं ने वह हदीस याद की जिसको वह मुझ से बयान किया करते थे और मैंने दुआ शुरू की तो जब मैं यह कहना चाहती कि खुदावन्द ! मुझे अबू सल्मा (रजि०) से बेहतर जानशनि (उत्तराधिकारी) दे तो दिल कहता कि अबू सल्मा (रजि०) से बेहतर कौन मिल सकता है? परन्तु मैंने दुआ को पढ़ना शुरू किया तो अबू सल्मा (रजि०) के बदले में अल्लाह ने मुझे हुजूर (सल्ल०) को अता फरमा दिया।

हज़रत मुहम्मद (सल्ल०) ने उनको दो चक्कियाँ, घड़ा और चमड़े का तकिया जिसमें खुरमे की छाल भरी थी अता की।, यही सामान और पत्नियों को भी अता हुआ।

बहुत शर्म दार थी, शुरू में जब हुजूर (सल्ल०) घर पर तशरीफ लाते तो हजरत उम्मे सल्मा (रजि०) शर्म की वजह से लड़की (ज़ैनब) को गोद में बिठा लेतीं, आप यह देख कर वापस चले जाते, हजरत अम्मार (रजि०) बिन यासर को जो हजरत उम्मे सल्मा (रजि०) के रजाई भाई थे, मालूम हुआ तो बहुत नाराज हुए, और लड़की को छीन ले गये।

परन्तु बाद में यह बात कम होती गयी और जिस तरह दूसरी पत्नियां रहती थी वह भी रहने लगीं, निकाह से पहले हुजूर सल्ल० ने हजरत आइशा से उनका ज़िक्र तो हजरत आइशा रजि० को बड़ा रश्क हुआ, इब्ने सअ़द में उनसे जो रिवायत मन्कूल है उसमें यह वाक्या भी है –

अर्थात मुझको बहुत दुःख हुआ।

मुहम्मद सल्ल० को उनसे बहुत मुहब्बत थी, यही वजह है कि एक मौक़ा पर जब तमाम अज़वाज मुतह्हरात (पत्नियों) को सिवा आइशा रजि० के हुजूर सल्ल० की खिदमत में कुछ कहना था, तो उन्होनें हजरत उम्मे सलमा रजि० को अपना सन्देशवाहक बना कर हुजूर सल्ल० की ख़िदमत भेजा सही बुखारी में है कि अजवाज मुतह्हरात के दो गिरोह थे, एक में हज़रत आइशा रजि० ,हफ़सा रजि० सफ़या रजि० सौदा रजि० शामिल थी, दूसरे में हजरत उम्मे सल्मा रजि० और बाकी पत्नियां थी, चूंकि हुजूर सल्ल० हजरत आइशा रजि० को ज़्यादा महबूब रखते थे, इसलिए लोग उनही की बारी में तोहफा भेजते थे, हजरत उम्मे सलमा रजि० के गिरोह ने उनसे कहा, हजरत आइशा रजि० की तरह हम भी सब की भलाई के इच्छुक हैं इस बिना पर रसूल सल्ल० जिसके घर में भी हों लोगों को तोहफा भेजना चाहिए, हजरत उम्मे सलमा रजि० ने आप सल्ल० से शिकायत की तो आप सल्ल० ने दो बार बेपरवाई की तीसरी बार में कहा– "उम्मे सलमा ! आइशा रजि० के मामले में मुझे दुःख न पहुँचाओ क्योकि उनके सिवा तुम में कोई पत्नी ऐसी नहीं है जिसके लिहाफ़ मे मेरे पास वहय आई हो,

सही बुखारी भाग १ पेज ५३२

हजरत उम्मे सल्मा रजि० ने कहा " मैं आप को दुःख पहुचाने से पनाह माँगती हुँ।" हजरत उम्मे सलमा रजि० के घर में हुजूर सल्ल० रात में रूकते तो उनका बिछौना (हुजूर सल्ल० की जानमाज के सामने बिछता था हुजूर सल्ल०) नमाज पढ़ा करते और यह सामने होती थी।

हुजूर सल्ल० के आराम का बहुत ख्याल रखतीं थी। हजरत सफ़ीना रजि० जो मुहम्मद सल्ल० के मशहूर खादिम हैं असल में वह हजरत उम्मे सलमा रज़ि० के नौकर थे, उनको आजाद किया तो यह शर्त की कि जब तक हुजूर सल्ल० ज़िन्दा रहें तुम पर उनकी खिदमत करना जरूरी होगा।

हजरत उम्मे सल्मा रजि० के मशहूर किस्से जिन्दगी के यह हैं, गजव–ए–खन्दक में वह शरीक नहीं थीं, मगर इसकदर हुजूर सल्ल० के क़रीब थी कि उनकी बातें अच्छी तरह सुनती थीं, सीन–ए–मुबारक गुबार से सना हुआ था और आप सल्ल० लोगों को ईंटे उठा उठा कर देते और अशआ़र पढ़ रहे थे कि अचानक अम्मार बिन यासिर रजि० पर नज़र पड़ी, फरमाया, (अफ़सोस) इब्ने सुमय्या ! तुझ को एक बाग़ी गिरोह क़त्ल करेगा।

घेराव किये हुए बनू क़रैज़: (सन ५ हि०) में यहूद से बात–चीत करने के

लिए हुजूर सल्ल० ने हजरत अबू लबाबा रजि० को भेजा था। इसी मश्वरः में अबू लबाबा रजि० ने हाथ के इशारे से बतलाया कि तुम लोग क़त्ल किये जाओगे, परन्तु बाद में भेद को खोलना समझ कर इस क़दर शर्मिन्दा हुए कि मस्जिद के खम्भा से अपने आप को बांध लिया, कुछ दिन तक यही हालत रही, फिर तौबः कुबूल हुई। हुजूर सल्ल० हजरत उम्मे सलमा रजि० के घर में तशरीफ फरमा थे कि सुबह को मुस्कुराते हुए उठे तो उम्मे सलमा बोली, "अल्लाह आप को हमेशा हंसाए, उस समय हंसने का क्या मतलब है? फ़रमाया, अबू लबाबा रजि० की तौबः कुबूल हो गयी।" कहा, "क्या मैं उनको यह खुशखबरी सुना दूँ" फ़रमाया, हाँ अगर चाहो।" हजरत उम्मे सलमा रजि० अपने कमरा के दरवाजे पर खड़ी हुई और पुकार कर कहा, अबू लबाबा ! मुबारक हो, तुम्हारी तौबः कुबूल हो गयी, इस आवाज़ का सुनना था कि तमाम मदीना उमंड आया इसी में आयते हिजाब (पर्दा) नाजिल हुई, इससे पहले अजवाज मुतह्हरात बाज़ दूर के रिश्तेदारों व दोस्तों के सामने आया करती थीं, अब ख़ास क़रीबियों के सिवा सबसे पर्दा करने का हुक्म हुआ, हजरत इब्ने उम्मे मकतूम क़बील–ए–कुरैश के एक इज़्ज़तदार सहाबी और बारगाहे नबवी के मुअिज़्ज़न थे और चूंकि नाबीना (अन्धे) थे इसलिए अज़वाज मतह्हरात रजि० के कमरों में आया करते थे, एक दिन आए तो हुजूर सल्ल० ने हजरत उम्मे सलमा रजि० और हजरत मैमूना रजि० से फरमाया, इनसे पर्दा करो, बोलीं, "वह तो नाबीना हैं" फ़रमाया, तुम तो नाबीना नहीं हो, तुम तो उन्हें देखती हो।"

सुलेह हुदैबिया में हुजूर सल्ल० के साथ थीं, सुलह के बाद हुजूर सल्ल० ने हुक्म दिया कि लोग हुदीबिया में कुर्बानी करें परन्तु लोग इस क़दर दुःखी थे कि एक व्यक्ति भी न उठा यहां तक कि जैसा कि सही बुख़ारी में है, तीन बार कहने पर भी एक व्यक्ति तैयार न हुआ (चूंकि सन्धि की तमाम शर्तें मुसलमानों के ख़ेलाफ थी, इसलिए तमाम लोग दुःखी तथा गुस्सा से बेचैन थे) हुजूर सल्ल० घर में तशरीफ़ ले गये और हज़रत उम्मे सल्मा रजि० से शिकायत की, उन्होंने कहा, आप किसी से कुछ न कहें, बल्कि बाहर निकल कर खुद कुर्बानी करें, और एहराम उतारने के लिए बाल मुंडवाएं, अब लोगों को यकीन हो गया कि इस फैसले में बदलाव नहीं हो सकता तो सब ने कुर्बानियां की और एहराम उतारा, भीड़ का यह हाल था कि एक दूसरें पर टूटे पड़ते थे और जल्दी इस कदर थी कि हर व्यक्ति बाल बनाने की ख़िदमत अन्जाम दे रहा था।

ग़ज़ब–ए–खैबर में शरीक थीं, मरहब के दांतो पर जब तलवार पड़ी तो करकराहट की आवाज़ उनके कानों में आई थी।

सन नौ हि० में ईला का किस्सा पेश आया, हजरत उमर रजि० ने हजरत हफ़सा रजि० को डांटा फिर हजरत उम्मे सलमा रजि० के पास भी आए, वह उनकी क़रीबी थीं, इसलिए उनसे भी बात की, हजरत उम्मे सलमा रजि० ने जवाब दिया।

उमर रजि० तुम हर मामला में दखल देने लगे यहां तक कि अब रसूल अल्लाह सल्ल और उनकी पत्नियों के मामलात में भी दखल देते हो।

हजरत उमर रजि० चुप हो गये और उठ कर चले आये, रात को यह खबर मशहूर हुई कि हुजूर सल्ल० ने पत्नियों को तलाक दे दी सुबह को हजरत उमर रजि० हुजूर सल्ल० की खिदमत में आए और तमाम किस्सा बयान किया, जब हजरत उम्मे सलमा रजि० की बात बताई तो आप मुस्कुराए।

हज्जतुल विदा में सन दस हि० में हुआ अगर्च उम्मे सल्मा रजि० बीमार थीं फिर भी साथ आई, नबहान (गुलाम) ऊँट की नकेल थामे था, आनहजरत सल्ल० ने फरमाया, जब गुलाम के पास इस कदर माल मौजूद हो कि वह उसको अदा करके आज़ाद हो सकता हो तो उससे पर्दा ज़रूरी हो जाता है।

सन ग्यारह हि० में मुहम्मद सल्ल० बीमार हुए, बीमारी बढ़ती गयी तो हूजुर सल्ल० हजरत आइशा रजि० के घर में मुन्तकिल हो गये। हजरत उम्मे सलमा रजि० अकसर आप को देखने के लिए जाया करती थीं एक दिन तबीअ़त ज़्यादा बीमार हुई तो उम्मे सलमा रजि० चीख उठीं, हुजूर सल्ल० ने मना किया कि यह मुसलमानों का काम नहीं।

एक दिन बीमारी बहुत बढ़ी तो पत्नियों ने दवा पिलानी चाही आपको गवारा न हुआ आपने इन्कार कर दिया, परन्तु जब बेहोशी तारी हो गयी तो उम्मे सलमा रजि० और (असमा रजि० बिन्त उमैस ने दवा पिला दी।)

बाज़ रिवायतों में है कि उन दोनों ने इसका मश्वरः दिया था।

इसी जमाने में एक रोज हजरत उम्मे सल्मा रजि० और उम्मे हबीबा रजि० ने जो हबशा हो आई थीं वहां के

ईसाई माबूदों का (जो संभवतः रोमन केथोलक गिरजे होगें, और उनकी मूर्तियों और तस्वीरों का तज़किरः किया, आपने फ़रमाया, उन लोगों में जब कोई नेक आदमी मरता है तो उसके क़ब्र को पूजस्थान बना लेते हैं और उसकी मूर्ति बना कर उसमें खड़ा करते हैं, कियामत के दिन अल्लाह जल्लेशानुहू की नज़र में यह लोग बुरी मखलूक (सृष्टि) होंगे)

वफ़ात से पहले हुजूर सल्ल० ने हजरत फ़ातिमा रजि० से कान में बातें की थीं हजरत आइशा रजि० उसी समय बेताबाना पूछने लगीं परन्तु हजरत उम्मे सलमा रजि० ने देर किया और हुजूर सल्ल० की वफ़ात के बाद पूछा।

६१ हि० में हुसैन रजि० ने शहादत पाई, हजरत उम्मे सलमा रजि० ने सपने में देखा कि हुजूर सल्ल० तशरीफ़ लाए हैं, बहुत परेशान हैं, सर और दाढ़ी मुबारक गुबार से भरा हआ है, पूछा या रसूल अल्लाह सल्ल० क्या हाल है, इरशाद हुआ हुसैन रजि० के कत्ल गाह से वापस आ रहा हूं, हजरत उम्मे सलमा रजि० की आंखें खुली तो आंखों से आंसू जारी थे। इसी हालत में ज़बान से निकला ईराक वालों ने हुसैन रजि० को कत्ल किया, अल्लाह उनको क़त्ल करे और हुसैन रजि० को ज़लील किया, अल्लाह उन लोगों पर लानत करे।

सन ६३ हि० में शामी फौज मक्का गयी, जहाँ इब्ने जुबैर रजि० ठहरे हुए थे। ऑ हजरत सल्ल० ने एक हदीस में ऐसी फौज का ज़िक्र फ़रमाया था, बाज़ को संदेह हुआ और हजरत उम्मे सलमा रजि० से पूछा, बोलीं हुजूर सल्ल० ने फरमाया है कि एक व्यक्ति मक्का में रूकेगा, उसके मुक़ाबले में जो फौज आएगी "जंगल में वही धंस जाएगी।" उम्मे सलमा रजि० ने पूछा जो लोग जबर्दस्ती शरीक किये गये होंगे वह भी ? फरमाया हां परन्तु कियामत में अपनी नियतों के अनुसार उठेंगे (हजरत अबू जअ़फर रजि०) फरमाते थे कि यह किस्सा मदीना के मैदान में पेश आएगा।

जिस साल हर्रः का वाकिआ़ हुआ (अर्थात ६३ हि०) इसी साल हजरत उम्मे सलमा रजि० ने इन्तिकाल फरमाया, उस समय उनकी उम्र ८४ वर्ष की थी, हजरत अबू हुरैरा ने नमाजे जनाज़ः पढ़ी और बकीअ़ में दफ़न किया, (ज़रकानी भाग ३ पेज २७४) उस जमाने में वलीद बिन उत्बा (अबू सुफयान का पोता) मदीना का गवर्नर था, अतः हजरत उम्मे सलमा रजि० ने वसीयत की थी कि वह मेरे जनाजे की नमाज न पढ़ाए, इस लिए वह जंगल की ओर निकल गया और अपने बजाए हजरत अबू हुरैरा रजि० को भेज दिया। हजरत उम्मे सलमा रजि० के पहले पति से जो औलाद हुई, उनके नाम यह हैं। सलमा रजि० हबशा में पैदा हुए, मुहम्मद सल्ल० ने उनका निकाह हजरत हमजः रजि० की लड़की उमामा से किया था।

उमर रजि० हुजूर सल्ल० से हजरत उम्मे सलमा रजि० का निकाह उनही ने किया था, हजरत अ़ली (रज़ि०) के ज़मान–ए–खिलाफत में फारस और बहरैन के हाकिम थे।

इल्मी हैसियत से अगर्च तमाम अज़वाज ऊँचे मुकाम पर थी, मगर हजरत आइशा रजि० और हजरत उम्मे सलमा रजि० का उनमे कोई जवाब न था अतः महमूद बिन लबीद कहते हैं। मुहम्मद सल्ल० की अज़वाज अहादीस का मखजन (खजाना) थीं, ताहम आइशा रजि० और उम्मे सलमा रजि० का उनमें हरीफ़ व मुकाबिल न था।

मरवान बिन हकम उनसे मसायल पूछा करता और एलानिया कहता था,

ऑ हजरत सल्ल० की अज़वाज के होते हुए हम दूसरों से क्यों पूछें।

कुर्आन अच्छा पढ़ती और ऑ हजरत सल्ल० के तरज पर पढ़ती थीं, एक बार किसी ने पूछा ऑ हजरत सल्ल० किस तरह किराअ़त करते थे? बोलीं एक एक आयत अलग अलग करके पढ़ते थे उसके बाद खुद पढ़ कर बतलाया।

हदीस में हजरत आइश रजि० के सिवा उनका कोई हरीफ न था उनसे ३७८ रिवायतें मरवी हैं इस बिना पर वह मुहद्दिसीन सहाबा रजि० के तीसरे तबक़े में शामिल हैं।

हदीस सुनने का बड़ा शौक था, एक दिन बाल बांध रही थीं कि ऑ हजरत सल्ल० खुत्बः देने के लिए खड़े हुए, ज़बाने मुबारक से अय्युहन्नास (लोगो) शब्द निकला तो जल्दी बाल बांध कर उठ खड़ी हुई और खड़े होकर पूरा खुत्बः सुना।

मुफ्ती थी, साहबे इसाबा ने उनका जिक्र लिखा हैः अर्थात वह कामिलुल अक्ल और सायबुर्राय थीं। अल्लामा इब्न क़य्युम ने लिखा है कि उनके फ़तावाअगर जमा किये जाएं तो एक छोठी किताब तैयार हो सकती है।

हज़रत अब्दुल्लाह बिन जुबैर रजि० अस्र के बाद दो रक़अत नमाज़ पढ़ा करते थे, मरवान ने पूछा, आप यह नमाज़ क्यों पढ़ते हैं? बोले आं हजरत सल्ल० भी पढ़ते थे, चूंकि उन्होंने

यह हदीसा हज़रत आइशा रजि० के सिलसिला से सुनी थी, मरवान ने उनके पास पुष्टि के लिए आदमी भेजा, उन्होंने कहा, मुझको उम्मे सलमा रजि० से यह हदीस पहुंची है, हजरत उम्मे सलमा रजि० के पास आदमी गया और यह बात नक्ल की तो बोलीः अल्लाह आइशा रजि० की मग़्फिरत करे उन्होंने बात नहीं समझी।

क्या मैंने उनसे यह नहीं कहा था कि ऑ हजरत सल्ल० ने उनके पढ़ने की मुमानियत (मना) फरमाई।

एक बार कुछ सहाबा रजि० ने पूछा कि (मुहम्मद सल्ल० की अन्दुरूनी जिन्दगी) के सम्बन्ध में कुछ बताइये, फ़रमाया, आप सल्ल० का जाहिर व बातिन एक जैसा था, मुहम्मद सल्ल० तश्रीफ़ लाए तो आप सल्ल० से किस्सा बयान किया, फ़रमाया, तुम ने बहुत अच्छा किया।

हजरत उम्मे सलमा से दर्ज जैल लोगों ने इल्म हासिल किया। अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र अब्दुर्रहमान बिन अबी बक्र रजि०, उसामा बिन ज़ैद रजि०, हिन्द रजि० बिन्त अलहारिस अलफ़रासिया, सफ़या रजि० बिन्त शैबः, उमर रजि० ज़ैनब रजि० (औलाद हज़रत उम्मे सलमा रजि०), मुसअब रजि० बिन अब्दुल्लाह (भतीजा) बनहान रजि० (गुलाम मकातिब) अब्दुल्लाह रजि० बिन राफ़ेअ, नाफ़ेअ रजि०, शैब : रजि० पिसर शैब : रजि०, अबू बकीर रजि०, खैरः रजि० वाल्द–ए–हसन रजि० बसरी, सुलैमान रजि० बिन यसार, अबू उस्मान अलहिन्दी, हमीद रजि० अबू सलमा रजि०, सईद रजि० बिन मुसय्यिब, अबू वायल रजि०, सफ़या रजि० बिन्त मुहसिन, शअ़बी रजि० अब्दुर्रहमान रजि० इब्ने हारिस बिन हिशाम, अकरमः रजि० अबू बक्र रजि० बिन अब्दुर्रहमान उस्मान अब्दुल्लाह रजि० इब्ने मोहब, उरवः रजि० बिन जुबैर रजि० मौला इब्ने अब्बास रजि०, कबीसा बिन वज़ीब रजि० नाफ़ेअ मौला इब्ने उमर रजि० यअ़ला बिन ममलिक रजि०।

हज़रत उम्मे सलमा रजि० बहुत ज़ाहिदाना (परहेज़गारी) वाली ज़िन्दगी बसर करती थीं, एक बार एक हार पहना जिसमें सोने का कुछ हिस्सा था, हुजूर सल्ल० ने ऐतराज़ किया तो उसको तोड़ डाला। हर महीना में तीन दिन (दोशम्बा, जुमेरात और जुमा) रोज़ा रखती थीं।

सवाब के लिए परेशान रहतीं, उनके पहले पति की औलाद उनके साथ थी और वह बहुत अच्छे से उनकी परवरिश करती थीं, इस बिना पर मुहम्मद सल्ल० से पूछा कि मुझको इसका कुछ सवाब भी मिलेगा? आपने फ़रमाया, हाँ।

अच्छे कामों में शरीक होती थीं, आयत ततहीर इन्हीं के घर में नाजिल हुई थी, मुहम्मद सल्ल० ने हज़रत फ़ातिमा रजि० और हसनैन रजि० को बुला कर कम्बल उढ़ाया और कहा, खुदाया! यह मेरे अह्ले बैत हैं " इनसे नापाकी को दूर कर और इनको पाक कर" हज़रत उम्मे सलमा रजि० ने यह दुआ सुनी तो बोलीं, या रसूलुल्लाह सल्ल०! मैं भी उनके साथ शरीक हूँ, इरशाद हुआ तुम अपनी जगह पर हो और अच्छी हो एक दिन उनके भतीजे ने दो रकअ़त नमाज़ पढ़ी, चूंकि सज्दे की जगह गर्द व गुबार था, वह सज्दे के वक़्त मिट्टी झाड़ते थे, हज़रत उम्मे सलमा रजि० ने रोका कि यह काम हुजूर सल्ल० की तालीम के ख़िलाफ़ है, ऑ हज़रत सल्ल० के एकगुलाम ने एक बार ऐसा किया था तो आप सल्ल० ने फ़रमाया था ! तेरा चेहरा अल्लाह की राह में गुबार आलूद हो।

फ़य्याज़ थीं और दूसरों को भी फ़य्याज़ी की ओर मायल करती थीं, एक बार हज़रत अब्दुर्रहमान रजि० बिन औफ़ ने आकर कहा, अम्मां! मेरे पास इस क़दर माल जमा हो गया है कि अब बर्बादी का डर है, फ़रमाया बेटा इसको ख़र्च करो, ऑ हज़रत सल्ल० ने फ़रमाया है कि बहुत से सहाबा ऐसी हैं जो मुझ को मेरे मौत के बाद फिर कभी न देखेंगे।

ऑ हज़रत सल्ल० को उनसे इस कदर मुहब्बत थी कि एक बार उन्होनें कहा, या रसूलुल्लाह सल्ल० इसका क्या सबब है कि हमारा कुर्आन में जिक्र नहीं तो आप मिम्बर पर तश्रीफ़ ले गये और सूर–ए–अहजाब की आयत ३५ तिलावत फरमाई।

एक बार हज़रत उम्मे सलमा रजि० ऑ हज़रत सल्ल० के पास बैठी थी, हज़रत जिब्रईल अलै० आए और बातें करते रहे, उनके जाने के बाद आपने पूछा, "इनको जानती हो।" बोलीं यहया थे लेकिन जब आपने इस किस्सा को और लोगों से बयान किया तो उस वक़्त मालूम हुआ कि वह जिब्रईल थे (यह पर्दा की आयत नाज़िल होंने से पहले का किस्सा होगा)

आप दीनी प्रश्न भेजें हम आप के प्रश्नों के उत्तर प्रकाशित करेंगे।

–इदारा

सत्य की खोज

मु० शमीम बहराइची

आज का युग विज्ञान का युग है न कि तर्कहीन, अंधविश्वास व भेड़ चाल का। आज तो कुछ साइंसी तरक्की आप देख रहें है वह बौद्धिक चिन्तन व बुद्धि के सही इस्तेमाल एवं सम्मिलित कोशिशों की देन है। जिसके कारण मनुष्य चांद तक पहुंच गया। लेकिन ईश्वर एवं धर्म के बारे में हम तनिक भी चिन्तन व बुद्धि का इस्तेमाल नहीं करते। जिसका कारण है कि जो जहां जिस घर परिवार, समाज अथवा धर्म में पैदा हो गया वह अपने पूर्वजों की ग़लत बातों को बुद्धि एवं तर्कों को नकार कर अंध विश्वास में मानता चला जाता है। और उसके अतिरिक्त कुछ सोचना एवं सुनना भी गवारा नहीं करता।

यदि किसी के पूर्वज कब्र और समाधि में आस्था रखते थे तो उसके बंशज भी इसी परम्परा को अपनाये हुए हैं। किसी के पूर्वज यदि मूर्ति, पत्थर आदि की पूजा कर रहे थे तो वह भी वही करते दिखाई देते हैं। सांसारिक वस्तुओं के मामले में हम काफी कुछ खोज बीन करते हैं और पचासों बार सोचते है एवं दूसरों से जो जानकार है परामर्श लेते हैं, परन्तु ईश्वर, मरणों परान्त जीवन एवं धर्म के बारे में हम उदासीन हैं धर्म एवं ईश्वर के बारे में हमारी यह उदासीनता बड़ी खतरनाक है जबकि सत्य धर्म दुन्या के आरम्भ से ही चला आ रहा है। धर्मों के इस जंगल में आज भी मौजूद है। उसके मानने वाले और उस पर अमल करने वाले भी हैं उसकी शिक्षा देने वाले और उसका प्रचार प्रसार करने वाले और उसे दूसरों तक पहुंचने वाले और फैलाने वाले सदैव रहे हैं। परन्तु हमारा ध्यान इस ओर नहीं जाता।

हमारी सोच एवं चिन्ता सुबह से शाम तक केवल खाने, कमाने, और अधिक से अधिक धन संचित करने एवं अधिक से अधिक संसारिक वस्तुयें प्राप्त करने में रहती है। जैसे एक दूकान से दो दूकान, एक कार से दो कार एक मकान से चार मकान आदि। यह चिन्ता व सोच उनकी भी है जिनका परिवार सीमित है और उनकी भी है जिनका परिवार बड़ा है और यह सब इसलिये है कि मौज मस्ती के साथ जीवन गुजर सके। यही धुन यही लगन, यही चाहत हृदय में बसाये इंसान मौत तक पहुंच जाता है। कुछ मनुष्य इन सांसारिक वस्तुओं को प्राप्त करने में सफल हो जाते है परन्तु पूर्ण सफलता उन्हें भी नहीं मिलती और अन्ततः मृत्यु के मुँह तक पहुंच जाते हैं। अधिकांश मनुष्य अपनी चाहत, अपनी इच्छा लिये दुनिया से चले जाते हैं।

कुछ मूल प्रश्नः—

जीवन क्या है? एक अमूल्य अवधि जो ज़िन्दगी देने वाले ने हमें दी है। यह जीवन केवल एक ही बार मिलता है चाहे इसे नष्ट कर दें या सफल बना लें। तनिक विचार कीजिए कि हम कौन हैं?..... हमको किसने पैदा किया? पैदा करने वाला कौन है?..... वह क्या चाहता है? मौत क्यों आती है? इंसान मर कर कहां चला जाता है? धर्म आखिर है क्या? ज़रा सोचिये, चिन्तन कीजिये जब एक साइकिल जैसी मशीन बिना किसी के बनाये नहीं बन सकती तो भला यह सारी सृष्टि किसी बनाने वाले के बिना कैसे बन सकती है।

आपके मस्तिष्क मे यह प्रश्न भी उठता होगा कि फिर ईश्वर दिखाई क्यों नही देता? ज़रा चिन्तन कीजिए सोचिये कि क्या ईश्वर को देख व समझ पाने के लिये आपने अपने को इस योग्य बनाया है? आपने अपने जीवन में कितना समय और वक्त उसको समझने में लगाया? दुन्या की मामुली डिग्रियां प्राप्त करने के लिये कितना समय, कितना परिश्रम और कितनी योग्यता दिखानी पड़ती है। फिर ईश्वर को देख और समझ पाने के सिलसिले में हम क्यों भूल करते हैं?..... कब्र समाधि मूर्ति और पत्थरों के आगे ध्यान जमाकर बैठ जाना ईश्वर को समझना नहीं है। हमारा कर्तव्य है कि सृष्टि और जीवन में उसके जितने संकेत व निशान मिलें। हम उन्हें संचित करें और उस पर सोचें इसी प्रकार ईश सम्बन्धी अपने ज्ञान को व्यापक व पूर्ण बनाते रहें। ईश्वर से प्रार्थना भी करते रहें कि अपना सत्य मार्ग दिखा दे और उस पर चलने की प्रेरणा दे। इसी तरह हम उसे जान पायेंगे। क्या कोई बालक या मनुष्य जो निरक्षर है एक ही दिन में अक्षर ज्ञान से पढ़ाई आरम्भ करके एक ही दिन में उच्च ग्रन्थों का पढ़ने वाला और मर्मज्ञ बन सकता है? कदापि नहीं! तो फिर सोचें कि क्या ईश्वर एक ग्रन्थ से भी कम है कि हम

उसे पूर्ण रूप से फौरन जान और समझ लें। जब हम स्वयं अपने सृष्टा नहीं है तो आखिर कोई हमारा सृष्टा होगा, सृष्टि की हकीकत सृष्टा के बिना सम्भव नहीं है।

मनुष्य को सब कुछ एक साथ प्राप्त नहीं हो जाता। हर चीज़ के प्राप्त होने का उचित और अभीष्ठ समय होता है। ईश्वर को प्रत्यक्ष देख पाने की शक्ति आज हम में न सही लेकिन उसकी निशानियों और लक्षणों को तो हम खुली आंखों देख रहे हैं। क्या हमारा अपना अस्तित्व ईश्वर के आस्तित्व का सब से बड़ा प्रमाण नहीं है। विज्ञान की नवीनतम खोजों और मानवीय अनुभवों और विचारों ने इस वास्तविकता के इनकार को असम्भव बना दिया है और ईश्वर का इनकार विज्ञान, बुद्धि, अनुभव हर चीज़ का इनकार है ईश्वर किसी के बनाने से ईश्वर नहीं बना है। वह इसका मोहताज नहीं है कि आप उसे ईश्वर माने तभी वह ईश्वर हो। आप चाहे माने या न मानें वह तो स्वयं ईश्वर है। उसका राज्य एवं प्रभुत्व अपने बल पर कायम है। उसने आपको और पूरी सृष्टि को स्वयं बनाया है। यह धरती, यह आकाश, यह सूर्य और चन्द्रमा और यह सारी सृष्टि उसके हुक्म की पाबन्द है वे सारी चीजें जिनके बल पर आप जिन्दा हैं उसी के अधिकार सूत्र में बंधी हैं। स्वयं आपका अपना वजूद (अस्तित्व) उसके अधिकार में है। इस सत्य को आप किसी प्रकार बदल नहीं सकते।

अब प्रश्न यह पैदा होता है कि ईश्वरीय विश्वास का सही तरीका एवं सत्य ईश्वरीय धर्म आखिर है कहां?..... ..... दुन्या में और स्वयं अपने देश में अनेक धर्म एवं विश्वास प्रचलित हैं। और सभी अपने को सही और सच्चा घोषित करते हैं। आदमी उनमें से किसे सही और सच्चा समझे?

यह प्रश्न इतना मुश्किल नहीं है। लेकिन हमने अपनी मानसिक संकीर्णता के कारण इसे मुश्किल बना लिया है। ज़बकि ज्ञान एवं सच्चाई की खोज प्रत्येक नर नारी का परम कर्तव्य है। सब मनुष्य एक ही आदि पिता आदम की सन्तान हैं। इसी कारण सब आदमी कहलाते हैं एक ही मात्र पिता के संतान होने के नाते यह सब वास्तव में एक परिवर के लोग और आपस में भाई हैं। सबका पैदा करने वाला ईश्वर एक है ! ज्ञान एवं चिन्तन मानव के अपने अधिकार की चीज है और ज्ञान सच्चाई तक पहुंचने का साधन एवं स्रोत है। परन्तु ईश्वरीय विश्वास एवं धर्म की सत्यता और असत्यता के प्रति हम उदासीन हैं। उदासीनता अज्ञानता की जननी है। सत्य का अज्ञानता के साथ कोई सम्बन्ध नहीं है। सबसे बड़ी अज्ञानता इंसान का अपने पालन हार की बंदगी से विमुख होना है सत्य एक एसी इकाई है जिसके खण्ड नहीं किये जा सकते। वह एक ही हो सकता अनेक नहीं।

क्यों न तुझसे कहूँ मैं हाले दिल

ख़ैरून्निसा बेहतर

क्यों न तुझ से कहूं मै हाले दिल।
क्यों न हो मुद्दआ मेरा हासिल।।
तेरी कुदरत से कुछ नहीं दूर।
शान तेरी जहां में मशहूर।।
हो निगाहे करम तेरी हम पर।
नेमतों खूबियों से भर दे घर।।
तेरे फ़ज्लो करम की बारिश हो।
और पूरी हर एक ख्वाहिश हो।।
रिज्क़ दे इस क़दर तू या ब्राकी।
हर ज़रूरत को हो मेरे काफ़ी।।
हो न मेरा कभी भी ख़ाली हाथ।
रहमतें बरकतें हों हर दम साथ।।
कर मुझे भी ग़नी या मुग़नी।
रख जहां में मुझे तू मस्तग़नी।।
डाल मुझ को न तू हलाकत में।
उम्र गुज़रे तेरी इताअ़त में।।
हमको तौफ़ीके हक़ परस्ती दे।
रोज़ अफ़ज़ूं फ़राख़ दस्ती दे।।
कर न मुझ को किसी का मुहताज।
रख ले मौला जहां में मेरी लाज।।
मेरी औलाद सब रहे ज़िन्दा।
सुन ले मेरी दुआ ख़ुदावन्दा।।
बाग़े दून्या में यह फलें फूलें।
एक लम्हा तुझे न यह भूले।।
हुए बेहतर का ख़ातिमा बेहतर।
तज़्किरा हो मेरा यही घर घर।।

मदीना तय्यिबा की फ़ज़ीलत व ख़ासियत

हरमैन शरीफ़ैन के उलमा का किसी शै को अच्छा समझना बेशक उस के इस्तिहबाब की दलील है। यह ज़मीने पाक वह है कि जहां कभी शिर्क नहीं हो सकता। हदीसे पाक में है कि शैतान मायूस हो चुका है कि अहले अरब उस की प्रस्तिश करें,और मदीना पाक की ज़मीन इस्लाम की जाए पनाह और कुफ्फार व मुशरिकीन से महफ़ूज़ रहने वाली है। मिश्कात बाबे हरमुलमदीना में है कि मदीना पाक बुरे लोगों को इस तरह निकाल फेंकता है जैसे लुहार की भट्टी लोहे के मैल को। "जज़्बुल क़ुलूब" में हज़रत शैख़ अब्दुलहक़ फ़रमाते हैं : इससे मुराद यह है कि मदीने पाक की जमीन तमाम शरीर व मुफ़्सिदीन को निकाल देती है और यह खासियत उस में हमेशा बाक़ी है। (जाअलहक्कु व ज़हक़लबातिल पृ.२८६)

ईदे क़ुर्बां मज़ूंम

मुहम्मद हसन इल्मी

फ़र्ज़ उन पर हज है बैतुल्लाह का।
जिन को है मक़्दूर ज़ादे राह का।।
उन पे क़ुर्बानी हुई अज़ वाजिबात।
जिन पे फ़र्ज़े ऐन है देना ज़कात।।
ज़ब्ह करना एक रास इक शख़्स को।
बकरी हो या भैंस हो या ऊँट हो।।
बल्कि ऊँट और भैंस में हैं बेख़ता।
एक से ले सात तक शिरकत रवा।।
बकरी इकसाला दो साला भैंस हो।
पंज साला जान लो तुम ऊँट हो।।
अज़्व सालिम देख लेना उस के तुम।
नाक कान और दस्तो पा और शाख़ दुम।।
सालिमो फ़र्बा हो, नै बीमारो काक़।
हश्र में मरकब बने मिस्ले बुराक़।।
ता करे तै जल्द राहे पुल सिरात।
चाहिये इस की निहायत इहतियात।।
दिन हैं क़ुर्बानी के तीन ऐ मोमिनो।
दस है और ग्यारा व बारा दोस्तो।।
और तक्बीरात कहना वाजिबात।
सुब्ह अर्फ़े से है बादे हर सलात।।
तेरहवीं तारीख़ वक़्ते अस्र तक।
हैं यही तशरीक़ के दिन ग़ैर शक।।
कान रख कर मोमिनो सुन लो ज़रा।
है यह मज़्मूने हदीसे मुस्तफ़ा।।
ख़्वाब में देखा ख़लीलुल्लाह ने।
हुक्मे कुर्बानी दिया अल्लाह ने।।
और वो दिल से ब आदाबे तमाम।
जब्ह बेटा कर रहें हैं, या सलाम।।
दूसरी शब भी यही आया नज़र।
कर रहें हैं ज़ब्ह अक्लोता पिसर।।
तीसरी शब भी यही था माजरा।
ज़ब्ह बेटा कर रहे हैं बरमला।।
था इशारा साफ़ क़ुर्बा कर पिसर।
हुब्बे रब गर चाहता है दे पिसर।।
ले लिया बेटे को, हिम्मत की बड़ी।
आस्तीं में ले ली रस्सी और छुरी।।
थे मिना के रास्ते में वह जरी।
क्या किसी ने देखी थी ऐसी घड़ी।।
राह में शैतां मिला कहने लगा।
ज़ब्ह करने बाप तुझ को ले चला।।
तब लगे इब्लीस से कहने ये आप।
मारता है कब कोई बेटे को बाप।।
फिर तो बोला यों वह इब्लीसे लई।
है यही अब हुक्मे रब्बिल आलमी।।
बोले वह गर है यही फ़रमाने हक़।
ऐसी जानें लाख हों कुर्बाने हक़।।
था मुहाफ़िज़ बाप का परवरदिगार।
उन को भी बहकाया उस ने तीन बार।।
कंकरीयां मार धुत्कारा उसे।
दूर हो मरदूद फटकारा उसे।।
पहुंचे क़र्बां गाह में वह जिस घड़ी।
बाप ने रस्सी निकालीं और छुरी।।
और कहा बेटे से अम्रे हक़ है यूं।
तुझ को उसकी राह में क़र्बां करूं।।
बोले इस्माईल है ये अम्रे नेक।
तीन बातों की वसीयत है वलेक।।
पहले मेरे दस्तो पा को बांधियो।
वक़्त क़ुर्बानी के ता जुंबिश न हो।।
दूसरे मुहं ढांकना अपना अबी।
ता न आए रहम मुझ पर उस घड़ी।।
तीसरे इस ज़ब्ह करने की ख़बर।
कीजियो मां को न हरगिज़ ऐ पिदर।।
अलग़रज़ फिर सुन लो इब्राहीम ने।
बांधे हाथ और पावं इस्माईल के।।
औंधे मुहं उन को लिटाया ख़ाक पर।
बांधी पट्टी अपने रूए पाक पर।।
हुक्मे हक़ से बाद अज़ां इक बारगी।
हल्क़े इस्माईल पर रख दी छुरी।।
आलमे बाला में लर्ज़ा पड़ गया।
किश्वरे अअ़ला में लर्ज़ा पड़ गया।।
रब ने फिर जिब्रील को फ़रमा दिया।
दुंबा जा इक जल्द जन्नत से तूला।।
और इब्राहीम को दे यूं पयाम।
हक़ तआला तुम को कहता है सलाम।।
तुमने सच्चा कर दिखाया ख़्वाब को।
और मलाइक से बढ़ाया आप को।।
अब जगह फ़रज़न्द की ये गोसफ़न्द।
ज़ब्ह कर दो है यही मुझ को पसन्द।।
ज़ब्ह दुंबा कर ख़लीलुल्लाह ने।
दस्तो पा खोले ज़बीहुल्लाह के।।
इल्मी उन की रस्म करना चाहिये।
राहे हक़ में सर को धरना चाहिये।।

इमाम मालिक रह०

(जन्म ६५ हिजरी मृत्यु १७६ हिजरी)

लतीफ अहमद एम०ए०

इमाम मालिक का कद, लम्बा बड़ी आखें और खूबसूरत व्यक्ति थे। इनकी गणना तबे ताबिओन में होती है। हदीस के ज्ञान का इनको अत्याधिक शौक़ था लेकिन सामर्थ्य न होने के कारण इनकी शिक्षा नियमानुकूल नहीं हो सकी।

शिक्षा प्राप्ति के लिए इन्होंने घर की कड़ियां तक बेच डालीं इमाम की स्मरण शक्ति बहुत ही तेज़ थी। जिस चीज़ को एक बार याद कर लेते थे कभी भूलते नही थे। अपार अदब के कारण आपने हरम मदीना में कभी इस्तिन्जा (शौच) नहीं किया कज़ाए हाजत के लिए आप बाहर जाते। कमज़ोरी एवं वृद्धावस्था के बावजूद मदीने में आप इस लिए सवारी पर नहीं चलते थे कि इस सर ज़मीन में नबी सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम का बदन मुबारक दफ़न है। जब हदीस बयान करना होता तो पहले वजू करते, अच्छे वस्त्र पहनते, खुश्बू का प्रयोग करते तथा दाढ़ी मुबारक में कंघी करते। लोगों ने इसका कारण पूछा तो कहा! मैं ऑ हज़रत सल्ललाहु अलैहि वसल्लम की हदीस का सम्मान करता हूँ। एक मरतबा इमाम मालिक का गुज़र एक रास्ते से हुआ, देखा कि अबू हाज़िम दर्स दे रहे हैं। इमाम बग़ैर रूके हुए तेज़ी से आगे बढ़ गये। जब इसके बारे मे मालूम किया गया तो कहा कि बैठने की जगह नहीं थी और खड़े होकर हदीस सुनना अच्छा नहीं मालूम हुआ इस से मैं ठहरे बिना आगे बढ़ गया।

इमाम साहब ने जिन विद्वानों से शिक्षा ग्रहण की उनमे नाफेअ और ज़हरी मुख्य हैं। इसके अतिरिक्त यहया बिन सईद, मुहम्मद बिन मुनकदर, हिशाम बिन उर वह, ज़ैद बिन असलम और रबीआ बिन अब्दुररहमान से भी हदीस का ज्ञान प्राप्त किया। ऐसे विद्वानों की गिनती १००० तक पहुंचती है जिनसे इमाम साहब ने शिक्षा ग्रहण की। इनमें ताबिओन की संख्या ३०० है जबकि तबे ताबिओन की संख्या ६०० है। इमाम साहब से जिन शागिर्दों ने शिक्षा ग्रहण की उनमे प्रमुख रूप से लैस बिन सअद, इब्न मुबारक, इमाम शाफई और इमाम मुहम्मद बिन हसनुश्शैबानी जैसे बड़े अहले दीन है। जिन लोगों ने इमाम साहब से हदीस रवायत की है उनकी तादाद अनगिनत हैं। इनमें अधिकांश अपने समय में इमाम और इल्मी दुनिया के सूरज और चांद बनकर रहे। जैसे इमाम शाफई, मुहम्मद बिन इब्राहीम, इब्न दीनार, अबू हाशिम, और अब्दुल अज़ीज़ बिन अबी हाजिम वगैरह। इनके अतिरिक्त इमाम के शिष्यों में मअन बिन ईसा, यहया बिन यहया, अब्दुल्ला बिन मुसलिमतुल काबानी, और अब्दुल्ला बिन वहब के इल्मी मुकाम का अन्दाजा इससे किया जा सकता है कि यह बुखारी, मुस्लिम, अबूदाऊद, तिरमज़ी, जैसे मुहद्दिसीन के उस्ताद होते हैं।

इमाम शाफई रह० कहते है कि जब हदीस के किसी टुकड़े मे इमाम मालिक को संदेह होता तो वह पूरी हदीस को छोड़ देते है। इमाम शाफ़ई कहते है कि इमाम मालिक तारों के समान हैं। मैं इमाम शाफई से ज़ियादा किसी पर इत्मीनान नहीं करता हूँ। जब इमाम मालिक की कोई हदीस सुनो तो दोनो हाथो से मजबूत थाम लो।

इस्लाम में हदीस की सबसे पहली किताब मुअत्ता इमाम मालिक रह० है। मुअत्ता इमाम मालिक के बारे में इमाम शाफ़ाई रह० फरमाते हैं। रूए ज़मीन पर किताबुल्लाह के बाद मुअत्ता इमाम मालिक से बढ़ कर कोई किताब सही नहीं। कुछ ऐतिहासिक कथनों से मालूम होता है कि मुअत्ता का संपादन ख़लीफ़ा मन्सूर की आज्ञा से हुआ। ख़लीफ़ा मन्सूर ने इमाम मालिक से कहा था कि आप लोगों के लिए एक किताब लिखें जिससे वह लाभ उठायें। उसमें इब्ने अब्बास की नरमी और इब्ने उमर की सख़्ती से परहेज़ करें और लोगों के लिए उसे खूब नर्म और आसान कर दें (यानी खूब जांच पड़ताल से काम लें) और लोगों की अमली जिन्दगी के लिए बेहतरीन किताब मुअत्ता कर दें।

इमाम मालिक कहते है बखुदा उन्होने तसनीफ़ *(किताब लिखना)* का तरीका सिखा दिया इसीलिए इस किताब नाम अलमुअत्ता रक्खा।

इमाम मालिक मुहदिदस और मुजतहिद दोनों थे। वह फतावा में सर्वप्रथम किताबुल्लाह पर भरोसा करते थे फिर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की अहादीस पर एतमाद करते

थे जो उनके निकट सही थी। इस संबन्ध में उन्होने हिजाज़ के उलमा और बड़े मुहदिदसीन को आधार बनाया था।

अहले मदीना के अमल को विशेष रूप से अइम्मा के अमल की इमाम मालिक के यहां ज़ियादा अहमियत थी। अइम्मा में सबसे प्रमुख व्यक्ति इमरान थे।

इमाम मालिक की जीवनी में उनके हृदय की उदारता और बे नफ़्सी की कैफ़ियत का भलीभांति अन्दाजा होता है अब्दुररहमान बिन मेंहदी का बयान है कि हम इमाम मालिक की ख़िदमत में हाजिर थे एक व्यक्ति ने आकर कहा कि मैं छः माह की यात्रा करके एक मसअला (प्रश्न) पूछने के उद्देश्य से आया हूँ। इमाम ने कहा कहो क्या है? उसने बयान किया तो इमाम ने कहा "मुझे यह मसअला अच्छी तरह मालूम नहीं।" वह हैरान रह गया। उसने कहा मैं अपने शहर के लोगों से क्या कहूंगा? इमाम ने कहा! कह देना "इमाम मालिक ने अपनी लाइल्मी को स्वीकार किया है"

इमाम शाफ़ई रह० कहते है कि जब कोई झूठा और झगड़ालू व्यक्ति इमाम मालिक के पास आता तो वह उससे कहते कि देखो। मेरा दीन और उसका यकीन व सबूत मेरे पास मौजूद है तुम वहमी हो, जाकर अपने जैसे किसी वहमी व्यक्ति से मुनाज़रा कर लो।

इमाम मालिक का कथन है इल्म रवायत की कसरत का नाम नहीं है वह तो एक नूर है जिसे खुदा दिलों में डाल देता है। एक मौके पर हारून रशीद ने इमाम मालिक से कहा या, अबा अब्दुल्ला ! आप किसी व्यक्ति को नियुक्ति कर दें कि वह मेरे बच्चों को मुअत्ता पढ़ा दिया करे जवाब में उन्होने कहा या अमीरूल मोमिनीन खुदा आप को बखशे यह इल्म आप ही के घर से निकला है अगर आप इसे इज्जत देंगे तो यह सम्मानित होगा और अगर आप ऐसा नहीं करते तो इस का दर्जा गिर जायगा। क्या आप नहीं जानतें कि इल्म के पास जाया जाता है, इल्म किसी के पास नहीं जाता। हारून ने कहा – निःसंदेह आप सच कहते है। एक बार हज के मौके पर अब्बासी खलीफा मन्सूर ने इमाम मालिक से कहा मैं चाहता हूँ कि आप की किताब मुअत्ता की नकलें पूरे राज्य में भेजकर हुक्म दूँ कि इस किताब पर अमल किया जाय। इमाम ने कहा ऐसा न किया जाय क्योंकि इससे पहले भी लोगों ने असलाफ़ (पूर्व बुजुर्गों) से हदीसें सुनी हैं वह हदीसें फैल चुकी हैं और लोगों का उन पर अमल है।

इसी तरह खलीफा हारून रशीद ने भी इमाम मालिक से कहा कि मेरी खवाहिश है कि मुअत्ता को खाने काबा में लटका दूं और लोगों को इसी पर अमल करने के लिए उभारूं। इमाम मालिक ने कहा ऐसा न कीजिऐ। खुद रसूले खुदा सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के असहाब के दरमियान फरोअ में इख़्तिलाफ़ रहा है। सहाबा विभिन्न इलाकों में फैल गये और हर एक मुसलमानों ने किसी एक सहाबी की पैरवी करके अपने लिए नजात की राह बना ली है। इमाम मालिक फ़िक़ा के चार मशहूर मजाहिब मे से एक मजहब के इमाम है। इमाम मालिक की फ़िक़ा फ़िक़ा मालिक के नाम से मशहूर व मारूफ हैं।

(पृष्ठ ३४ का शेष)

नमाज़ का सवाब ५० हजार गुना बढ़ा कर मिलता है। इसी तरह जो लोग कअबे की मस्जिद में नमाज़ पढ़ते हैं उनको लाख गुना बढ़ाकर सवाब मिलता है। तवाफ़ ऐसी इबादत है कि जिस का मौक़ा सिर्फ़ मक्के ही मे मिलता है।

८ ज़िल्हिज्जा को हाजी लोग इहराम बांध कर मिना पहुंच जाते हैं ९ को अरफ़ात में दिन गुज़ारते हैं, दस की रात मुज़दल्फ़ा में गुज़ार कर सुब्ह को मिना आ जाते हैं फिर बड़े शैतान को कंकरी मार कर क़ुर्बानी करते हैं, सर मुंडाते हैं फिर नहा धोकर तवाफ़ को आते हैं फिर मिना में रह कर ११, १२ ज़िल्हिज्जा को रमी कर के मक्का आ जाते हैं। इस ज़िक्र से मैंने एक तरह का रूहानी लुत्फ़ महसूस किया इसलिए लिख दिया उम्रा, हज्ज और ज़ियारते मदीना का तरीक़ा उस पर लिखी गई ख़ास किताबों में पढ़ कर रूहानी लुत्फ लीजिए और ईमान में ताज़गी लाइये। और इस्तिाअत हो तो ज़िन्दगी में एक बार हज्ज ज़रूर कीजिए। इस साल मौक़ा नहीं मिला है तो अगले साल हज्ज का इरादा अभी से कर लीजिए अल्लाह मदद फरमाएंगे।

(पृष्ठ ३३ का शेष)

रोजगार मिल जाएगा और समाज में भी मुक़ाम हासिल हो जाएगा। किसी इल्म में कमाल और उसकी बुलन्दियों के ऊँचे स्तर तक पहुँचने के लिए जिस मेहनत और कोशिश की ज़रूरत है वह इस ज़ेहनी सोच की वजह से मुमकिन नहीं है। हमारे सारे माहिरीने तालीम (शिक्षा विशेषज्ञ) उलमा लीडर और समाजी कारकुन, अदीब और शायर सभी इन बुनियादी असबाब(कारणों) पर गौर करें और तलबा में तालीम का जौक व शौक पैदा करने की कोशिश करें ताकि वह इल्म के हर शोबे में जो अपने फैलाव और गहराई के लिए एक चैलेंज बना हुआ है उसमें कमाल पैदा कर सकें।

तालीम में क़नाअत पसन्दी का रूझान

मुहम्मद इसहाक़

बहुत दिनों पहले उस्मानिया यूनिवर्सिटी के एक ग़ैर मुस्लिम प्रोफ़ेसर ने एक होनहार मुस्लिम तालिबइल्म से कहा आइन्दा साल अपना नाम पी०एच०डी० के लिए रजिस्टर्ड करा दो। एक दो साल में डिग्री मिल जायेगी। तालिबइल्म ने कुछ पशेमानी का इज़हार किया। तुम इसकी फ़िक्र न करो तुम्हारे इन्तखाब़ के सब मराहिल मैं खुद देख लूंगा। उस पुराने तालिबइल्म से कुछ रोज़ पहले मुलाकात हुई और यह मालूम करके अफ़सोस हुआ कि वह बीस वर्ष के दौरान अपना नाम पी० एच० डी० के लिए दर्ज न करवा सका। उससे तफ़्सीली बात हुई तो वह एहसास कमतरी में मुब्तिला थे। मैंने कहा आप आई० ए० एस० के लिए ज़रूर कोशिश कर सकते थे, कहा इम्तिहान तो पास कर लेता इण्टरव्यू के शिकंजे से निकलना हम मुसलमान उम्मीदवारों के लिए आसान नहीं। "खूब" ! मैंने, कहा देखिये ओलम्पिक दौड़ में बहुत लोग शरीक होते हैं लेकिन उन सबको सारी उम्र यह एज़ाज़ (विशेषता) तो हासिल रहता है कि ओलम्पिक दौड़ में वह शरीक रहे क्योंकि हर मुल्क अपने हजारों स्पोर्ट्समैन में से यह उन्हें चुनता है, उसके जीतने, हारने और कुछ पाने का सवाल ही कहाँ पैदा होता है–"

"तू ही नादां चन्द कलियों पर क़नाअत कर गया"

यह तो सिर्फ़ एक मिसाल थी आए दिन हम ऐसे इल्मी हादसों और बदनसीबी से दो–चार होते ही रहते हैं। यहां हमारी बहस आम तलबा से नहीं बल्कि उन ज़हीन और तेज़ तलबा से है जो इल्म के किसी शोबे में कमाल हासिल करने की सलाहियत रखते हैं, मुल्क और कौम में नामवर हो सकते है, ज़मीन का नमक कहला सकते हैं, जिन के वजूद पर सारी कौम गर्व कर सकती है।

जहां तक तालीम का सम्बन्ध है आम तौर पर मुस्लिम तलबा में क़नाअत पसन्दी (थोड़े पर राज़ी रहना) का रूझान आम है। यह एक ऐसा नफ़्सियाती मर्ज़ है जिसकी तरफ़ बहुत कम ध्यान दिया गया है। सारी तालीम, पेशवराना काबलियत और तरक़्क़ी अपने फ़न में कमाल हासिल करने की कोशिशों पर मुनहसिर है। खुद यह कोशिश नतीजा है तालिबइल्म के अन्दरूनी जज़्बे और शौक पर जो इस ज़द्योजहद के लिए तैयार करती है। तालीम के मैदान में इस क़िस्म की कनाअत पसन्दी का रूझान प्राइमरी, सेकेन्ड्री, और यूनीवर्सिटी की आला सतह तक मिल जाएगा। वालदैन और तलबा को आप अकसर यह कहते सुनेंगे कि ज्यादा पढ़ने से क्या फ़ायदा है। इस मर्ज़ की जड़ें बहुत गहरी और तारीखी, समाजी और मज़हबी हैं।

१. अपने आपकी पहचान कठिन काम है। खुद अपने में क्या क्या सलाहियत और कमालात छिपे हुए हैं उनसे आम तौर पर नौजवान तलबा नावाक़िफ रहते हैं। जब तक कि वह अपनी सलाहियतों के जांचने और परख़ने के मौक़े से दो–चार न हों। ऐसे तलबा जो स्कूल या कालेज में मुखतलिफ़ ग़ैरनिसाबी मसरूफ़ियात और मुक़ाबलों में हिस्सा न लें उनमें खुद एतमादी(आत्मविश्वास) पैदा नहीं होती। दूसरी तरफ़ उन्हें माहिराना रहनुमाई या गाईडेंस की ज़रूरत होती है। अगर ऐसी रहनुमाई न मिले तो तालिबइल्म शशोपंज में रह जाता है।

२. मुख़तलिफ़ तारीखी वजहों ख़ास कर अंग्रेजों की हुकूमत क़याम होने के बाद मुसलमानों में मायूसी और बेहिसी की वजह से वह तालीम में बहुत पीछे रह गये। अंग्रेजों के तोप तफ़ंग से ज्यादा रेल, तार, मोटर और बिजली की ईजादों ने उन्हें सख़्त हैरत में डाल दिया। यही वजह है कि सर सैय्यद की तालीमी तहरीक के एक सौ वर्ष से ज्यादा के बाद भी मुसलमानो का तलीमी फ़ीसद पन्द्रह है जबकि मुल्क में तालीम का फ़ीसद छत्तीस से अधिक है।

३. हाल ही में मौलाना अबुल कलाम आज़ाद की सदी तकरीब का देहली में इफ़्तिताह (उद्घाटन) करते हुए वज़ीर आज़म राजीव गांधी ने इस बात को तस्लीम किया कि आज़दी के बाद हिन्दुस्तान में सबसे ज्यादा नुक़सान मुसलमानों को उठाना पड़ा। सियासी हालात ने पलटा खाया तो सबसे पहले मुसलमानों पर रोज़गार के दरवाज़े बन्द

हो गये। उसका सारा दारोमदार सरकारी नौकरियों पर था। रोज़ी के असल ज़रिये खेती, उद्योग धन्धे और तिज़ारत हैं लेकिन इन शोबों में सलाहियत और मेहनत की ज़रूरत है जिससे आम तौर पर मुसलमान एक खास मिज़ाज की वजह से दूर हैं।

४. जमहूरी निज़ाम की कमज़ोरियों से यहां बहस नहीं लेकिन इस निज़ामे हुकूमत में आज भी डार्विन की थ्यूरी " ताकतवर ही ज़िन्दा रहता है" बराबर काम कर रही है। अपने वजूद को कायम रखने और ऊपर उठने की कोशिश जिस तरह पेड़ पौधों और जानवरों में मौजूद है उसी तरह जमहूरी निजाम में सिर्फ फ़र्द (व्यक्ति) बल्कि विभिन्न समाजी, मजहबी गरोहों पर यह असलियत खुल कर सामने आ गई है कि अगर उन्हें इज्ज़त की ज़िन्दगी गुज़ारनी है तो वह न सिर्फ अपने पास पड़ोस की समाजी, माली और सियासी हालात पर गहरी नज़र रखें बल्कि वह उन हालात और माहौल में अपने को बाकी रखने और ऊँचे पद हासिल करने की दौड़ में असली हिस्सा लें जिसके लिए तालीम बहुत जरूरी है नहीं तो कौन इस दौड़ में छूट गया और कौन मिट गया इसका किसी को अफ़सोस न होगा।

मुस्लिम तलबा का यह आम ज़ेहनी मिज़ाज है कि वह किसी मुक़ाबले के इम्तिहान में शरीक होने से पहले ही तय कर लेते हैं कि उनका चुनाव मुश्किल है। यह ऐसा है जो किसी मुक़ाबले में शरीक होने से पहले ही अपनी हार मान ले। जो पहले ही से हार के लिए तैयार है उसको इल्म की ऊँची चोटी को सर करने की धुन हो ही नहीं सकती। कहा जाता है कि सवार जब खुद ही मरऊब हो और डरा हुआ हो तो घोड़ा अपने जिस्म की रगों में सवार की घबराहट और परेशानी को महसूस कर लेता है, चुनानचः वह थोड़ी देर में उसको ज़मीन पर पटक देता है। आल इंडिया सर्विसेज़ के लिए इन्टरव्यू लेने वाले अपने फ़न के माहिरीन होते हैं वह दो–चार मिनट ही में समझ लेते हैं कि उम्मीदवार किस क़बीले से तअल्लुक रखता है।

५. कट्टर उलमा–ए–दीन और मज़हबी हज़रात ने मज़हबी महफ़िलों में दुनियावी इल्म से बेज़ारी का इज़हार किया है या इन उलूम का ज़िक्र बड़ी हिक़ारत से किया। इसका नतीजा यह हुआ कि कच्चे ज़ेहनों में यह बात बैठ गई कि तालीमी सुध बुध तो हासिल कर लेना ठीक है लेकिन उन में कमाल हासिल करने या इम्तियाज़ी तमग़ा हासिल करने की हर कोशिश पर पहले ही से ब्रेक लग जाता है।

यहां पर हमें एक अहम सवाल करना है। यह तो हर हाजी जानता है कि हज में तवाफ़ (परिक्रमा) काबा के पहले तीन चक्कर "रमल" कहलाते हैं जिसमें सीना तान कर शाने उछाल कर चलने की हिदायत है। हुजूरे अकरम ने आखिरी हज के मौके पर ऐसा ही किया था कि मक्का के काफिरों को यह ख़्याल न हो कि मुसलमान कमज़ोर और बदहाल हैं। यूँ समझाया कि ताकत से मतलब तलवार चलाना, तीरअंदाजी और घुड़सवारी में कमाल हासिल करना है। इन बातों से एक बात साफ़ हो गई कि मुसलमान दूसरों की मेहरबानी और रहम पर ज़िन्दगी न गुज़ारें। असवहे हसना (हुजूर अकरम के अच्छे नमूने) की स्पिरिट आज भी बाक़ी है लेकिन हथियार बदल गये हैं, आज साइंस, रिसर्च और टेक्नोलॉजी में कमला और बरतरी हासिल करने का ज़माना है।

हज़रत आदम को ज़मीन पर ख़लीफ़ा बना कर भेजा गया और उन्हें दुनिया की चीजों का सारा इल्म दे दिया गया जिसमें उनकी ख़ासियतें और विशेषताऐं भी शामिल हैं। जाहिर है, इन चाजों की ख़ासियतें और विशेषताऐं बिना साइंसी जाँच के मुमकिन ही नहीं हैं। इसका मतलब साफ़ ज़ाहिर है कि सारे दुनियावी इल्म का हासिल करना भी दीन का ही हिस्सा है। ख़िलाफ़त, हुकूमत, दौलत व इज्ज़त भी अल्लाह के इनामात हैं शर्त यह है कि इनका सही इस्तेमाल हो।

यहां पर एक बुनियादी सवाल यह है कि क्या मुसलमान दुनियावी इल्म में कमाल पैदा किये बिना भी दूसरों के मुकाबलें में किसी तरह बराबरी या बड़ाई का दावा कर सकते हैं। क्या मुसलमान इस ज़मीन पर दूसरों के रहमोकरम पर कनाअत (संतोष) का जीवन व्यतीत कर लें।

क्या ही अच्छा होता कोई साहबे इल्म इस पहलू पर आँख खोल देनेवाला मज़मून लिखे जो मुसलमानों की नज़र से बिल्कुल ओझल हो गया है।

यहाँ पर हमारा मक़सद तालीम में संतोष पसन्दी के रूझान की वजहों को और ज्यादा तफसील से ब्यान करना नहीं है लेकिन हम महसूस करते हैं कि मुसलमान तलबा में अनजाने तौर से उनके ज़ेहनों में यह बात बैठ गई है कि बस किसी हद तक तालीम हासिल कर लेना ज़रूरी है। यूनीवर्सिटी सनद काम चलाने के लिए काफी है, कुछ

(शेष पृ. ३१ पर)

(पृष्ठ ४ का शेष)

और ख़ुदा का शुक्र अदा किया। यही जगह आज ज़म ज़म का कुवां और पानी आबे ज़म ज़म कहलाता है जिसे ह़ाजी लोग तवाफ़ के बाद पीते हैं और जिसके फाइ़दे और बरकतों के बयान के लिये एक किताब चाहिए कुछ दिनों बाद अल्लाह के हुक्म से इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम अपनी बीवी और बच्चे को देखने आए इसी दौरान इब्राहीम (अ़०) को ख़्वाब में ख़ुदावन्दी इशारा हुआ कि अपने लाडले इस्माईल को मेरे लिये ज़ब्ह़ कर दो। अल्लाहु अक्बर! दिल हिला देने वाली आज़माइश! मगर वह तो ख़लीलुल्ला थे। एक सुब्ह़ नूरे नज़र इस्माईल को साथ लिया छुरी और रस्सी भी छुपा कर ले ली और ज़ब्ह़ के इरादे से मक्के से मिना चल दिये रास्ते में शैतान ने वरग़ला बहका कर इस इम्तिह़ान में रूकावट डालना चाहा उस ने तीन बार यह कोशिश की तीनों बार इब्राहीम (अ़०) ने उसे कंकरीया मार कर भगाया। यह अदा भी अल्लाह के यहां ऐसी मक़्बूल हुई कि उम्मते मुह़म्मद (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) के ह़ाजियों के ह़ज्ज में तीन दिन तक उन ही जगहों पर कंकरियां मारना वाजिब हुआ और इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम का यह अ़मल भी ता क़ियामत ह़ाजियों के ज़रीअ़े जारी रहेगा। अब अज़ीम बाप ने अज़ीम बेटे को अपना ख़्वाब सुनाया। अ़ज़ीम बेटे ने बाप को कुछ हिदायात दीं और ज़ब्ह़ होने को लेट गया अ़ज़ीम बाप ने अपनी आखों पर पट्टी बांधकर अल्लाह के लिये बेटे के गले पर छुरी चला दी। फिर एक रिवायत के मुताबिक़ छुरी ने न काटा और ज़ब्ह़ से पहले ही आवाज़ आई कि लो इस मेंढे को ज़ब्ह़ करो जिसे जिब्रील अ़लैहिस्सलाम जन्नत से लाए थे फिर उसे ज़ब्ह़ किया। दूसरी रिवायत के मुताबिक़ छुरी चल चुकी थी लेकिन जब पट्टी खोली तो देखा मेंढा ज़ब्ह़ किया पड़ा है और इस्माईल अ़लैहिस्सलाम अलग खड़े हैं। आवाज़ आई तुम ने अपना ख़्वाब सच कर दिखाया। यह अ़मल अल्लाह के यहां इतना मक़्बूल हुआ कि उम्मते मुह़म्मद (सल्लल्लाहु अ़लैहि व सल्लम) के मालदारों पर बक़रअ़ीद में क़ुर्बानी वाजिब हुई और क़िरान और तमत्तुअ़ ह़ज्ज करने वालों पर मिना में क़ुर्बानी वाजिब हुई। इस अ़ज़ीम इम्तिह़ान के बाद कअ़बे की ता़मीर (निर्माण) का हुक्म हुआ। इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम को अल्लाह तआ़ला ने वह जगह सुझाई जहां दादा आदम ने कअ़बा बनाया था। बाप बेटे ने मिल कर उसी जगह कअ़बा बनाया जब कअ़बा यानी बैतुल्लाह तैयार हो गया तो अल्लाह ने हुक्म दिया कि आवाज़ लगाओ कि लोग कअ़बे का (अल्लाह के घर का) ह़ज्ज करने आएं। ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने आवाज़ लगाई अल्लाह ने यह आवाज़ सारी दुन्या के इन्सानों को सुनवा दी और दूर दूर से लोग, सवारियों पर और पैदल ह़ज्ज को आने लगे। लोग पहले ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के तरीक़े पर ह़ज्ज करते रहे और अल्लाह को राज़ी करते रहे। लेकिन शैतान को यह कब गवारा था। उस ने ऐसी ऐसी बिदअ़तें सुझाई कि ख़ुदा की पनाह रास्ते का ख़र्च हो या न हो लोग ह़ज्ज के लिये निकल पड़ते। रास्ते के ख़र्च के लिये सुवाल करते। नंगे होकर तवाफ़ करने को सवाब समझते। लोग शिर्क में मुब्तला हुए और वह घर जो एक ख़ुदा की इ़बादत के लिये बनाया गया था उस मे बुत रखने लगे यहां तक कि इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम के बनाए हुए क़अबे में ३६० बुत रख दिये गये। वही इब्राहीम (अ़०) जिन्होंने बुत की मुख़ालिफत में अ़ज़ीज़ बाप को छोड़ा था। बुतों के तोड़ने पर जिन को क़ौम ने आग मे डाल दिया था। उन्हीं के बनाए हुए कअ़बे में शैतान ने ३६० बुत रखवा दिये थे। इसमें भी अल्लाह की कोई मस्लह़त थी। ह़ज़रत इब्राहीम अ़लैहिस्सलाम ने दुआ़ की थी कि ऐ अल्लाह मेरी औलाद में एक ऐसा रसूल भेज जो तेरे बन्दो को तेरी आयतें पढ़कर सुनाए और उन को किताब व ह़िक्मत सिखाए और तेरे बन्दों को पाक करे। अस्ल में उस आख़िरी रसूल के कारनामों में यह भी था कि वह क़अबे को बुतों से पाक करेंगे।

सन ८ हिज्री मे मक्का फ़त्ह़ हुआ सारे बुत अलग किये गये और अब क़अबा क़ियामत तक के लिए बुतों से पाक हो गया।

सन० ६ हिज्री में उम्मते मुह़म्मद (सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम) के मुस्तती़अ़ लोगों पर ह़ज्ज फ़र्ज़ हुआ। सन६ में हुज़ूर ने ह़ज़रत अबू बक्र को अमीरे ह़ुज्जाज बनाकर भेजा और ह़ज़रत अ़ली (रज़ि०) को भेज कर सूर–ए–बराअत सुनवाई और एअ़लान हो गया कि आइन्दा जो शख़्स सिर्फ अल्लाह को मा़बूद (उपासक) और मुह़म्मद (सल्लल्लाह अलैहि व सल्लम) को अल्लाह का रसूल न माने वह ह़रमे मक्का में दाख़िल न हो। ह़ज्ज इसी ज़िल्हिज्ज के महीने में होता है दूर दराज़ के लोग ज़ीकअ़दा के महीने ही से सफ़र शुरूअ़ कर देते है और सारी दुन्या से इतने ह़ाजी आते है कि पहले से न चलें तो बर वक्त सवारियां ही न मिल सकें इस सिलसिले में सऊदी हुकुमत की खिदमात, उन का इन्तिज़ाम और उन की क़ुर्बानियां क़ाबिले सताइश (प्रशंसनीय) हैं। जो लोग पहले पहुंच जाते हैं उम्रा कर के मदीना तय्यिबा की ज़ियारत से फ़ारिग हो आते है। जो लोग बाद मे जाते हैं वह ह़ज्ज के बाद ज़ियारत को जाते हैं। मदीना तय्यिबा में हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम की क़ब्रे मुबारक है जिस की ज़ियारत का बड़ा सवाब है। सबसे बड़ा फ़ाइदा यह है कि बराह रास्त सलाम पेश करने की सआ़दत नसीब होती है। वहां हुज़ूर सल्लल्लाह अ़लैहि व सल्लम की मस्जिद है जिस में हर

(शेष पृ. ३१ पर)

संक्षिप्त इस्लामी इतिहास

हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहुअलैहिवसल्लम

से पहले संसार की दशा

मौलाना अब्दुस्सलाम क़िदवाई

अब से कोई लगभग १५ सौ साल पहले अरब देश में अजब अंधेर मचा हुआ था। अल्लाह और उसके दीन को लोग बिल्कुल भूल गये थे। एक खुदा की जगह सैकड़ों देवी देवता बन चुके थे। काबा जो केवल अल्लाह की इबादत (उपासना) के लिए बनाया गया था, अब उस में एक दो नहीं पूरे तीन सौ साठ बुत रखे हुए थे जिनकी पूजा होती थी। इसी पर बस न था बल्कि हर हर ख़ानदान और ख़ानदान ही नहीं हर हर घर में अलग अलग बुत रखे हुए थे जिनकी पूजा ज़रूरी थी। यह लोग दुनिया की ही जिन्दगी पर मगन थे कभी भूले से भी उन्हें मरने का ख़्याल नहीं आता और आता भी तो केवल इतना ही कि एक दिन मरकर सड़गल जायेंगे। रहा मरने के बाद अज़ाब व सवाब तो ऐसी बातों को वह खुराफ़ात (मिथ्या) समझते थे। न क़ियामत (महाप्रलय) को मानते थे न दोज़ख का यक़ीन था बल्कि जो इन चीजो को बयान करता था उसे पागल और बावला समझते थे। इसी ख़्याल का प्रभाव था कि वह नेकी से कोसों दूर थे। दुनिया की कौन सी बुराई थी जो उन में नहीं पाई जाती थी। ज़राज़रा सी बात पर लड़ना और एक दूसरे का सिर काट लेना उनके नज़दीक कोई बात ही नहीं थी। बहुत ही छोटी बातों पर लड़ाई शुरू हो जाती और ऐसी सख़्त कि सैकड़ो वर्ष समाप्त नहीं होती। लूटमार का हाल यह था कि किसी का अकेले निकलना कठिन था। बड़े बड़े क़ाफ़िलों के साथ लोग जाते, लेकिन फिर भी घर तक सही सलामत से ही पहुंच पाते। चोरी का आम रिवाज था। अच्छे अच्छे और ऊँचे ऊँचे घराने इस में फँसे हुए थे। नामी गिरामी आदमी इसे करते और गर्व से बयान करते थे, बलात्कार और व्यभिचार (हरामकारी) सारे देश में फैली हुई थी। कवि अपनी कविताओं में बयान करते और मज़ा लेकर हर जगह गाते फिरते। शराब और जुवे की इतनी बहुतात थी कि खुदा की पनाह। घर घर इसका चर्चा था। जहां चार आदमी इकट्ठा होते शराब और जुवा शुरू हो जाता और रूपये पैसे की सीमा पार कर बीवी बच्चों तक की बाज़ी लगने लगती। फिर इस के साथ और तरह तरह की बेहयाइयां (निर्लज्जा जनक बातें) होतीं। क्रूरता का यह हाल था कि जीवित पशुओं को बांध कर उन पर तीर मारने का अभ्यास किया जाता। पेटवाली औरतों का पेट चाक कर डालते। दुश्मनों की हत्या करके उन के नाक कान काटते और हार बना कर पहेनते। उनकी खोपड़ियों में शराब पीते। लड़कियों को पैदा होते ही ज़िन्दा दफ़न कर देते।

अज्ञानता और अशिक्षा ऐसी थी कि सारे अरब मे मुश्किल से चन्द आदमी लिख पढ़ सकते थे।

खाने पीने में बुरे भले की पहचान बिलकुल न थी। जो पाते खा डालते। कीड़े मकोड़े, गोह, छिपकली तक हज़्म कर जाते। मुर्दा जानवरों के खाने में तनिक भी संकोच न करते। खून जमाते और उसे काट काट कर बड़े मज़े से खाते। तात्पर्य यह कि कुछ अजीब हाल था। कोई कहां तक बयान करे और किस किस बुराई को गिनाए। बस यह समझ लीजिये कि दुनिया की हर बुराई उन में मौजूद थी।

यह दशा केवल अरब ही की नहीं थी बल्कि दुनिया का बड़ा भाग बुराईयों से ग्रस्त था। खुदा का ख़्याल दिलों से निकल गया था। कहीं बुतों की पूजा (मूर्ति पूजा) हो रही थी, कहीं आग को सज्दा किया जा रहा था, कहीं पर पेड़ों और पशुओं के सामने सिर झुके हुए थे, कहीं कबरों पर चढ़ावे चढ़ाए जा रहे थे। राजा प्रजा पर अत्याचार कर रहे थे। बड़े छोटों को सता रहे थे, अमीर ग़रीबों को तंग कर रहे थे। तात्पर्य यह कि हर जगह नेकी के बदले बदी और अच्छाई की जगह बुराई फैली हुई थी और सारी दुनिया सख़्त मुसीबत और परेशानी में फँसी हुई थीं।(जारी)

अनुवाद– हबीबुल्लाह आज़मी

तारीखे इस्लाम का मुतालआ आप के लिए जरूरी है।

अफ़कार के पत्र के उत्तर में आप का पत्र मिला शुक्रिया। हम आप के हर सहयोग का स्वागत करेंगे।

—सम्पादक तथा सहयोगी

घरेलू चुटकले

के०सी० अग्रवाल

कब्ज

सनाय की पत्ती ५० ग्राम, सौंफ १०० ग्राम, मिश्री २०० ग्राम, तीनों को कूट पीसकर चूर्ण बनाकर रख लें। रात्रि में सोते समय ६ ग्राम की मात्रा में पानी से सेवन करें। सुबह खुल कर दस्त होगा।

संग्रहणी

भांग २ ग्राम को भूनकर ३ ग्राम शहद मिलाकर चाटने से लाभ होता है।

खांसी

फिटकरी भुनी हुई १० ग्राम तथा इतना ही देसी खांड, दोनों को बारीक पीसकर सूखी खांसी वाले रोगी को दूध के साथ तथा आर्द्र (गीली, कफ युक्त) खांसी वाले रोगी को जल के साथ मात्रा १४ पुड़िया बनाकर सेवन करावें। पुरानी से पुरानी खांसी तक में लाभकारी है।

उच्च रक्त चाप

लहसुन के निरन्तर प्रयोग से हाईब्लड प्रेशर, रक्त–वाहिनियों की कठोरता व तंग हो जाना बिल्कुल ठीक हो जाता है।

बालों के रोग

प्याज पीसकर बालों पर लेप करने से बाल काले रंग के उगने शुरू हो जाते हैं। प्याज का रस शहद में मिलाकर गंजे स्थान पर लगाते रहने से बाल पुनः उग आते हैं तथा सफेद बाल काले हो जाते हैं।

दाढ़–दाँत दर्द

लहसुन के रस को गरम करके इसका फाहा लगाने से तुरन्त आराम मिलता है

गैस, अफारा, वमन की इच्छा, अरूचि

इमली का गूदा १० ग्राम, अनारदाना ४ ग्राम, भूनी हींग १.१/२ ग्राम, जीरा २ ग्राम, धनियां २ ग्राम, गुड़ १५ ग्राम, अमरबेल ४ ग्राम, काली मिर्च १ ग्राम, सैन्धा नमक ३ ग्राम, नींबू का सत २ ग्राम, सभी औषधियों को घोटकर सुरक्षित रख लें। छोटी छोटी गोलियां बना लें। २–२ गोलियां दिन में तीन बार लेने से गैस ट्रबल, अफारा, वमन की इच्छा अरूचि आदि नष्ट हो जाती है। यह गोलियां बहुत स्वादिष्ट होती हैं।

पेट के कीड़े

हरे नारियल का पानी पीने से पेट के कीड़े मर जाते हैं। नारियल के तेल पिलाने से भी पेट के कीड़े मर जाते हैं।

गले की सूजन व दर्द

नमक मिलाए हुए गरम पानी के गरारे करने गले की सूजन व दर्द मिट जाता है

आँखों की कमजोरी/थकना /पानी बहना

रात को पानी में भिगोई हुई बादाम की पाँच गिरियों को सुबह छीलकर दूध के साथ खाने से उपरोक्त रोग दूर हो जाते हैं।

चेहरे के मुँहासे

हरा पुदीना पीसकर इसमें २–३ बून्द नींबू के रस की डालकर चेहरे पर लगाकर कुछ देर तक बैठे रहें। यह क्रिया कुछ दिन तक करने से चेहरे के समस्त मुँहासे नष्ट होकर चेहरे की कान्ति खिल उठेगी।

बढ़े हुए टॉन्सिल

कच्चे पपीते का रस (दूध) पानी में मिलाकर गरारे करने से बढ़े हुए टॉन्सिल ठीक हो जाते हैं।

दमा

तेपात और पीपल को पीसकर अदरक की चाश्नी में चाटने से दमा रोग दूर हो जाता है।

रतौंधी

काली मिर्च को बारीक पीसकर कपड़छन चूर्ण गाय के ताजा दही मे घिसकर सुबह शाम आँख में लगाने से रतौंधी दूर हो जाती है।

कुष्ट के सफेद दाग

इमली के बीज और काला जीरा पानी में पीसकर लेप लगाने से सफेद दाग नष्ट हो जाते हैं।

शरीर को मोटा ताजा बनाना

पिसा हुआ सफेद जीरा ३ ग्राम, १०० ग्राम खौलते हुए पानी में डालकर ढक दें। इसमें ५ मिनट बाद दूध व चीनी इच्छानुसार मिलाकर प्रतिदिन सुबह व शाम को पीते रहने से शरीर मोटा हो जाता है।

पुरूषार्थ शक्ति बढ़ाना

इमली के बीजों को रात में भिगोकर प्रातः काल इन्हें छील व पीसकर सम मात्रा में गुड़ मिलाकर ६–६ ग्राम की गोलियाँ बनाकर सुरक्षित

(शेष पृ. ४० पर)

नबी–ए–करीम (सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम) का ख़ुत्बा मैदाने अ़रफ़ात में

अल्लाह की हम्द व सना के बाद: लोगो! मेरी बात ग़ौर से सुना, मेरा ख़याल है कि शायद इस साल के बाद इस जगह पर तुम से न मिल सकूँ और न शायद इस साल के बाद आएन्दा हज कर सकूँ।

लोगो : अल्लाह तआ़ला फ़रमाते हैं, ऐ लोगो : हमने तुमको एक मर्द और एक औ़रत से पैदा किया है और तुम्हारे बहुत से ख़ानदान और क़बीले बना दिये हैं ताकि तुम पहचाने जा सको, अर्थात आपस में एक दूसरे को शिनाख़्त (पहचान) कर सको, और ख़ुदा के नज़दीक तुम में ज़ियादह इज्ज़त वाला वह है जो ज़ियादह परहेज़गार (संयमशील) है, अ़रबी को अ़जमी पर, और अ़जमी को अ़रबी पर कोई बरतरी (ऊँचाई) नहीं है और न किसी काले को गोरे पर और गोरे को काले पर कोई फ़ज़ीलत (प्रधानता) नहीं, फ़ज़ीलत और बरतरी (प्रधानता और उत्तमता) सिर्फ़ परहेज़गारी (संयमशीलता) की बुनियाद पर है।

सब लोग आदम अ़लैहिस्सलाम की औलाद हैं और आदम अ़लैहिस्सलाम मिट्टी से पैदा किये गये हैं।

ख़बरदार! ख़ून या माल का हर वह दावा जिसके लोग मुद्दई हैं वह मेरे क़दमों तले है (मैं उसे बातिल (असत्य) क़रार देता हूँ) मगर ब़ैतुल्लाह(काबा शरीफ़) की निगरानी और हाजियों को पानी पिलाने की ख़िदमत हस्बे दस्तूर (नियामानुसार) रहेगी।

इसके बाद आप स० अ० ने फ़रमाया: ऐ गरोहे क़ुरैश क़ियामत के रोज़ ऐसा न हो कि तुम दुन्या का बोझ अपनी गरदनों पर उठाए हुवे आओ और लोग आख़िरत का सामान लेकर आएं 'याद रखो' अगर ऐसा हुवा तो मैं तुम्हें अ़ल्ला के अ़ज़ाब से न बचा सकूँगा। ख़बरदार! ज़मान–ए–जाहिलियत (इस्लाम से पहले) की तमाम रस्में मेरे क़दमो के नीचे रौंद दी गई हैं, ज़मान–ए–जाहिलियत के तमाम खून (खुवाह वह किसी के भी हों) सब मुआ़फ़ हैं (अब तरफ़ैन में से कोई उसका बदला नहीं लेगा)

मैं इस सिलसिले में सबसे पहले अपने ही ख़ानदान का एक ख़ून, जो कि रबीआ़ बिन हारिस के बेटे का है, मआ़फ करता हूँ, वाकिआ़ यह था कि आ़मिर बिन रबीआ़ ने बनी सअ़द से किसी दूध पिलाने वाली को तलब किया था जिसे हुज़ैल ने क़त्ल कर डाला था, दौर–ए–जाहिलियत (इस्लाम से पहले का ज़माना) का हर सूद मुआ़फ़ है (इस क़ानून की शुरूआत भी मैं अपनी तरफ़ से करता हूँ) और अपने बुज़ुर्ग चचा अ़ब्बास बिन मुत्तलिब का सूद मुआ़फ़ करता हूँ, उनका सूद सब का सब मुआ़फ और ख़त्म है।

लोगो ! तुम्हारे ख़ून (जानें) तुम्हारे माल और तुम्हारी इ़ज़्ज़त और आबरू क़ियामत तक एक दूसरे पर हराम हैं, जिस तरह तुम्हारे इस दिन इस महीने और इस शहर की हुरमत (इ़ज़्ज़त) ज़रूरी है, और तुम सब अ़न क़रीब अपने परवरदिगार (पालनहार) से जा मिलोगे जहाँ तुम से तुम्हारे आमाल(कर्मों) का हिसाब होगा।

ऐ लोगो : तुम्हारी औ़रतों पर तुम्हारे कुछ हुकूक़ (अधिकार) हैं और इसी तरह तुम पर तुम्हारी औ़रतों के हुकूक़ (अधिकार) हैं, तुम्हारा उन पर यह हक़ है कि वह किसी ऐसे आदमी को तुम्हारे बिसतर पर न बैठने दें जिसे तुम पसंद न करते हो, यह भी उन पर तुम्हारा हक़ है कि वह खुली बेहयाई (अश्लीलता) का कोई काम न करें लेकिन अगर वह करें तो तुम्हारे रब ने तुम्हें यह इजाज़त दी है कि उनके सोने की जगह अपने से अलग कर दो, (अगर इससे भी बाज़ न आएं तो फिर तुम्हें इजाज़त है कि उन्हे ऐसी हलकी मार मारो जिससे बदन पर निशान न पड़े और अगर वह अपनी नाज़ेबा (अनुचित) हरकतों से बाज़ आ जाएं (रूक जांए) तो हस्बे दस्तूर (नियमानुसार) उनका खाना और कपड़ा तुम्हारे ज़िम्मे है।

ख़बरदार किसी औ़रत के लिये यह जायज़ नहीं कि वह अपने शौहर के माल मे से उसकी इजाज़त के बग़ैर किसी को कुछ दे, औ़रतों के साथ अच्छा बरताव (सदुव्योहार) करने के हमेशा पाबन्द रहो क्योंकि वह तुम्हारी देख भाल में हैं और इस पोज़ीशन में नहीं कि अपने मुआ़मिलात ख़ुद चला सकें औ़रतों के मुआ़मले में अल्लाह से डरते रहो तुमने उनको अल्लाह की अमानत के तौर पर हासिल किया है और अल्लाह के कलिमात के ज़रये उनको अपने लिये जायज़ और हलाल किया है।

लोगो ! अल्लाह तबारक व तआ़ला ने (मीरास का क़ानून नाफ़िज़ करके) हर हक़दार को उसका हक़ दे दिया है इसलिये अब किसी वारिस के

हक़ में कोई वसीयत जायज़ व नाफ़िज़ नहीं बच्चे का नसब (कुल) उसी मर्द से साबित होगा जिसकी वह बीवी है जिसने बदकारी (हरामकारी) की उसके लिये सज़ा है (बच्चा उसका नहीं कहलाएगा) और उनका हिसाब किताब अल्लाह के ज़िम्मे है।

जिसने अपने बाप के अलावा किसी और की तरफ़ अपनी निस्बत की या किसी ग़ुलाम ने अपने को किसी दूसरे मालिक की तरफ़ मन्सूब किया, उस पर ख़ुदा की लआनत है।

क़र्ज़ अदा किया जाएगा, आरियत (मांगी हुई चीज़) वापस की जाएगी, ज़ामिन (ज़मानत लेने वाला) तावान (जुरमाना) का ज़िम्मेदार है।

ख़बरदारः जुर्म करने वाला ख़ुद अपने जुर्म का ज़िम्मेदार है बाप के जुर्म का ज़िम्मेदार बेटा नहीं और बेटे के जुर्म का ज़िम्मेदार बाप नहीं।

किसी शख़्श के लिये किसी भाई की कोई चीज़ लेना जायज़ नहीं, अल्बत्ता इस सूरत में जायज़ है कि वह ख़ुश दिली के साथ दे, पर तुम लोग अपने ऊपर ज़ुल्म और ज़ियादती न करो।

लोगो ! (खूब अच्छी तरह समझ लो कि) हर मुसलमान दूसरे मुसलमान का भाई है, और सब मुसलमान आपस में एक दूसरे के भाई भाई हैं

तुम्हारे ग़ुलाम, तुम्हारे ग़ुलाम हैं, तुम ख़ुद जो कुछ खाते हो उनको भी खिलाओ, और जो ख़ुद पहनो वही उन्हें भी पहनाओ।

ख़बरदार ! मेरे बाद गुमराह (या काफ़िर) न हो जाना कि एक दूसरे की गरदनें मारने लगो जिस शख़्स के पास किसी की अमानत हो, उस पर ज़रूरी है कि वह अमानत वाले को ठीक ठीक तरीक़े से लौटा दे।

अगर कोई नक्टा और काले रंग का हबशी गुलाम भी तुम्हारा अमीर बना दिया जाए और वह किताबुल्लाह (कुरआन मजीद) के मुताबिक़ तुम्हारी रहनुमाई करे तो तुम पर उसकी इताअ़त ज़रूरी है।

ऐ लोगो! मेरे बाद कोई नबी नहीं है और तुम्हारे बाद अब कोई नई उम्मत नहीं है।

मै तुम में एक नेमत छोड़े जा रहा हूँ अगर तुम मज़बूती से उसे थामे रहोगे तो कभी गुमराह न होगे और वह नेमत अल्लाह की किताब क़ुरआन मजीद और मेरी सुन्नत है।

लोगो ! मज़हब में ग़ुलू (संलग्नता) और मुबालगा (किसी चीज़ को हद से बढ़ाना) से बचो, क्योंकि तुमसे पहले बहुत सी कौमें मज़हब में ग़ुलू के सबब बरबाद हो गईं।

ऐ लोगो ! अब शैतान इस बात से मायूस हो चुका है कि इस सर ज़मीन पर उसकी इबादत की जाएगी, लेकिन इबादात के अलावा दूसरे मुआमलात मे अपने पस्त अफ़आल (घटया कामों) के ज़रये उसकी फ़रमां बरदारी की गई तो वह उस पर भी राज़ी रहेगा तुम अपने दीन को उसके शर (बुराई) से बचाकर रखना,

ख़बरदार ! अपने रब की इबादत करते रहो पाँच वक़्तों की नमाज़ की पाबन्दी करो, रमज़ान के महीने मे रोज़े रखो अपने मालों की ख़ुशदिली के साथ ज़कात अदा कर अपने रब के घर(बैतुल्लाह) का तवाफ़ करो, अपने अमीर का हुक्म मानो इस तरह अपने रब की जन्नत में दाख़िल हो जाओगे।

ऐ लोगो ! नसी कुफ़्र की ज़ियादती का सबब हैं, इसके ज़रये कुफ़्फ़ार गुमराह होते हैं वह एक साल हराम महीनों को हलाल कर लेते और दूसरे साल उन्हीं को हराम क़रार दे लेते थे ताकि इस तरह हराम महीनों की गिनती पूरी करें, लेकिन अब ज़माना इब्तिदाई हालत पर लौट आया है जिस दिन अल्लाह तआ़ला ने ज़मीन और आसमान को पैदा फ़रमाया, अल्लाह के नज़दीक साल के बारह महीने होते हैं, जिनमे चार महीने हुरमत (इज़्ज़त) वाले होते हैं तीन महीने मुसलसल (लगातार) हैं, (ज़ीक़अदह, ज़िलहिज्जह, मुर्हरम) और एक महीना "रजब" है जो "जुमादस् सानियह" और "शआबान" के दरमयान वाक़े है।

ख़बरदार! जो लोग यहाँ मौजूद हैं वह मेरी बात उन लोगों तक पहुँचा दें जो यहाँ मौजूद नहीं है क्योंकि बहुत से लोग जिनको मेरा पैग़ाम पहुँचेगा वह उन लोगों से ज़ियादह उसे महफ़ूज़ रखने वाले होंगे जो इस वक़्त सुनने वाले हैं।– तुम लोगों से मेरे मुतअ़ल्लिक़ भी पुछा जाएगा, बताओ! तुम मेरे बारे में क्या कहोगे।

हाज़िरीन ने (एक ज़बान होकर) अर्ज़ किया : हम गवाही देते है कि आप स०अ० ने अमानत को पूरी तरह अदा कर दिया, अल्लाह का पैग़ाम (हम तक या लोगों तक) पहुँचा दिया और नसीहत कर दी,

फिर रसूलुल्लाह ने फ़रमाया

ऐ अल्लाह तू गवाह रहना
ऐ अल्लाह तू गवाह रहना
ऐ अल्लाह तू गवाह रहना

आप स० अ० अपनी उँगली आसमान की तरफ़ उठाते और फिर लोगों की तरफ़ झूका कर फ़रमाते,

ऐ अल्लाह तू गवाह रहना
ऐ अल्लाह तू गवाह रहना

(रूपान्तर गुफ़रान नदवी)

हम ग़रीबों का भी सुलताने ग़रीबां को सलाम

ज़ाइरे हरम हमीद सिद्दीकी

ज़ायरो पेश करो जब शाहे ज़ीशां को सलाम
हम ग़रीबों का भी सुल्ताने ग़रीबां को सलाम
अ़र्ज़ करना बकमाले अदब व शौक़ो नियाज़
क़िबलए अहले वफ़ा काबए ईमां को सलाम
याद रखना हरमे पाक को जाने वालो
मुझ गुनहगार का उस रहमते यज़दां को सलाम
भूल जाना न कहीं वक्ते तिलावत लिल्लाह
महबते रूहे अमीं हामिले क़ुरआं को सलाम
ख़्वाब गाहे शहे कौनैन पे हर लहज़ा दुरूद
सहरो शाम मेरे हासिले ईमां को सलाम
गोशे गोशे पे शबिस्ताने रिसालत के दुरूद
रोज़ओ मिम्बरो मेहराबे दरख़शां को सलाम
क़ुब्बए नूर पे होते हैं जो क़ुर्बा हमा शब
उन सितारों को सलाम, उस महे ताबां को सलाम
फ़र्शे पा होती है जो सहने हरम में हरसू
उस शबे माह और अस सुब्हे दरखशां को सलाम
जिस से होती है मेरी हिज्र की रातें रोशन
हरमे क़ुदस की उस शमए शबिस्तां को सलाम
गुम्बदे सब्ज़ का हर रोज़ जो करती हैं तवाफ़
उन शुआ़ओं को और उस महरे दरखशां को सलाम
जिससे रोशन हुए दिल हमसे सियाहकारों के
उस दरे पाक की क़िन्दीले फ़रोजां को सलाम
रौज़ए ख़ुल्द में जो महवे इबादत हों गे
उनके हुस्ने नज़र व चेहरए ताबां को सलाम
दरे अक़दस पे जो मसरूफ़े गुहर बारी हो
निगाहे शौक़ का उस दीदए गिरयां को सलाम
गुम जो हो जलवह के रंग के नज़ारे में
दिले मुश्ताक़ का उस दीदए हैरां को सलाम
ब सद इख़लास व बअन्दाज़े ग़ुलामी कहना
हरमे पाक के हर ख़ादिम व दरबां को सलाम
दिल को दिल चश्मे तवज्जोह से बनाया जिस ने
मेरे उस राहबरे मन्ज़िले इरफां को सलाम
जो फिरा करते हैं मस्तों की तरह गलियों में
उन सगाने बलदे शाहे रसूलां को सलाम
जिनको हासिल है शरफ आपकी पाबूसी का
उस गली कूचे के ज़र्राते दरख़शं को सलाम
निगाहे सरवरे कौनैन पड़ी है जिन पर
जादओ मन्ज़िलो कोहसारो बयाबां को सलाम
एक नज़र कोहे उहद पर मेरी ख़ातिर पहले
फिर उसी वादीए फ़िरदौसे बदामां को सलाम
महवे आराम हैं जिस ख़ाक पे असहाबे उहद
एक महजूर का उस गंजे शहीदां को सलाम
जिस में है ख़ुल्द दर आग़ोश क़ुबा की मस्जिद
उस ख़यावां को सलाम, उस चमनिस्तां को सलाम
रंगो निकहत पे शमीमे चमने ख़ुल्द निसार
गुन्चओ लालओ गुल, सुन्बुलो रैहां को सलाम
जिस पे हर लहज़ा महकती है नसीमे रहमत
उस गुलिस्तां को सलाम, अहले गुलिस्तां को सलाम
साज़े दिल गूंज उठा, कैफ़े नवासन्जी से
चमने तैबा के मुर्गाने खुश इल्हां को सलाम
जिनके सदके में खलिश होती है अब तक दिल में
संगरेज़ों को और उन ख़ारे मुगीलां को सलाम
कैफ़ो मस्ती में फ़रामोश न हो जाए कहीं
काफ़ले वालों को और उनके हुदीख़्वां को सलाम

हुज्जाजेकिराम की खिदमत में

हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम के रौज़े पर हाज़िरी हो तो हम अहले नदवा का सलाम अ़र्ज़ करें और वहां हर नमाज़ हुज़ूर सल्लल्लाहु अ़लैहि वसल्लम की मस्जिद के इमाम के पीछे जमाअ़त से पढ़ें। मदीना तैय्यिबा में जमाअ़त छोड़ना बड़ी महरूमी की बात है। ●●●

Mohd. Aslam
(S) 268845, 213736
(R) 268177, 254796

Haji Safiullah & Sons
Jwellers

Nagina Market Akbari Gate,
Lucknow
Opp. Gadbad Jhala,
Aminabad Road, Lucknow.

(Shop) : 266408
(Resi.) : 260884

Iqbal & Co.

Deals :
FRIEND EMBROIDERY MACHINE

Deals in :
Embroidery Raw Materials Machine & Spare parts etc.

Pul Firangi Mahal, Behind Pata Nala Police Chowki,
Chowk, Lucknow- 2260063

अन्तर्राष्ट्रीय समाचार

हबीबुल्लाह आज़मी

● अमेरिका में माता पिता की सेवा एवं परवरिश की कल्पना नहीं

मौलाना हियातुल्लाह क़ासमी जो अमेरीकी दावत पर अमेरीका के दौरे पर गये थे अपने अनुभव बयान करते हुए फ़रमाते हैं कि अमेरिका में मां बाप की सेवा और परवरिश की कोई कल्पना नहीं है। आचरण की गिरावट और बेहयाई का यह आलम है कि अगर अट्ठारह साल की उम्र के बाद कोई बाप अपनी औलाद को दुर्व्यवहार पर रोके तो वह खुद सज़ा का पात्र होगा।

समाज बिलकुल आज़ाद है वहां औरत की हैसियत एक खिलौने जैसी है।

बहुत सी औलादों को अपने मां बाप का पता ही नहीं।

मौलाना ने कहा कि कोलम्बिया में उन्हें ऐसे लोग मिले जो वहां की मौजूदा परिस्थितियों से विवश हैं और उनका झुकाव इस्लाम की तरफ है क्योंकि दुनिया में सुख शान्ति और आचरण सम्बन्धी समस्याओं का हल रूसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम की तालीम पर अमल करने ही पर सम्भव है।

● पश्चिमी देशों में इस्लाम की मक़बूलियत

जहां इस्लाम ने और क्षेत्रों में कदम जमाए वहीं पश्चिमी देश के वासियों को भी अपनी तरफ़ आकर्षित किया। इस समय पश्चिम में इस्लाम बहुत तेजी से फैल रहा है मुख्यकर पश्चिमी महिलाएँ बड़ी संख्या में इस्लाम मज़हब में दाखिल हो रही हैं। इस्लाम के ख़िलाफ़ प्रोयगण्डे के बावजूद इस्लाम के अध्यन की तरफ़ लोगों का रूजहान बढ़ा है।

कैलीफोरनिया के प्रसिद्ध समाचार पत्र 'लास एंजिल्स टाईम्स' की रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका और कनेडा में इस्लाम धर्म दूसरे धर्मों के मुकाबले में सबसे अधिक तेजी से फैल रहा है। समाचार पत्र ने अपने एक सर्वेक्षण (जाएज़े) के अनुसार लिखा है कि केवल अमेरिका में मुसलमानों की संख्या पांच मिलयन (पचास लाख) से अधिक है। परन्तु यह संख्या नियमित रूप से मस्जिदों में नमाज पढ़ने वालों की गणना के अनुसार लिखी गई है इसमें वह मुसलमान शामिल नहीं हैं जो मस्जिद दूर होने के कारण घरों में नमाज़ पढ़ते हैं।

समाचार पत्र ने लिखा हे कि अमेरीका में हर वर्ष कम से कम एक लाख पचीस हजार मुसलमानों की बढ़ोत्तरी होती है।

लंदन के प्रसिद्ध समाचार पत्र "टाईम्स" ने ब्रिटेन में इस्लाम फैलने की इस तेज़ रफ़्तगरी के कारणों पर बहस करते हुए लिखा है कि सलमान रूशदी के मामिले ने लोगों के दिलों में इस्लाम के बारे में अध्यन करने की रूचि को बढ़ाया है। इसके अतिरिक्त ब्रिटिश मीडिया इस्लाम और मुसलमानों के ख़िलाफ़ जो बेतकान प्रोपगण्डा करता रहता है और हर इस्लामी चीज़ को बुरा कहने की जो नीति अपना रखी है उसका भी बहुत से लोगों पर उलटा प्रभाव पड़ रहा है। समाचार पत्र ने अन्त में जो बात लिखी है वह बहुत ही महत्वपूर्ण है। समाचार पत्र लिखता है कि "पश्चिम के लोग खुद अपनी सोसाइटी से निराश हो चुके हैं जिस में बढ़ते अपराध, पारिवारिक प्रथा का विघटन, नशीली पदार्थों तथा शराब नोशी का दारदौरा है। फलस्वरूप वह इस्लाम के दिये हुए अनुशासन, संयम तथा जीवन शैली की तारीफ करते हैं।

३६ वर्षीय महिला जिसने ईसाइयत छोड़ कर इस्लाम कुबूल किया जिसका इस्लामी नाम जमीला है, उसने ईसाइयत के सभी समुदायों पर रिसर्च किया और फिर उसने यहूदियत, बुद्ध धर्म, हरी कृष्ण और इस्लाम का अध्यन किया, अन्ततः उसने इस्लाम को चुना। उनका कहना है कि "इस्लाम की यह अदा पसन्द आई कि हर मुसलमान सीधे अपने खुदा से रिश्ता क़ाईम कर सकता है"

(पृष्ठ ३५ का शेष)

रख लें। सुबह व शाम नित्य १–१ गोली सेवन करने से वीर्य की कमजोरी मिटकर पुरूषार्थ शक्ति बढ़ जाती है।

सूखा रोग

अमचूर को भिगोकर इसमें शहद मिलाकर शिशुओं को नित्य प्रति दिन दो बार चटाने से सूखा रोग नष्ट हो जाता है।